तंत्र द्वारा मनोकामना सिद्धि

मृत्युनाथ मिश्र

तन्त्र द्वारा मनोकामना सिद्धि

जिस प्रकार राडार द्वारा एक स्थान पर बैठे-बैठे ही निर्धारित दूरस्थ स्थान पर अस्त्र चलाया जाता है और वह वहाँ जाकर लक्ष्य वस्तु को क्षति पहुँचाता है, उसी प्रकार कृत्या, घात, मारण आदि के तान्त्रिक प्रयोग द्वारा मनुष्य को प्रभावित किया जाता है। तन्त्र द्वारा आगे से व पीछे से दोनों प्रकार का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे गुड़ खाने में पौष्टिक है लेकिन शराब बनाने में भी प्रयोग किया जाता है। ऐसे ही तान्त्रिक भी सतोगुणी, धर्मपूर्ण एवं कल्याण का कार्य करते हैं तथा दुःसाहसपूर्ण अनैतिक और चमत्कारी काम भी करते हैं।

तन्त्र शास्त्र एक प्रकार से मन्त्रों की शल्य चिकित्सा पद्धति है जिसके माध्यम से मनोकामना सिद्धि करने में देर नहीं लगती। समाज की भलाई हेतु इसका प्रयोग करना सबको लाभ दे सकता है, लेकिन दुरुपयोग का परिणाम करने वाले ही भोगना पड़ता है।

मनोकामनाओं की पूर्ति के लिये, बिना पूरी तैयारी किए, साधक का तन्त्र विज्ञान में प्रयोग करना साहस भी हो सकता है, दुस्साहस भी। मन्त्रों का प्रयोग एक ऐसी प्रक्रिया है जो पूरी हो जाने पर एक वरदान है तो अपूर्ण रह जाने पर एक अभिशाप भी।

सिद्धि प्राप्त हो ज़ाये तो साधक की मनोकामना पूर्ण और साधना में विघ्न आ जाये तो प्राणों का संकट भी।

अतः इस क्षेत्र में आने से पूर्व विषय का भरपूर ज्ञान और गुरु धारण करना अनिवार्य है, जिसके सान्निध्य में आप सिद्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

—लेखक

रणधीर प्रकाशन की उत्कृष्ट प्रस्तुति

तन्त्र द्वारा
मनोकामना सिद्धि
याक्षिणी साधना सहित

लेखक :
पं. भृगुनाथ मिश्र

मूल्य : ३५.००

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे)
हरिद्वार (उ. प्र.)
फोन : (०१३३) ४२६२९७-४२६१९५

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : ४२८५१०

लेखक : **पं. भृगुनाथ मिश्र**

संस्करण : **चतुर्थ, सन् २०००**

शब्द सज्जा : **जे के प्रिन्टोग्राफर्स, दिल्ली**
फोन : ३९३३९९५, ३९५९०२३

मुद्रक : **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स**
विकास मार्ग, नई दिल्ली-११००९२

ISBN : 81-86955-92-5

TANTRA DWARA MANOKAMNA SIDHI

Written by : Pt. Bhrigunath Mishra
Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (India)

अनुक्रम

दो शब्द

तन्त्र मन्त्र की जानकारी सर्वसाधारण को आसानी से प्राप्त हो, इस हेतु मैंने अनेक तन्त्र शास्त्रों का अध्ययन किया पर यह ऐसा समुद्र है जिसकी गहराई की थाह पाना सर्वसाधारण के लिये असम्भव है। मैं भी उसी सर्वसाधारण का एक कण हूँ जो कुछ पाने को सीखने का प्रयास किया है ताकि जो प्रसाद मुझे मिले उसका रसास्वादन पाठकों को करा सकूँ। गुरु की कृपा से ऐसा कुछ सम्भव हो सका है। मैं श्री सूर्यवंश मिश्र, वेदान्ती व तान्त्रिक तथा श्री अघोरी भगवती चरण का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने पुस्तक को लिखने में अपने ज्ञानार्जन, अनुभव एवं आर्थिक रूप से सहयोग दिया है। मेरी लेखन गति को बढ़ाने में, उत्साहित करने में भी प्रमोद कुमार मिश्रा, पत्नी सुश्री राजमुनी देवी एवं सुपुत्र श्री विनोद कुमार मिश्र का बड़ा सहयोग रहा है।

मैं यथार्थ मूल रूप में कुछ नहीं लिख सका हूँ, लिख भी नहीं सकता क्योंकि वह सब कुछ हमारे विद्वानों ने प्रकाशित किया है, बताया है, समझाया है। हम मात्र नयापन के नाम पर इसे संवार एवं सजा सकते हैं। कर्म करने पर फल अवश्य मिलेगा। तन्त्र मन्त्र की सिद्धि भी ऐसी ही है। असफलता मिलने पर निराश नहीं होना चाहिये वरन् अपनी त्रुटियों को पहचानकर सुधार करके पुनः ठीक ढंग से साधना करनी चाहिये। मुझे पूर्ण विश्वास है कि निराश साधकों एवं व्यक्तियों को इस पुस्तक से एक नयी प्रेरणा मिलेगी।

पं. भृगुनाथ मिश्र

ज्योतिषी व तान्त्रिक

नोट : पुस्तक के इस परिवर्द्धित और कम्प्यूटरीकृत संस्करण में बाल योगिनी कनकवती शोभना से प्राप्त यक्षिणी साधना के अति प्राचीन मन्त्रों का समावेश भी किया है।

तन्त्र क्या है?

साधना एवं मानव की इच्छापूर्ति के धार्मिक मार्ग तीन प्रकार के हैं। तन्त्र, मन्त्र और यन्त्र साधना एवं इच्छापूर्ति का प्रत्यक्ष मार्ग तन्त्र है। है तो यह बहुत कठिन। किन्तु साधक के लिये यह एक व्यावहारिक मार्ग है। ज्ञान, भक्ति, योग और कर्म इसमें सम्मिलित हैं। इसके द्वारा साधक भोग और योग दोनों प्राप्त कर सकता है। बिना गुरु के सान्निध्य के यह ज्ञान नहीं प्राप्त होता है गुरु से आज्ञा लेकर ही इस पद्धति में जाना चाहिये अन्यथा कहीं गलती होने पर इसका परिणाम भी गलत होता है। अतः इसका पूर्ण ज्ञान होना जरूरी है अतः पाठकों से मेरा अनुरोध है कि गुरु की आज्ञा से पूर्ण जानकारी प्राप्त करके ही तन्त्र सिद्धि में हाथ लगावें या मन्त्रों का प्रयोग करें। परोपकारी, ईमानदार तथा सभ्य, सदाचारी व्यक्ति ही मन्त्रों का उपयोग करने के अधिकारी हैं। नास्तिक व्यक्ति को यह तन्त्र नहीं बताना चाहिये। मन्त्र अपने आप में एक दुधारू तलवार है। इसका प्रयोग सही ढंग से करने पर लाभकारी होगा तथा गलत प्रयोग करने पर विनाशकारी होगा। साधना की थी भगवान बुद्ध ने। साधना की थी लंकेश रावण ने। साधना की थी भगवान श्री रामचन्द्र ने। साधना की थी स्वामी विवेकानन्द ने। साधना की थी श्री रामकृष्ण परमहंस ने। साधना की थी श्री देवरहा बाबा ने। साधना की थी त्रिदंडी स्वामी

ने। साधना की थी कबीर ने। तन्त्र उद्देश्य तक पहुँचने का एक मार्ग है। यह शीघ्र गन्तव्य स्थान तक पहुँचाता है। जिन्हें तन्त्र में रुचि है, इस गहराई में पहुँचना चाहते हैं तथा परोपकार के रूप में ग्रहण करना चाहते हैं, उन्हें ही इस पुस्तक का अध्ययन करना चाहिये। बिना श्रद्धा विश्वास के इस शास्त्र में अपना दिमाग लगाना अनुचित होगा। कुलार्णव तन्त्र में कहा गया है कि सतयुग में श्रुति के नियमानुसार धर्म करना लाभदायक एवं कल्याणकारक होता है। त्रेतायुग में स्मृति के नियमानुसार धर्म करना लाभदायक एवं कल्याणपरक होता है। द्वापर में पुराण के अनुसार धर्म करना लाभदायक तथा कल्याणकारी होता है। कलियुग में तन्त्र शास्त्र के अनुसार धर्म करना लाभदायक एवं कल्याणकारी होगा। यथा—
"कृते श्रुत्युक्ताचार स्त्रेतायां स्मृति संभवः। द्वापरे तु पुराणोक्तं कलौवागम केवलम्॥"

साधना में मन्त्र की सिद्ध देवियों का तथा मन्त्रों का प्रयोग बिना गुरु की आज्ञा के नहीं करना चाहिये। तन्त्र विज्ञान में गुरु शब्द का बहुत महत्त्व है। कहा गया है—**"गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः पिता गुरुर्माता गुरुर्देवो गुरुर्गति। शिवे रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥"**

तन्त्र साधना मूलतः तीन विचारों पर आधारित है—१. गुरु, २. तन्त्र, ३. देवता। तन्त्र में तीनों समाविष्ट हैं। इन तीनों का साकार रूप गुरु है। ऋग्वेद में कहा गया है—

अक्षेत्रवित् क्षेत्रविद् मह्य प्राट।
सम्प्रति क्षेत्र विद्वानुं शिष्टः॥

एवद् वै भद्रमनुशासन्न स्योत।
श्रुतिम् विन्यत्यन्न सीनाम्॥

योगिनी तन्त्र भी कहता है—

मन्त्रप्रदान काले ही मानुषे नगवन्दिनी
अधिष्ठानं भवेत् तन्त्र महाकालस्य शंकरी
अतोना गुरुतो देवी मानुषे नात्रः संशयः।

यही कारण है कि संस्कार में गुरुमुख करना भी एक पद्धति है। गुरु साधक की रक्षा करता है। मन्त्र जप द्वारा सिद्धि प्राप्त करने का विधान है। मन्त्र के उच्चारण से मुख से एक प्रकार की ध्वनि निकलती है जब वह ध्वनि-समूह एक लय में बंध जाता है तो आकाश में स्थाई रूप से फैल जाता है। जिससे सम्बन्धित मन्त्र लय रहता है उससे टकराता है और पुनः मन्त्र ध्वनि जहाँ से आई है उससे उसका सम्बन्ध बनता है। तब कहीं कहीं मन्त्र फलप्रद हो जाता है। यह एक वैज्ञानिक तथा यथार्थ स्वरूप है। मन्त्र शास्त्र में यह मन्त्रों की शल्य चिकित्सा पद्धति है जिसके माध्यम से कामना सिद्धि में देर नहीं लगती। दूरदर्शन, आकाशवाणी, विद्युत प्रवाह के प्रायौगिक नियम के अनुसार मन्त्र सिद्धि भी सत्य है। इसके द्वारा मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तम्भन, इष्ट देव-देवी सिद्धि, आकर्षण, विद्वेषण की क्रिया की जाती है। कानूनी एवं नैतिक दृष्टि से मारण प्रयोग कभी नहीं करना चाहिये। इसका दुष्परिणाम करने वालों को भोगना पड़ता है। अतः समाज की भलाई हेतु प्रयोग कोई भी किया जा सकता है। 'शारदा तिलक' में गुरु की

महिमा निम्न शब्दों में की गई है।

दिव्य ज्ञानं यतो दद्यात् कुर्यात् पापस्य संज्ञयः।
तस्मात् दीक्षेति संप्रोक्ता देशि कैस्तंत्र वेदिभिः॥

शिष्य भी शुद्ध आत्मा से जागरूक, नैतिकता से युक्त आज्ञाकारी एवं अनुशासित रहे तो गुरु का आशीर्वाद उसे मिल सकता है। जिससे मन्त्र सिद्धि एवं तन्त्र सिद्धि में आसानी होती है। गुरु शिष्य की गलतियों को अपने ऊपर लेकर हटा देता है। मन्त्र साधना अति गोपनीय हैं इसे अन्यत्र प्रकाशित नहीं करना चाहिये।

तन्त्र साधना परोपकार के लिये तथा यश के लिये किया जाता है। दूसरों का कल्याण होने पर उसे बिना माँगे सब कुछ मिल जाता है। दूसरों से अपनी रक्षा भी की जा सकती है परन्तु इसका दुरुपयोग कभी नहीं करना चाहिये। पाठकों से मेरा अनुरोध है कि पुस्तक मात्र एक ज्ञान का खजाना है। इसी के अनुसार तन्त्र की क्रिया करना उचित नहीं होगा। यद्यपि पुस्तक में दिये गये सभी मन्त्र एवं साधन बहुसंख्यक प्रमाणित हैं। फिर भी बिना गुरु की आज्ञा इसका प्रयोग वर्जित है। आप गुरु नहीं मिलने पर पुस्तक को ही गुरु मान सकते हैं। इष्ट देव को ही गुरु मान सकते हैं। एकलव्य द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनाकर गुरु मानकर धनुर्विद्या में प्रवीण हो गया। अतः श्रद्धा, विश्वास एवं प्रेम तन्त्र का अमोघ बाण है। अगर पुस्तक के आधार पर कोई गलत प्रयोग करेगा तो लेखक उसका उत्तरदायित्व नहीं लेगा। अतः बिना सोचे

समझे कोई कदम न उठायें। गुरु के सान्निध्य के कारण मन्त्र सिद्धि में आई दिक्कतों को आसानी से हटाया जा सकता है। तन्त्र साधकों को चाहिये कि अधिक-से-अधिक सुगम रूप से अपनी मनोकामना सिद्धि कर सकते हैं। अगर प्रयोग व साधना ठीक से किया गया तो प्रभाव अवश्य उत्तम प्राप्त होगा। कार्य कारण सिद्धान्त तन्त्र में भी लागू है।

आज बाजार में मात्र आर्थिक लाभ के लिये प्रकाशकों ने अनेकों पुस्तकें छपवा डाली हैं जो केवल प्रकाशकों व पुस्तक विक्रेताओं को तो लाभ दे रही हैं परन्तु पाठक या साधक उससे कुछ भी नहीं पाता। लेकिन इस पुस्तक को शुद्ध रूप से छपवाकर बहुत ही कम मूल्य पर रणधीर प्रकाशन हरिद्वार ने प्रस्तुत करने का संकल्प किया है पुस्तक का लगातार कई वर्षों से बिकना और माँग का बढ़ते जाना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है और अब इसकी लोकप्रियता और बढ़ेगी क्योंकि बाल योगिनी जी ने यक्षिणी साधना के लिए अति प्राचीन मन्त्र इस पुस्तक के लिये देकर बड़ा उपकार किया है।

आशा है यह पुस्तक आपकी उचित आकांक्षाओं को यथार्थ रूप में पूरा करेगी। यदि आपको इससे लाभ मिलता है तो आप मित्रों एवं परिजनों को भी यह पुस्तक खरीदकर भेंट करें इससे आपको और अधिक सन्तुष्टि मिलेगी।

—लेखक

तन्त्र क्या करता है?

तन्त्र में दो प्रकार के मार्ग हैं—दक्षिण मार्ग एवं वाम मार्ग। दोनों प्रकार की तान्त्रिक सिद्धियाँ की जाती हैं। शीघ्र सिद्धि वाम मार्ग के रास्ते से मिलती है। यह मार्ग पूर्णतः श्मसानीक तथा पैशाचिक मार्ग है। औघड़ इत्यादि इसी मार्ग के साधक होते हैं। वस्तुतः वाम मार्ग अच्छा बुरा में भेद नहीं करता बल्कि सबको एक प्रकार का महत्त्व देता है। ईश्वर प्राप्ति, आत्म साक्षात्कार, जीवन मुक्ति, अन्तःकरण का परिमार्जन तन्त्र की पहुँच के बाहर है। वाम मार्ग या दक्षिण मार्ग से भौतिक प्रयोजन की पूर्ति हो सकती है।

बन्दूक, राईफल, तलवार, रिवाल्वर, चाकू इत्यादि घातक अस्त्रों एवं हथियारों से किसी की जान आसानी से ली जा सकती है। इसमें भी निर्बल मनुष्य को मारना और आसान होता है। ठीक इसी प्रकार तन्त्र में अभिचार कर्म द्वारा किसी दूसरें का प्राण आसानी से लिया जा सकता है। जैसे छोटी चिड़ियों को मारने के लिये गुलेल काफी है उसी प्रकार निर्बल बीमार, बालक, वृद्ध या डरपोक मनुष्य पर मामूली तान्त्रिक शक्ति का प्रयोग कर उनका प्राण लिया जा सकता है।

शरीर में मादक पदार्थों व नशीली चीजों की अधिक मात्रा

होने के कारण मनुष्य की मस्तिष्क क्रिया शक्ति विकृत हो जाती है। वह सोचने समझने में असमर्थ रहता है तथा वह पागल हो जाता है। ठीक उसी प्रकार तान्त्रिक प्रयोगों द्वारा एक सूक्ष्म नशीला प्रभाव किसी के मस्तिष्क में प्रवेश कराकर उसकी बुद्धि नष्ट की जा सकती है। कुछ इस प्रकार की विषपूर्ण दवायें हैं जो अगर भूल से कोई खा ले तो शरीर में कई भयंकर उपद्रव या बीमारियाँ उठ जाती हैं। कै, दस्त, हिचकी, मूर्छा, अनिद्रा, दर्द आदि अनेक रोग अकस्मात् हो जाया करते हैं। तान्त्रिक प्रयोगों के द्वारा भी मनुष्य के शरीर में विषैला पदार्थ प्रवेश कराया जाता है।

जिस प्रकार रेडियोधर्मी किरणों के द्वारा राडार द्वारा, एक स्थान पर बैठे-बैठे ही निर्धारित दूरस्थ स्थान पर अस्त्र चलता है और वहाँ जाकर लक्ष्य वस्तु को क्षति करता है उसी प्रकार कृत्या, घात, मारण आदि तान्त्रिक प्रयोग द्वारा दूरस्थ व्यक्ति पर असर होता है। और वह प्रयोग मनुष्य को आघात करता है।

जिस प्रकार युद्ध काल में बमबारी द्वारा सम्बन्धित स्थान के सुख सुविधा के साधन यथा—मकान, कल कारखाना, खेत, रेल, मोटर, सड़क, पुल आदि नष्ट हो जाते हैं। फलतः क्षण भर में अमीर व्यक्ति भी असहाय एवं दरिद्र हो जाता है। इसी प्रकार तान्त्रिक प्रयोग द्वारा किसी के भी सौभाग्य वैभव और सम्पन्नता पर चोट कर शीघ्र नष्ट किया जा सकता है। सभी स्तब्ध रहते हैं कि एकाएक ऐसा कैसे हो गया।

जासूसी ठग ऐसा छद्म रूप धारण करते हैं कि अपने साध्य व्यक्ति को आकर्षण, प्रलोभन कुचक्र में फँसाकर बुद्धिमान व्यक्ति

को भी बेवकूफ तथा मूर्ख बनाकर अपना काम कर लेते हैं। मेस्मेरिजम एवं हिप्नोटिज्म द्वारा किसी के मस्तिष्क को सम्मोहित कर उसे वश में कर लिया जाता है तथा उससे मनचाहा कार्य कराया जाता है। तन्त्र में अनेकों गुनी ओझा तान्त्रिक हैं जो गुप्त तरीके से बौद्धिक वशीकरण का जाल फेंक कर दूसरों को अपने वश में कर लिया करते हैं। उससे वह गुनी डायन से जो चाहते हैं वही काम कराता है। उसकी अपनी इच्छा मनोवृत्ति काम नहीं करती है।

व्याभिचारी पुरुष किसी सरल सीधी स्त्रियों पर किसी प्रकार का जादू चलाकर उन्हें पथभ्रष्ट कर देता है। यहाँ तक की सम्मानित स्त्रियाँ भी इसकी शिकार हो जाती हैं। उसी प्रकार पथभ्रष्ट व्याभिचारिणी स्त्रियाँ भी ऐसी हैं जो दूसरे पुरुष को अपने वश में करके उन्हें जैसा चाहती है, नचाती हैं। कई वेश्यायें इस प्रकार का प्रयोग कर किसी धनी व्यक्ति को फँसाकर उसका धन ले लेती हैं और ठोकर मारकर भिखारी बना देती हैं।

तन्त्र द्वारा स्त्री पुरुष आपस में एक दूसरे की शक्ति को चूसते हैं। समागम द्वारा भी साथी की प्राणशक्ति को चूस लिया जाता है। तान्त्रिक प्रधानता के मध्यकालीन युग में बड़े आदमी बहु विवाह किया करते थे तथा सैकड़ों रानियाँ रनिवास में रहती थीं। यही प्रक्रिया स्त्रियाँ भी अपनाकर अनेक पुरुषों को अपने प्रेम में फाँस लिया करती हैं। जादूगरनी स्त्रियाँ अच्छे सुन्दर युवकों को मेढ़ा, बकरा, तोता आदि बना लेती थीं। कौड़ी, कामसाक्षा आदि की इसी प्रकार की कथायें हैं। वृद्धा तन्त्र साधिनी युवकों

को चूसती हैं। वाम मार्ग के पंचमकारों में मैथुन का विशेष महत्त्व है। इसके द्वारा अन्नमय कोष और प्राणमय कोष के सम्मिलित मैथुन में स्त्री पुरुष शरीर में आपसी महत्त्वपूर्ण आदान प्रदान होते हैं। मैथुन एक साधारण रतिक्रिया मालूम होता है पर इसका सूक्ष्म महत्त्व अधिक है। इसी कारण भारतीय विद्वानों ने इसके लिये विशेष निर्देश दिये हैं। तन्त्र के द्वारा ही मार्गदर्शित शिवलिंग, योनि की आमतौर से पूजा की जाती है।

तन्त्र द्वारा आगे से एवं पीछे से दोनों प्रकार का प्रयोग किया जा सकता है। सदुपयोग एवं दुरुपयोग दोनों किया जा सकता है। जैसे गुड़ खाने के काम में लाया जाता है साथ ही शराब बनाने के भी काम में प्रयोग किया जाता है। तान्त्रिक भी सतोगुणी, सरल धर्मपूर्ण एवं कल्याण का कार्य करते हैं। वही तान्त्रिक दुःसाहसपूर्ण अनैतिक एवं सांसारिक चमत्कारों को सिद्ध करने वाला भी काम करते हैं। तान्त्रिक 'ह्रीं' शक्ति से ब्रह्मा की शक्ति को प्राप्त करता है तथा 'क्लीं' शक्ति से अपनी शक्ति प्राप्त करता है। अपने या दूसरे के प्राणों को मंथन करके तन्त्र की तड़ित शक्ति प्राप्त करता है।

प्राणान्त के समय में भी प्राणी का प्राण मैथुन की भाँति उत्तेजित, उद्विग्न एवं व्याकुल होता है। वैसी स्थिति में भी तान्त्रिक प्राणशक्ति का बहुत-सा भाग खींचकर अपना शक्ति भण्डार भरते हैं। नीति-अनीति का ध्यान किये बगैर तान्त्रिक पशु-पक्षियों का बलिदान इसी प्रयोजन के लिये किया करते हैं। योगी लोग चमत्कार प्रदर्शन में अपनी शक्ति खर्च करते हुए

किसान की भाँति झिझकते हैं पर तान्त्रिक अपने गौरव व बड़प्पन का सिक्का जमाने के लिये क्षुद्र स्वार्थों के कारण दूसरों को अनुचित हानि-लाभ पहुँचाते हैं। अघोरी, कापालिक, रक्तबीज, बैतालिक, ब्रह्मराक्षस आदि कई सम्प्रदाय तान्त्रिकों के होते हैं। स्त्रियों में डाकिनी, शाकिनी कपालकुण्डला, सूर्यसूत्रा सम्प्रदाय भी होता है।

बन्दूक छोड़ने वाला अगर मजबूत तथा पूर्ण जानकार न हो तो कभी-कभी बन्दूक ऐसा जोर का झटका देती है कि चलाने वाले औंधे मुँह गिर पड़ते हैं तथा उनकी हड्डी तक टूट जाती है। इसी प्रकार तन्त्र द्वारा भी बन्दूक जैसी तेजी के साथ विस्फोट होता है और उसका झटका सहने योग्य ताकत साधक के पास नहीं रहने पर उसे भयंकर खतरों का सामना करना पड़ता है।

द्रुतगति से आती हुई गाड़ी को रोकना और उस पर प्रतिरोध से शक्ति प्रदान करना बड़ा खतरनाक खेल होता है। प्रतिरोध जितना बड़ा कड़ा होगा झटका भी उतना ही जबरदस्त होगा। वाममार्गी तान्त्रिक इसी प्रतिरोध को रोकने वाली तथा सबसे शक्ति प्राप्त करने वाली क्रिया किया करते हैं। तन्त्र में साधक खण्डहरों, श्मशानों में अर्धरात्रि के समय जब उनकी साधना का मध्यकाल आता है उस समय कितने रोमांचकारी भय उपस्थित होते हैं। गगनचुम्बी राक्षस, विशालकाय सर्प, लाल नेत्रों वाले शूकर और महिष, छुरी से दाँत वाले सिंह साधक के आसपास जिस भयंकर तरीके से गर्जन-तर्जन करते हुए कुहराम मचाते हैं और साधक पर आक्रमण करते हैं उससे न तो डरना और न

विचलित होना, एक साधारण काम नहीं है। साहस के अभाव में साधक अगर भयभीत हो जाए तो उसके प्राण पर भी संकट आ जाते हैं। इस मार्ग में साहसी और निर्भीक प्रकृति के मनुष्य ही सफल हो सकते हैं।

जैसे समुद्र में मछलियाँ अनेक जाति की होती हैं उसी प्रकार यह साधक भी अनेक स्वभावों, गुणों, शक्तियों से सम्पन्न होते हैं। इन्हें पितर, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, राक्षस, देव, दानव, ब्रह्म राक्षस, बैताल, कूष्माण्ड, भैरव रक्तबीज आदि कहते हैं। उनमें से किसी को सिद्ध करके अपने प्रयोजनों को साधा जाता है। भूतोन्माद, मानसिक भ्रम, आवेश, अज्ञात आत्माओं द्वारा कष्ट दिया जाना, दुःस्वप्न तान्त्रिक के अभिचार, आक्रमण आदि किसी सूक्ष्म प्रक्रिया द्वारा जो व्यक्ति कष्ट पाता है उसे तान्त्रिक प्रयोग को उलटा कर उस अत्याचार का मजा चखाया जा सकता है। तन्त्र के वाममार्ग द्वारा उस विषैले सर्प से विष को खींचकर उसे हतवीर्य जैसा बनाया जा सकता है।

तन्त्र के साधारण चमत्कारिक प्रलोभन अनेक हैं। दूसरों पर आक्रमण करना तो उनके बायें हाथ का खेल है। किसी को बीमार, पागल, बुद्धिभ्रम, उच्चाटन कर प्राणघातक संकट में डालना उनके लिये आसान है। सूक्ष्म जगत में भ्रमणशील किसी चेतनाग्रन्थी को प्राणवान बनाकर उसे प्रेत, पिशाच, बैताल, कर्णपिशाचिनी, छायापुरुष आदि के रूप में सेवक की तरह काम लेना, दूर देशों में अजनबी चीजें मँगा देना, गुप्त रखी हुई चीजों या अज्ञात व्यक्ति का नाम पता बता देना, तान्त्रिक के लिये सम्भव है। आगे चलकर

वेश बदल लेना या किसी वस्तु का रूप बदल देना भी उनके लिये सम्भव है। उनके लिये भक्ति का स्रोत काली हैं। जो परिवर्तनशील हैं। यह साधना थोड़े दिन बन्द कर देने पर शक्ति का घट जाना या समाप्त हो जाना निश्चित है। तन्त्र द्वारा कुछ छोटे मोटे लाभ भी हो सकते हैं। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक आसानी से तान्त्रिक बनती देखी गई हैं। क्योंकि तान्त्रिक को कोमल एवं साहसी परमाणुओं वाला होना चाहिये। आमतौर पर तान्त्रिक घाटे में रहता है। उससे अपकार ही अधिक होता है।

एक व्यक्ति भूत की सिद्धि किया करता था। वह उससे काम लिया करता था। जो काम वह कहता था तुरन्त कर दिया करता था। कुछ दिनों के बाद उस तान्त्रिक के पास भूत से काम लेने का काम ही नहीं रहा। इस पर उस भूत ने तान्त्रिक से कहा कि मैं यों ही बैठा नहीं रहूँगा। हमसे हमेशा काम लो नहीं मैं तुम्हें ही मार डालूँगा। तान्त्रिक बड़ा फेर में पड़ा। वह अपने गुरु के पास गया और अपनी समस्या उसने भूत वाली बतलायी। उस पर गुरु ने कहा कि अपने घर के आँगन में एक बड़ा बाँस गाड़ दो और भूत से कहो कि वह उस पर चढ़े और फिर उतरे जब तक वह ऐसा न करने के लिये नहीं कहे तो तब तक यह काम करते रहो। उस तान्त्रिक ने वही किया। अब भूत सदा उस बाँस पर चढ़ता तथा उतरता रहता था। यह कार्य करते हुए वह दुखित हो गया। जब उसने उस तान्त्रिक को अनिष्ट न करने का वचन दिया तब उस भूत को छोड़ा गया। अतः तान्त्रिक को भी विवेक से काम करना होता है।

मन्त्र सिद्धि हेतु विविध नियम

मन्त्र सिद्धि के लिये विशेष रूप से हमारे तान्त्रिक गुरुओं ने आसन, माला, दिशा, समय का उल्लेख किया है जिसे जानना अनिवार्य है। इस प्रकार प्रयोग करने पर मन्त्र सिद्ध शीघ्र होता है तथा जागृत होता है।

१. आसन—आकर्षण, वशीकरण कर्म हेतु व्याघ्र चर्म का आसन, उच्चाटन के लिये ऊँट चर्म का आसन, विद्वेषण के लिये अश्वचर्म का आसन, मारण कार्य के लिये महिष चर्म का आसन प्रयोग में लाना हितकर होगा। शान्ति, पुष्टि और लक्ष्मी प्राप्ति के निमित्त सफेद या पीले रंग का आसन, सम्मोहन वशीकरण के लिये लाल रंग का आसन, मारण में काले या नीले रंग का आसन प्रयोग में लाया जाता है। नित्य कर्म के लिये कुशा, चर्म और रेशम का आसन उत्तम होता है। यह आसन दो हाथ लम्बा तथा दो हाथ चौड़ा होना चाहिये। काम्य कर्मों में व्याघ्र चर्म का आसन सर्वसिद्धिदायक तथा रोगनाशक होता है।

२. दिशा—अनुष्ठान या मन्त्र सिद्धि में दिशा का बड़ा महत्त्व है। किस दिशा में मुख करके बैठकर कौन-सा मन्त्र जपा जाता है। वह इस प्रकार दिया जा रहा है। लक्ष्मी प्राप्ति, अरिष्ट नाश, ग्रह शान्ति, पुष्टि आदि सुखवर्धक कार्य हेतु उत्तर या पश्चिम

दिशा की तरफ बैठकर मन्त्र जप करना चाहिये। वशीकरण, आकर्षण, सम्मोहन में उत्तर दिशा की तरफ मुख करके मन्त्र जप करना चाहिये। स्तम्भन के लिये पूर्व या दक्षिण दिशा में मुख करके मन्त्र जपना चाहिये। विद्वेषण प्रयोग में नैऋत्य कोण में, उच्चाटन प्रयोग में, वायव्य या अग्नि कोण में, मारण कार्य में दक्षिण दिशा में मुख करके जप करना चाहिये।

३. माला—शत्रु नाश के लिये कमल गट्टे की माला, सम्पत्ति प्राप्ति के लिये जीव-पुत्रिका की माला; पुष्टिकर, दारिद्रय नाशक व सम्पत्ति प्राप्ति हेतु लाल चन्दन की माला, मूंगा की माला, शंख की माला प्रयोग में लानी चाहिये। सम्मोहन, आकर्षण, वशीकरण में कमल गट्टे की माला; स्तम्भन में निम्बोली की माला, विद्वेषण में छिलके सहित निम्बोली की माला और मारण में घोड़े के दाँत की माला प्रयोग में लानी चाहिये। रुद्राक्ष की माला सब प्रकार की सिद्धियों के लिये उत्तम है। माला की सभी मणियाँ समान हों।

अर्थसिद्धि के लिये २७ मणियों की माला, मारण कार्य के लिये १५ मणियों की माला तथा समस्त प्रकार के कर्म के लिये १०८ मणियों की माला का प्रयोग करना चाहिये। सभी मालाओं में मन्त्र जपते समय अनुलोम विलोम का प्रयोग करना चाहिये।

४. हवन—हवन में गाय का घी, आसन में मृगचर्म, माला में रुद्राक्ष, दिशा में पूर्व या उत्तर सदा पवित्र माना गया है।

५. स्थान—तान्त्रिक अनुष्ठान शवपीठ, श्मशान या श्यामापीठ पर किया जाता है। सामान्य तथा काम्य प्रयोग उस देवता के

मन्दिर में किया जाता है जिस देवता का मन्त्र होता है। सिद्ध पीठों में मन्त्र सिद्धि शीघ्र होती है। तमोगुणी साधना श्मशान में, रजोगुणी साधना देव मन्दिर या अपने निवास स्थान पर और सत्वगुणी उपासना नदी के तीर या तीर्थ स्थल पर की जाती है। जो देव मूर्ति उपेक्षित हो या पुराना देव मन्दिर जिसकी पूजा नहीं हो रही है, वहाँ जप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। गुरु के सान्निध्य में भी जप करने से शीघ्र सिद्धि मिलती है। ये सब दुर्लभ हो तो अपने घर के एकान्त कमरे में प्रयोग करना चाहिये। मारण कार्य कभी भी घर में नहीं करना चाहिये।

६. समय—तिथि, वार, योग, ऋतु एवं मास, पक्ष लक्ष्मी साधना, शान्ति एवं पुष्टि साधना—किसी भी माह के शुक्ल पक्ष में बुध व गुरुवार तथा २, ३, ४, ७ तिथियों से करना चाहिये। इसके लिये हेमन्त ऋतु उपयुक्त समय है।

वशीकरण सम्मोहन, आकर्षण—यह प्रयोग वसन्त ऋतु में शुक्ल पक्ष की ४, ६, ९, १३ तिथियों को तथा सोमवार एवं गुरुवार को करना चाहिये।

स्तम्भन—शिशिर ऋतु में ८, १५ तिथि को रवि, मंगल या शनिवार से करें।

विद्वेषण—ग्रीष्म ऋतु में शुक्ल पक्ष की ८, ९, १०, ११ तिथियों एवं शुक्रवार या शनिवार से करे।

उच्चाटन—वर्षा ऋतु में कृष्ण पक्ष की ८, १४ तथा रवि या शनि से करे।

मारण—शरद ऋतु के कृष्ण पक्ष में ८, १५ तिथि एवं रवि,

मंगल या शनि से क्रिया प्रारम्भ करें।

सभी शुभ कर्म प्रयोगों के लिये गुरु शुक्र के उदय काल में अमृत सिद्धि योग, स्वार्थ सिद्धि योग, रवियोग या कुमार योग में कार्य प्रारम्भ के लिये उत्तम समय है।

शान्ति कार्य में 'नमः' शब्द, स्तम्भन में 'वषट्' शब्द, वशीकरण में 'स्वाहा' शब्द विद्वेषण में 'वौषट्' शब्द, उच्चाटन में 'हुँ' शब्द तथा मारण में 'फट्' शब्द का प्रयोग मन्त्र के अन्त में करना चाहिये।

दस अक्षर तक के मन्त्र 'बीज मन्त्र', बीस अक्षर के मन्त्र और अधिक अक्षर वाले मन्त्र को 'माला मन्त्र' कहा जाता है।

मन्त्र की जातियाँ—एक वर्ण वाले मन्त्र को कर्त्तरी, दो अक्षर वाले मन्त्र को सूची, तीन अक्षर वाले मन्त्र को मुद्‌गर, चार अक्षर वाले मन्त्र को मुसल, पाँच अक्षर वाले मन्त्र को क्रूर, छः अक्षर वाले मन्त्र को शृंखला, सात अक्षर वाले मन्त्र को क्रकच, आठ अक्षर वाले मन्त्र को शूल, नव अक्षर वाले मन्त्र को वज्र, दस अक्षर वाले मन्त्र को शक्ति, एकादश अक्षर वाले मन्त्र को परशु, द्वादश अक्षर वाले मन्त्र को चक्र, त्रयोदश अक्षर वाले मन्त्र को कुलिश, चतुर्दश अक्षर वाले मन्त्र को नाराच, पंचदश अक्षर वाले मन्त्र को भुशुंडी, षोडश अक्षर वाले मन्त्र को पद्म कहा जाता है।

जिस मन्त्र के प्रारम्भ में नाम लिया जाता है उसे 'पल्लव मन्त्र' कहा जाता है। जिसके अन्त में नाम लिया जाय उसे 'योजन मन्त्र' कहते हैं। नाम के आदि मध्य या अन्त में मन्त्र होने से 'रोध मन्त्र' कहलाता है। नाम के प्रत्येक अक्षर के पीछे मन्त्र देने पर

उसे 'पर मन्त्र' कहा जाता है। नाम के आदि और अन्त में मन्त्र देने से 'सम्पुट मन्त्र' कहा जाता है।

मारण, उच्चारण, विद्वेषण कार्य में पल्लव मन्त्र का प्रयोग होता है।

वशीकरण, शक्ति, मोहन में योजन मन्त्र का प्रयोग होता है।

कीलन, त्राटक रक्षादि कार्यों में सम्पुट मन्त्र का उपयोग होता है।

बन्धन, उच्चाटन, मारण कार्य में मन्त्र के अन्त में **हुं** लगाया जाता है।

विद्वेषण कार्य में मन्त्र के अन्त में **फट्** लगाया जाता है।

भूत प्रेत आदि की शान्ति में मन्त्र के अन्त में **हुं फट्** लगाया जाता है।

शुभ कार्यों में मन्त्र के अन्त में **वषट्** लगाया जाता है।

यज्ञादि में मन्त्र के अन्त में **स्वाहा** लगाया जाता है।

पूजन कार्यों में मन्त्र के अन्त में **नमः** लगाया जाता है।

पुष्टि, पुत्रादि कार्यों में मन्त्र के अन्त में **स्वाहा** लगाया जाता है।

प्रबल वशीकरण कार्य में मन्त्र के अन्त में **स्वधा** लगाया जाता है।

परस्पर विद्वेषण कार्यों में मन्त्र के अन्त में **वषट्** लगाया जाता है।

आकर्षण में मन्त्र के अन्त में **हुं** लगाया जाता है।

उच्चाटन ऋक में मन्त्र के अन्त में **स्वस** लगाया जाता है।

जिस मन्त्र के अन्त में स्वाहा नमः शब्द का प्रयोग होता है ये स्त्री संज्ञक मन्त्र कहा जाता है। जिस मन्त्र के अन्त में हुं या फट् शब्द का प्रयोग होता है उसे पुरुष संज्ञक मन्त्र कहा जाता है जिन मन्त्रों के अन्त में स्वाहा शब्द का प्रयोग किया जाता है उसे नपुंसक मन्त्र कहा जाता है।

रुद्राक्ष की माला बहुत पवित्र और सभी कार्यों के लिये उत्तम होती है। इस माला को हमेशा गले में पहना जा सकता है। इसके पहनने से हृदय रोग, रक्तचाप का रोग दूर होता है। वैष्णव लोग तुलसी की माला का प्रयोग करते हैं। कमलगट्टा की माला लक्ष्मी प्राप्ति हेतु तथा लाल चन्दन की माला धन प्राप्ति हेतु प्रयोग में विशेष लाभकारी होती है। गणपति के प्रयोग में मूँगे की माला, सरस्वती के प्रयोग में स्फटिक की माला, स्तम्भन तथा शत्रुनाशक कर्म हेतु हल्दी की माला उपयुक्त होती है। धन प्राप्ति हेतु पश्चिम दिशा श्रेष्ठ है।

हवन कुण्ड—शान्ति पुष्टि सम्पत्तिप्रद प्रयोग में कुण्ड गोल आकार का; वशीकारण, आकर्षण, सम्मोहन प्रयोग में अष्टकोण वाला कुण्ड; स्तम्भन में चतुष्कोण वाला कुण्ड; विद्वेषण में त्रिकोण वाला कुण्ड; उच्चाटन में षटकोण वाला कुण्ड; मारण में अर्धचन्द्र वाला कुण्ड काम में लाना चाहिये।

हवन में समिधा—शान्ति सम्पत्ति और पुष्टि कार्य में पलाश, बिल्वपत्र, सभी गूलर या अन्य दूध वाली लकड़ी लानी चाहिये।

वशीकरण में भी इन्हीं लकड़ियों को हवन कार्य में लाना चाहिये। स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चारण मारण कार्य में कुचीला नीम

या धतूरे की समिधा हवन प्रयोग में लेनी चाहिये।

मन्त्र जप के लिये ब्रह्म मुहूर्त या रात्रि ज्यादा उपयुक्त होती है। जप करते समय रक्षा विधान सबसे पहले करना चाहिये। जप करते समय साधक को बिल्कुल निडर रहना चाहिये। जरा भी भयभीत नहीं होना चाहिये। भैरव तन्त्र या हनुमद् तन्त्र का प्रयोग निर्भय होने के लिए करना चाहिये। अधिक मात्रा वाले मन्त्र प्रयोग में प्रतिदिन हवन करना ठीक होता है। अनुष्ठान में कभी कम और कभी ज्यादा मन्त्र नहीं जपना चाहिये।

स्तम्भन तथा वशीकरण कार्य में अंगूठे के अग्रभाग से माला जपना चाहिये। आकर्षण व वशीकरण कार्य में अंगूठे व अनामिका के सहयोग से माला जपनी चाहिये। विद्वेषण में अंगूठे व तर्जनी तथा मारक कार्यों में अंगूठे व कनिष्ठिका उंगली से माला जपनी चाहिये।

शुभ कार्यों में पद्मासन में, स्तम्भन कार्य में विकटासन में, आकर्षण, सम्मोहन आदि में कुक्कुटासन, शान्ति कार्य में स्वस्तिकासन, मारक कार्य में पार्ष्णिकासन, वशीकरण कार्य में भद्रासन में बैठकर मन्त्र जाप करना चाहिये।

सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, शिवरात्रि, होलिका, दीपावली, सिद्ध पीठ एवं गुरु जिस दिन से कार्यारम्भ करने को कहे उस दिन से प्रयोग करना चाहिये। मेरूतन्त्र में लिखा गया है कि शान्ति कर्म के प्रयोग में उपांशु, पुष्टि कर्म में मानसिक और अभिचार कर्म में वाचक जप किया जाना चाहिये।

तन्त्र शास्त्र में माला का विशेष महत्त्व बतलाया गया है।

गये धन की प्राप्ति के लिये शंख की माला, शान्ति एवं ऐश्वर्यकारक हेतु स्फटिक की माला, ऋद्धि सिद्धि धन के लिये कमल गट्टे की माला, सन्तान प्राप्ति के लिये पुत्रजीवक की माला, वशीकरण के लिये मूंगा की माला, मुक्ति के लिये मोती की माला, कामना सिद्धि के लिये सोने चाँदी की माला, कामशक्ति वृद्धि के लिये व स्त्री वशीकरण के लिये हल्दी की माला, पुरुष वशीकरण के लिये दर्वी की, ज्वर शान्ति के लिये लाख की, पित्त रोग शान्ति हेतु शंख की, स्वास्थ्य लाभ हेतु देवदार की, उच्चाटन के लिए आम की, यक्षिणी साधना के लिये लाल चन्दन की माला प्रयोग करें।

दश महाविद्यायें

तन्त्र शास्त्र में महाविद्याओं की बड़ी महत्ता कही गई है। इनकी साधना से मनोवांछित फल की शीघ्र प्राप्ति होती है। इन्हें इष्ट देवी के रूप में सिद्ध किया जाता है। माता के रूप में सिद्ध करने पर ये देवियाँ साधक की रक्षा तथा पालन करती हैं। मित्र के रूप में सिद्ध करने पर हरेक कार्य में साधक की सहायता करती है। परन्तु पत्नी के रूप में सिद्ध करने पर भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान साधक को देती हैं, साथ ही धन, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि करती है। परन्तु पत्नी के रूप में सिद्ध करने पर पत्नी साथ छोड़ देती है अर्थात् या तो पत्नी की मृत्यु हो जाती है या पत्नी सदा अस्वस्थ रहा करती है। अतः साधक को चाहिये कि मित्र के रूप में ही सिद्धि इन महाविद्याओं की साधना करें।

प्राणतोषिणी तन्त्र में कहा गया है—

काली तारा महाविद्या षोडसी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥

बगला सिद्धविद्या च मातंगी कमलात्मिका।
एता दश महाविद्या सिद्धविद्या प्रकीर्तिता॥

अर्थात् दश महाविद्याएँ निम्न हैं—

१. काली
२. तारा
३. षोडसी (त्रिपुरसुन्दरी)
४. भुवनेश्वरी
५. छिन्नमस्ता
६. धूमावती
७. भैरवी
८. बगलामुखी
९. मातंगी
१०. कमला

वाममार्गी एवं दक्षिण मार्गी दोनों वर्ग इन दस महाविद्याओं की उपासना करते हैं। तन्त्रोक्त गायत्री दस महाविद्याओं की उपासना में श्रेयस्कर होती है। गायत्री मन्त्रानुसार दस महाविद्याओं की साधना के मन्त्र नीचे दिये जा रहे हैं।

१. **काली**—ओं कालिकाये विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नो अघोरा प्रचोदयात्।

२. **तारा**—ओं ताराये विद्महे महोग्रायै धीमहि तन्नोदेवी प्रचोदयात्।

३. **षोडसी (त्रिपुरसुन्दरी)**—ओं ऐं त्रिपुरा देव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।

४. **भुवनेश्वरी**—ओं नारायण्यै विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

५. **भैरवी**—ओं त्रिपुरायै विद्महे महाभैरव्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

६. **छिन्नमस्ता**—ओं वैरोचन्यै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

७. **धूमावती**—ओं धूमावत्यै विद्महे संहारिण्यै धीमहि तन्नो

धूमा प्रचोदयात्।

८. **बगलामुखी**—ओं ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भन बाणाय धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्।

९. **मातंगी**—ओं मातंगयै विद्महे उच्छिष्ट चाण्डाल्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

१०. **कमला**—ओं महादेव्यै विद्महे विष्णुपत्न्यै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

उक्त महाविद्याओं की सिद्धि १,००,००० (एक लाख) मन्त्र जपकर किया जा सकता है। जप का दशांश हवन भी करना होगा।

देवी सिद्धियाँ

१. तारा देवी सिद्धि

तारण करने वाली शक्ति को तारा कहते हैं अर्थात् सांसारिक दुखों से छुटकारा दिलाकर सुख, धन, ऐश्वर्य प्रदान करने वाली शक्ति को तारा कहा जाता है।

ध्यान

प्रत्यालीढ़ पदां घोरां मुण्ड माला विभूषिताम्।
खर्वां लम्बोदरी भीम्रां व्याघ्र चर्मावृतां करो।
नवयौवन सम्पन्नां पंचमुद्राविभूषिताम्
चतुर्भुजां ललजिहवां महाभीमां वर प्रदाम्
खंग कतृसमायुक्तः सव्येतर भुज द्वयाम्
कपालोत्पल संयुक्त सव्यपाणिं युगान्विताम्
पिंगोग्रैक जटां ध्यायेन्मोलां वक्षाम्यम् षिताम्
ज्वलच्चिता मध्यगतां घोर द्रष्टां करालिनीम्
सावेश स्मेरवदना स्वयलंङ्कार विभूषिताम्
विश्वव्यापक तोयान्तः श्वेत पदमोपरिस्थिताम्
अक्षोभ्यो देवी मूर्द्धन्यः त्रिमूर्तिनागरूप धृक

तारा देवी सिद्धि मन्त्र

ओं ह्रीं स्त्रीं हूं फट्
ओं ऐं ह्रीं क्रीं हूं फट्
ओं श्रीं ह्रीं क्रीं हूं फट्
ह्रीं स्त्रीं हूं फट्

उक्त तारा मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का एक लक्ष जप करना चाहिये। दशांश होम तर्पण अभिषेक व ब्राह्मण भोजन करना चाहिये। घृत संयुक्त बिल्व से हवन कराना चाहिये। शुद्ध समय में किसी भी माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि से जप आरम्भ करे तथा अगले कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि तक साढ़े तीन हजार प्रतिदिन जप करे। शनिवार को एक नरमुण्ड लाकर उसको विधिवत सिन्दूर से टीके और एक हाथ नीचे किसी निर्जन स्थान में गाड़कर उसी पर बैठकर मन्त्र जपे। इस प्रकार तारा भगवती साकार रूप में दर्शन देकर सिद्धि देती है।

योगीराज यशपाल जी ने अपनी पुस्तकों में तारा देवी की सिद्धि का निम्न तरीका बताया है।

किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से साधना प्रारम्भ की जाती है। इसका समय रात्रि के ९ बजे से ३ बजे के बीच है। जिस कमरे में साधना करनी हो, उस कमरे में सभी सामान हटा देना चाहिये तथा कमरे की दीवारें तथा छत गुलाबी रंग से पुतवा देना चाहिये। कमरे को शुद्ध जल से धो देना चाहिये। कमरे में लकड़ी का दो फुट लम्बा तथा दो फुट चौड़ा तख्त जमीन से एक फुट ऊँचा उठाकर रखना चाहिये। तख्त पर लाल रंग का

श्री तारा देवी
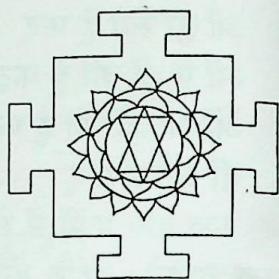
तारा यन्त्र

कपड़ा बिछा देना चाहिये। तख्त के सामने सूती लाल रंग का आसन बिछाना चाहिये। आसन पर उत्तर की तरफ मुख करके बैठना चाहिये। तख्त उत्तर दिशा की तरफ होना चाहिये। गुलाबी रंग के चावलों से तख्ते पर अष्टदल बना देना चाहिये। उसके मध्य में एक मोटा मिट्टी का दीपक, शुद्ध घी से भरा हुआ, लाल रुई की बत्ती डालकर रखना चाहिये। दीपक भी लाल रंग से रंगा होना चाहिये। अष्टदल के सामने चावल की सात छोटी-छोटी ढेरियाँ बना दें। प्रत्येक ढेरी पर एक सुपारी तथा एक कपूर की टिकिया रख दें। गंधक को पीसकर उसकी ढेरी बनाकर उसके ऊपर दीपक को रख दें। दीपक के समाने सात बतासे रख दें। सातों ढेरियों पर एक-एक लौंग और इलायची भी रख दें तख्ते पर एक किनारे पर लाल रंग से रंगा एक कलश भी रख दें। उसमें लाल जल भर दें। स्वयं लाल रंग की धोती, गंजी, चादर तथा

यज्ञोपवीत पहनकर बैठना चाहिये। सर्वप्रथम दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें—

ओं अद्य अमुक नाम संवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ वासरे भगवती तारा महाविद्यां सिद्ध्यर्थे साकार रूपे सिद्धि प्राप्तयर्थं अद्यतः चतुर्दश दिवसानि यावत प्रतिदिनं शतं एकं मालां जपं अमुक गोत्रोत्पन्नो अहम् नाम करोमि। सत्याः सन्तु मम् कामाः।

साधना तक दिन में खाना एक समय खाना चाहिये। दिन में सोना नहीं चाहिये। असत्य सम्भाषण, लेन-देन नहीं करना चाहिये। क्षौर कर्म वर्जित है। न तेल लगाना, न खाना चाहिये। सम्भव हो तो तारा देवी का फोटो तख्त पर सामने रखना चाहिये तथा स्थिर दृष्टि से देखता हुआ तारा मन्त्र का जाप प्रारम्भ करें। मन्त्र—'**ओं तारा तूरी स्वाहा**' का धीरे-धीरे ध्वनि करता हुआ जप करें। चौदह दिनों के अन्दर तारा देवी विभिन्न रूप में प्रकट होंगी। पहले भयावना-डरावना रूप द्वारा जप में अवरोध करने की कोशिश करेंगी। साधक को किसी भी तरह भयभीत नहीं होना चाहिये। अन्त में तारा देवी २० वर्ष की युवती के रूप में सुन्दर बदन वाली सुगन्धयुक्त होकर दर्शन देती है। उस समय तारा साधक जिस रूप में तारा को सिद्ध करता हो उसी रूप में प्राप्त करने का अनुरोध करे।

२. धूमावती देवी सिद्धि

मन्त्र— धूं धं धूमावती स्वाहा

धूमावती देवी शत्रुनाशक हैं।
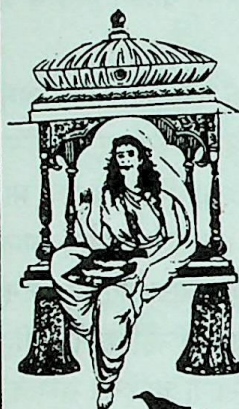
श्री धूमावती देवी
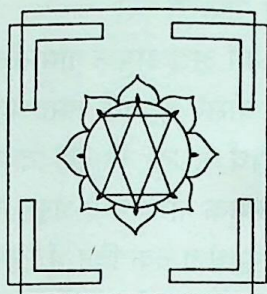
धूमावती यन्त्र

इनका न्यास विनियोग निम्न है—

पिप्लाद ऋषये नमः शिरसि
निवृच्छन्दसे नमः मुखे
धूमावत्यै देवतायै नमः हृदि।

कराङ्गन्यास	**षडङ्गन्यास**
धां अंगुष्ठाभ्यां नमः	**धाँ हृदयाय नमः**
धीं तर्जनीभ्यां नमः	**धीं शिरससे स्वाहा**
धूं मध्यमाभ्यां नमः	**धूं शिखायै वषट्**
धैं अनामिकाभ्यां नमः	**धैं कवचाय हूं**
धौं कनिष्ठकाभ्यां वौषट्	**धौं नेत्रत्रयाय वौषट्**
धः करतलपृष्ठाभ्यां फट्	**धः अस्त्राय फट्**

ध्यान

विवर्णा चंचला रुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा
विवर्ण कुण्डला रुक्षा विधवा विरला द्विजा
काक ध्वज रथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा
सूर्यहस्ताति रूक्षाक्षी धूत हस्ता वर्णन्वता
प्रवृद्ध घोड़ा तु भशं कुटिला कुटिलेक्षणा
क्षुत् पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलह प्रिया

विधि—किसी भी माह की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी से उपवास करे। एकान्त स्थान में दिन-रात मौन रहते हुए एक लाख बार जप करे। उष्णीष और आर्द्र वस्त्र धारण कर जप करना चाहिये। फिर शत्रु के नाम के ऊपर मूल मन्त्र लिखकर उसके ऊपर शिवलिंग की स्थापना कर पूजन पूर्वक जप में लगे। जप के पूर्व निम्न संकल्प करे—

ओं अद्य अमुक गोत्रोत्पन्नो अमुक शर्मा, वर्मा अहम् अमुक संवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे मम् अमुक नाम शत्रुं मारणार्थ धूमावती महाविद्यां प्रीत्यर्थ धूमावती मन्त्रस्य लक्षं वारं जपं करोमि। सत्याः सन्तु मम् कामाः।

५०० बार जप करने पर शत्रु ज्वरग्रस्त हो जाता है। पंचगव्य या दूध द्वारा हवन करने से शत्रु का ज्वर छूट जाता है। उसके बाद देवी की पूजा कर जप करे।

हरिद्रापत्र पर शत्रु का नाम लिखकर किसी वन के बीच में डालकर उसके ऊपर उक्त मन्त्र का दस हजार जप करें। इससे

शत्रु का उच्चाटन होता है।

श्मशान की अग्नि में कौए को दग्ध कर उसकी भस्म लेकर उसे १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। इस भस्म को शत्रु का नाम उच्चारण करते हुए आठों दिशाओं में फेंक दें। इससे भी शत्रु का उच्चाटन होता है।

रजस्वला के रक्ताक्त वस्त्र द्वारा निर्मित धूप को जलाकर यदि निवेदन करे तो कालिका गृध रूप में आकर शत्रु का नाश करती है।

३. भुवनेश्वरी देवी सिद्धि

मन्त्र—ह्रीं

इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से भुवनेश्वरी देवी की सिद्धि प्राप्त होती है तथा साधक मनोवांछित फल पाता है। भूत,
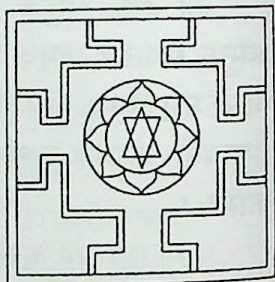
भुवनेश्वरी यन्त्र

श्री भुवनेश्वरी देवी

भविष्य का ज्ञान प्राप्त होता है।

उक्त मन्त्र की सिद्धि से भुवनेश्वरी देवी सिद्ध होती हैं तथा साधक जगत के नर नारी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है तथा सभी इच्छाएँ उसकी पूरी होती हैं।

शक्तियाँ नौ हैं—१. जया, २. विजया, ३. अपराजिता, ४. नित्या, ५. विलासिनी, ६. दोग्ध्री, ७. अघोरा, ८. मंगला, ९. अजिता।

यन्त्रों के अष्टमण्डल की अधिष्ठात्री आठ शक्तियाँ निम्न हैं—

१. अनंग कुसुमा, २. अनंगकुसुमातुरा, ३. अनंग मदना, ४. अनंग मदनातुरा, ५. भवनपाला, ६. गगनवेगा, ७. शशि रेखा, ८. गगन रेखा।

षोडश शक्तियाँ सोलह पत्रों में निम्न प्रकार से वास करती हैं—

१. कराली, २. विकराली, ३. उमा, ४. सरस्वती, ५. दुर्गा, ६. श्री, ७. लक्ष्मी, ८. श्रुति, ९. स्मृति, १०. धृति, ११. श्रद्धा, १२. मेधा, १३. मति, १४. कान्ति, १५. आर्या, १६. उमा।

साधक उक्त भुवनेश्वरी मन्त्र का ३२ लाख जप से साक्षात् भुवनेश्वरी को अपने वश में कर लेता है। कण्ठ भर जल में स्थित होकर ३ हजार मन्त्र का जप करें तो मनुष्य अपनी अभीष्ट कन्या को प्राप्त कर लेता है। शाल्मली के पिण्ड से परिपूर्ण और मधुर युक्त पुतली बनाकर जप करने पर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें। रविवार के दिन उसका अर्चन करें तो साधक राजा, नर, नारी को

अपने वश में कर लेता है। कपूर, गुग्गुल से संयुक्त कुंकुम को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक करने पर साधक राजा को वश में कर लेता है। पच्चीस बार जप किए हुए जल से प्रतिदिन स्नान करने से सभी प्रकार का सौभाग्य प्राप्त होता है। पच्चीस बार जल अभिमन्त्रित करके जल को जो प्रातःकाल पीता है वह बड़ी पूजा का लाभ कर कवियों का भी अगुआ हो जाता है। मन्त्रधारी प्रतिदिन मन्त्र से अभिमन्त्रित अन्न का भक्षण करें तो धन की वृद्धि होती है। ढाक (पलाश के फूल) से हवन करने पर बहुत बड़ी श्री की प्राप्ति होती है। मधु से युक्त लाल कमलों द्वारा दस हजार आहुतियाँ तथा तिल सहित चावल की आहुतियाँ पुरुष को राज्यश्री प्रदान करती है।

***मन्त्र*—ह्रीं गौरी रुद्र दयिते योगेश्वरी बम फट्।**

यह १६ अक्षरों वाला मन्त्र है। इसे भोजपत्र पर लिखकर अपनी बाँयीं बाँह में या कण्ठ में या अपने मस्तक में बाँधें तो सब मनुष्यों को वश में कर लेता है। विशेष रूपसे नृपति को वश में कर लेता है।

४. बगलामुखी देवी सिद्धि

***मन्त्र*—ओं ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा।**

यह देवी भी शत्रुनाशक है। सर्वदुष्टानां के स्थान पर शत्रु का नाम लेना चाहिये। हल्दी की माला पर इसका जप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। एक लक्ष जप से भगवती प्रसन्न होती है।
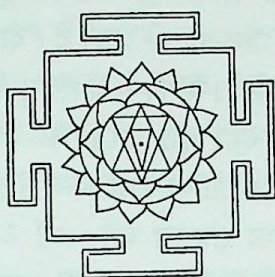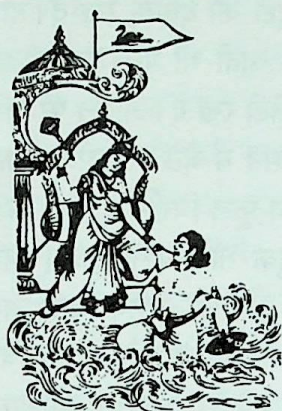
बगलामुखी यन्त्र

श्री बगलामुखी देवी

यह उग्र देवी है।

साधन विधि—किसी भी माह के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी से जप प्रारम्भ करना चाहिये। चौदह दिन में यह साधना पूरी करनी पड़ती है। इसमें साधक को पीला वस्त्र धारण करना पड़ता है। आसन भी पीले वस्त्र का होना चाहिये। एक कमरे में यह साधना करें। उस कमरे में से अन्य सामान हटा देना चाहिये। कमरे की पुताई पीले रंग से कर देनी चाहिये। रात्रि के १० बजे से जप प्रारम्भ कर प्रातः ५ बजे तक करना चाहिये। कमरे के दक्षिण भाग में जप स्थान रखें। एक आम का तख्ता एक फुट जमीन से ऊँचा पीले रंग से रंगा हुआ ३ फुट लम्बा चौड़ा रखें। उस पर पीले रंग के चावल से बगलामुखी यन्त्र बना दें। तख्ते पर पीला कपड़ा बिछा दें। उस पर बीच में पीले रंग का रंगा हुआ कलश रख दें।

उस पर पीले रंग का रंगा हुआ मिट्टी का दीपक रख दें। दीपक में गाय का घी डाल दें। दीपक की बाती भी पीले रंग की होनी चाहिये। बगल में बगलामुखी का फोटो रख दें। आसन पर दक्षिण की ओर मुख करके जप हेतु सुखासन में बैठें। तख्ती पर कन्ने का पीला फूल या अन्य पीले रंग का फूल बिखेर दें। जप के पू निम्न संकल्प करें—ओं अद्य अमुक गोत्रोत्पन्नो अहम् अमुक नाम शर्मा, वर्मा अहम् अमुक नाम संवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथे। अमुक वासरे सर्व शत्रु विनाशार्थं शत्रोपरि विज पुण्यर्थ बगलामुखी महाविद्यां साकार रूपे सिद्धि पुण्यर्थ बगलामुख मन्त्रस्य एक लक्ष बार जपं करोमि। सत्याः सन्तु मम् कामाः।

उसके बाद निम्न विनियोग करें—

ओं अस्याः श्रीं ब्रह्मास्त्र विद्या बगला मुख्य नारद ऋष नमः शिरसि। त्रिष्टुप छन्दसे नमो मुखे। श्री बगलामुखी देवता नमो हृदये। ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये। शक्तये नमः पादयोः। अ कीलकाय। नमः सर्वांगे। श्री बगलामुखी देवता प्रस सिद्धयर्थ जपे विनियोगः।

ध्यान

मध्ये सुगन्धि मणि मंडप रत्नवेदी सिंहासनो परिगताम्ब पीत वर्णम् पीताम्बरा मरणमाल्य विभूतिषांगीन् देवी नमा धृत मुदगर बैरि जिह्वाम् जिह्वाग्रमादाय करेण देवी वामेन शत्रु परिपीडयन्तीम् गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराद द्विभुजान नमामि॥

नित्य १०१ माला मन्त्र का फेरे। नित्य केवल दूध का सेवन करें। इनकी साधना में भी देवी उग्र रूप में साधक को डराती धमकाती है। साधक अपने साधन से निर्भय होकर भगवती बगला को प्रसन्न करके चौदहवीं रात्रि में उनका दर्शन कर पाता है तथा इच्छित वर की प्राप्ति उसे होती है। इनका हवन सदा कन्नेर के पीले फूल से करना चाहिये।

मधु, घृत और शक्कर मिश्रित तिल से हवन करने पर मनुष्य वश में हो जाता है।

आकर्षण—मधु, घृत, शक्कर सहित नमक से हवन करने पर आकर्षण होता है।

कलह—तेल में मिली नीम की पत्ती से हवन करने पर आपस में झगड़ा करता है।

शत्रु स्तम्भन—ताड़पत्र नमक युक्त हल्की की गाँठ से हवन करने पर शत्रु का स्तम्भन होता है। अगर, राई, भैंस का घी और गुग्गल से हवन रात्रि में किया जाये तो शत्रु का शीघ्र नाश होता है।

उच्चाटन—गीध और कौए के पंख को सरसों के तेल में मिलाकर चिता पर हवन करने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

रोगनाशक—मधु, शहद तथा चीनी मिला हुआ दूध, गुरुच एवं धान का लावा से हवन करने से रोग खत्म हो जाता है।

शत्रु शक्तिनाशक—चीनी तथा मधु से युक्त एक वर्ण वाली गौ के दूध को बगलामुखी मन्त्र से ३०० बार अभिमन्त्रित करके उस दूध का पान करने से शत्रुओं का समस्त सामर्थ्य नष्ट

हो जाता है।

शत्रु समस्त कार्य रोधक—धतूरे के रस एवं निशाचूर्ण से हरताल को घोटकर षट्कोण यन्त्र में बीज मन्त्र तथा शत्रु का नाम लिखकर उस यन्त्र को पीले डोरे से लपेटकर अपने घर में रख दे। घूमते हुए कुम्हार की चाक की मिट्टी से बैल की एक मूर्ति बनाकर उस मूर्ति के मध्य में उस यन्त्र को रखे और चौदह दिन तक उसमें हरताल का लेपन कर उस बैल का चौदह दिन पूजन करने से शत्रु की वाणी, गति एवं कार्य रुक जाते हैं।

देव स्तम्भन—चम्पा के पुष्प से हवन करने पर देव स्तम्भन होता है।

७, ९, ११ अथवा २१ दिन में जप पूरा करें।

हल्दी से भोजपत्र पर यन्त्र बनावें।

९. मातंगी देवी सिद्धि

***मन्त्र*—ओं ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।**

अंगन्यास मन्त्र—

ओं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः
ओं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः
ओं हूं मध्यमाभ्यां नमः
ओं हैं अनामिकाभ्यां वौषट्
ओं ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां वौषट्
ओं ह्रः करतलपृष्ठाभ्यां फट्
ओं ह्रां हृदयाय नमः

श्री मातंगी देवी
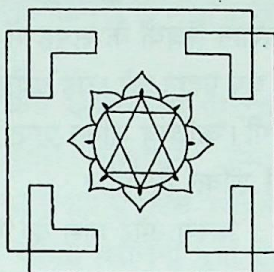
मातंगी यन्त्र

ओं ह्रीं शिरसे स्वाहा
ओं हूं शिखायै वषट्
ओं हैं कवचाय नमः
ओं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्
ओं हः अस्त्राय फट्

ध्यान

श्यामांगी शशि शेखरां त्रिनयनां
रत्न सिंहासनस्थिताम्।
ध्यायेऽहं वेदैबहि दण्डैरसि
खेटक पाशांकुश धराम्॥

गन्ध पुष्प आदि से देवी का पूजन करें। नैवेद्य शर्करा युक्त पायस अर्जित करे। छः हजार जप से पुरश्चरण होता है। दशांश

हवन घृत, शर्करा, मधु, पलाश समिधा से करें। साधक चौराहा, श्मशान स्त्रियों के समूह में मत्स्य, मांस और पायस देकर गुग्गुल से धूप प्रदान करे। यह प्रयोग स्त्री में ही करे। सभी मनोकामनापूर्ण होगी। कवित्व शक्ति प्राप्त होगी। अग्नि, जल और वाक् स्तम्भन की शक्ति मिलेगी।

मत्स्य और मांस के बिना इस देवी का पूजन न करें।

६. छिन्नमस्ता सिद्धि

श्री छिन्न मस्तिका देवी
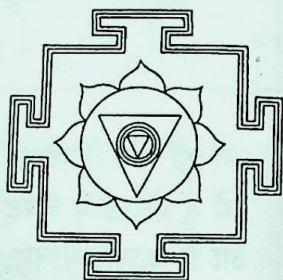
छिन्न मस्तिका यन्त्र

घी सिन्दूर से यन्त्र लिखें।

मन्त्र— **ओं श्री ह्रीं क्लीलं ऐं वज्र बैरोचनिये हूं हूं फट् स्वाहा।**

अमावस्या की मध्य रात्रि में १२ से २ बजे के बीच में १९००० जप करें। दशांश हवन तिल, मदिरा, मछली को घी भिगोकर हवन करें, सुरा की बलि दे दें।

यह भी श्मशानवासी देवी है। इनकी साधना से सभी इच्छायें पूर्ण होती हैं तथा शत्रु समाप्त होते हैं।

तामाग्नि-वर्ण तयसा ज्वलंतीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम।
दुर्गा देवीं शरणोमहं प्रपद्ये सुतरां नाशयते तमः॥

अर्थात् अग्नि के समान रक्त वर्ण वाली तप से सदैव प्रज्वलित कर्म फल की इच्छा वाले साधनों से सेवित वैरोचनी दुर्गा देवी (छिन्नमस्ता) के शरण जाता हूँ जो कि अन्धकार को अपने आप नाश कर देती है।

प्राणतोषणि तन्त्र में इनकी उत्पत्ति की कथा निम्न प्रकार से दी गई है—

एक समय छिन्नमस्ता देवी अपनी सहचरी जया विजया के साथ मन्दाकिनी में स्नान करने गयी। वहां स्नान करने पर कामाग्नि से पीड़ित होकर वह जगदानन्द कारिणी भगवती कृष्ण वर्ण की हो गयीं। उस समय जया विजया ने उनसे खाने के लिये भोजन माँगा। वे बहुत भूखी थीं। देवी ने उन्हें प्रतीक्षा करने को कहा। उस समय जया विजया ने विनम्र मधुर स्वर में देवी से कहा कि माता प्रार्थना करने पर शत्रुओं को अवश्य ही भोजन देती हैं। माता दयावान् होती है। अतः आपको अवश्य ही कुछ भोजन देना चाहिये। इस पर देवी ने कराग्र से अपने सिर का छेदन कर दिया। छिन्नशिर देवी के बायें हाथ पर आ गिरा और उनके कबन्ध से तीन धाराएँ बह निकलीं। दो धाराएँ उनकी सहचरी डाकिनी और वर्णिनी के मुख में प्रवाहित होने लगी तथा तीसरी धारा को भगवती अपने कटे हुए सिर से स्वयं पान करने लगीं। तभी से उस

स्वरूप का नाम 'छिन्नमस्ता' हो गया।

मन्त्र—मन्त्र महोदधि में १७ अक्षरों का मन्त्र बताया गया है—

ओं श्रीं ह्रीं ह्रीं वज्र वैरोचनिये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

विश्वसागर तथा रुद्रयामल के अनुसार—

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनिये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

मन्त्र महार्णव के अनुसार—

ओं श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनिये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

मन्त्र का पुरश्चरण ४ लाख जप से तथा दशांश हवन पलाश के फूल से करना चाहिये।

मालती के पुष्प से हवन करने पर वाक्सिद्धि, चम्पा के फूल से सुख-सम्पत्ति मिलती है।

सफेद कन्नेर के फूल से रोग मुक्ति और दीर्घायु, लाल कन्नेर के फूल से राजा, मन्त्री एवं अधिकारियों का वशीकरण होता है।

दुम्बर और पलाश के फूल से लक्ष्मी प्राप्ति, पायस एवं अन्न के होम से कवित्व शक्ति, तिल और चावल के होम से सर्वत्र अनुकूलता होती है।

चिता की अग्नि में कोयल के पंख का हवन करने से शत्रु का नाश होता है।

७. षोडशी (त्रिपुर सुन्दरी) साधना

मन्त्र—**श्रीं ह्रीं क्लीं।**

श्री षोडशी (त्रिपुर सुन्दरी) देवी
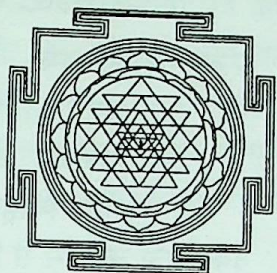
षोडशी यन्त्र

एक लक्ष जप द्वारा सिद्धि। त्रिमधुयुक्त बिल्व या जवापुष्प द्वारा दशांश होम।

***अन्य आराधना मन्त्र*—ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौ : ओं ह्रीं श्रीं क्लीं रूं क्रीं क्लीं सौ : ऐं ह्रीं श्रीं।**

उक्त मन्त्र का १ लाख रुद्राक्ष माला पर जप करने तथा दशांश हवन करने से भगवती त्रिपुर सुन्दरी साकार रूप में प्रकट होती है। इच्छित मनोकामना की पूर्ति करती हैं।

***एक अन्य मन्त्र*—ओं ऐं क्लीं ह्रौं श्रीं त्रिपुरसुन्दर्यै नमः।**

इस मन्त्र की भी साधना १ लाख मन्त्र जप द्वारा की जा सकती है।

यह देवी राजपक्ष को अपने वश में ला देती है तथा राजा, पदाधिकारी साधक के अनुकूल कार्य करता है।

८. उच्छिष्ट चाण्डालिनी सिद्धि

मन्त्र—१. उच्छिष्ट चाण्डालिनि सुमुखि देवि, महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः।
२. उच्छिष्ट चाण्डालिनी मातंगि सर्व वशंङ्करी नमः स्वाहा।

उक्त दोनों मन्त्रों में से किसी एक का १००८ बार जप तथा दशांश हवन करना चाहिये। इसे कभी भी किसी भी परिस्थिति में सिद्ध किया जा सकता है। इसके लिये कोई नियम आचार नहीं है।

देवी का ध्यान मन्त्र—

शवोपरि समासीनां रक्ताम्बर परिच्छदाम्।
रक्तालङ्कार संयुक्तां गुंजाहार विभूषिताम्।
षोडषाब्दाम् न युवतिं पीन्नोनत पयोधराम्।
कपाल कर्तृ का हस्तां परां ज्योतिः स्वरूपिणीम्।

देवी को उच्छिष्ट पदार्थ की बलि अर्पित करना चाहिये। जप के पश्चात् उच्छिष्ट पदार्थ द्वारा हवन करें। देवी को अग्नि स्वरूपा ध्यान कर, दही और श्वेत सरसों से युक्त चावल द्वारा हवन करें। एक हजार होम से राजा वश में होता है। मार्जार के मांस द्वारा होम से सभी शास्त्रों में पारंगत व्यक्ति होता है। मधु युक्त छाग मांस के सहस्र होम से साधक को कुल देवी की सिद्धि होती है।

विद्या की अभिलाषा वाले शर्करा युक्त खीर से हवन करें। घी, मधु, शर्करा युक्त बिल्वपत्र से एक मास तक १०८ बार

प्रतिदिन हवन करने से वन्ध्या नारी को भी चिरंजीवी पुत्र प्राप्त होता है। मधुयुक्त रक्तबदरी पुष्प के हवन से भाग्यहीन नारी सौभाग्यवती होती है। ऐसा हवन १००० बार करना चाहिये। रजस्वला के वस्त्र के टुकड़े-टुकड़े कर मधु और खीर से युक्त कर यदि लगातार एक माह तक १००० बार हवन किया जाए तो तीनों लोक वशीभूत होते हैं।

९. उच्छिष्ट गणेश सिद्धि

***मन्त्र*—ओं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा।**

१९००० जप से मन्त्र सिद्ध होता है। किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से अगले माह की चतुर्थी तिथि तक उक्त मन्त्र का जप प्रतिदिन १००० बार करना चाहिये। स्त्रीसंग नियमित रहते हुए जप करें। प्रतिदिन देवता को मधु में स्नान कराकर गुड़ पायस का नैवेद्य अर्पित करें। भोजन के बाद बिना आचमन किये जूठे मुँह ही जप करना चाहिये। रक्त, चन्दन की अंगुष्ठ बराबर प्रतिमा उच्छिष्ट गणेश की बना लें और उस मूर्ति में प्रतिष्ठा कर विप्र, बहिन, या गुरु के समीप १९००० मन्त्र जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। रक्त, चन्दन लगाकर ताम्बूल चर्बला करते हुए भी हवन किया जा सकता है तथा जप किया जा सकता है। मोदक खाते हुए भी जप किया जाता है। राजद्वार, वन भूमि, सभा, गोत्र समाज, विवाद, व्यवहार, संग्राम, शत्रु, संकट, नौका, कानन, द्यूत, कार्य, विपत्काल, ग्राम दाह, चोर भय और सिंह व्याघ्रादि भय हैं इस मन्त्र का स्मरण करने मात्र से विघ्न दूर होता है। १०८

बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपामार्ग की समिधा से हवन करने पर सौभाग्यवान होता है।

वानर की हड्डी से निर्मित कीलक को उच्चिष्ट गणेश के मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिसके घर में स्थापित किया जाए उसका उच्चाटन होता है। एक लाख बार हवन करने से मानव अष्टसिद्धियों का स्वामी हो जाता है तथा शून्य में गमन करने की शक्ति मिलती है। भोजपत्र पर मन्त्र लिखकर कण्ठ या मस्तक में धारण करें तो साधक के सौभाग्य की वृद्धि होती है तथा उसकी रक्षा होती है। इस कीलक को किसी दुकान में रखा जाए तो वहाँ क्रय-विक्रयादि व्यवसाय नहीं होता है।

शराबखाने में रखने पर वहाँ का मद्य विकृत हो जायेगा। वेश्यालय में रखने पर वेश्या को ग्राहक न मिलेगा। किसी अविवाहित कन्या के घर में कीलक रखें तो उसका विवाह न होगा। मनुष्य अस्थि को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके घर में रखा जाये उसकी शीघ्र मृत्यु हो जायेगी। कीलक को उठा कर फेंक देने से सब दोष शान्त हो जाता है। जिस व्यक्ति का नाम लेकर इस मन्त्र का १००० बार जप किया जाए वह व्यक्ति वशीभूत हो जाता है। विवाहार्थ व्यक्ति ५००० बार होम करें तो उत्तम रमणी प्राप्त करता है।

१०. धनदा देवी साधना

मन्त्र—धं श्रीं ह्रीं रति प्रिये स्वाहा।

एक लाख मन्त्र जप से सिद्धि होती है। 'धं' बीजमन्त्र का

पूजन करें। रत्नादि माला से जप करें। एक सप्ताह तक रात्रि में १००८ बार जप करने से पुनश्चरण सम्पन्न होता है। भोजन के बाद अथवा दिन में किये हुए पायसान्न की बलि प्रदानकर जो पवित्र या अपवित्र किसी अवस्था में धनदा मन्त्र का १०,००० बार जप करता है, उसकी दरिद्रता दूर होती है। एक सप्ताह तक १००८ बार जप का दशांश होम घृत, मधु, शर्करा से करें तो उसकी दरिद्रता दूर हो जाती है।

११. नित्या देवी सिद्धि

_मन्त्र_—ऐं क्लीं नित्यक्लिनो मदद्रवे स्वाहा।

इसका जप एक लाख बार करने से साधक को नित्या देवी प्रसन्न होकर शीघ्र कार्य करती है तथा मनोकामना की प्राप्ति होती है। निम्नांकित यन्त्र कागज या भोजपत्र पर बनाकर पूजा करनी चाहिये।
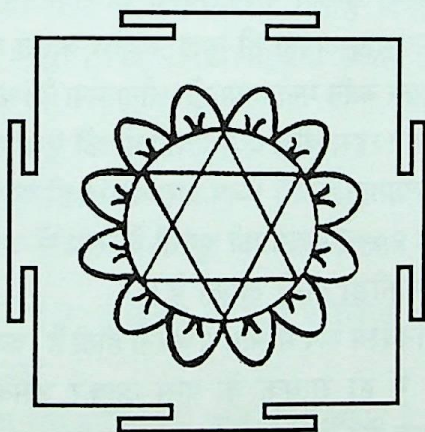
नित्या देवी सिद्धि यन्त्र

१२. कर्ण पिशाचिनी सिद्धि

यह सिद्धि वाममार्गी है यद्यपि यह देवी साधकों को धन, सम्पत्ति देती है परन्तु इसके साधक की गति अच्छी नहीं होती। अन्तिम क्षण इसका बड़ा दुःख में बीतता है।

वैसे इसकी साधना किसी भी माह की त्रयोदशी से प्रारम्भ की जाती है, तथा अमावस्या को समाप्त होती है। त्रयोदशी की रात्रि ११ बजे से सूर्योदय पूर्व तक नित्य ५१ माला जप करने का विधान है। ५४ मनके की माला पर जप किया जाता है। वह भी माला हड्डी की होनी चाहिये। एक ५४ मनके की हड्डी की माला अपनी गर्दन में पहने रहना होता है।

त्रयोदशी के दस दिन पूर्व से ही स्नान करना, मुँह धोना, कपड़ा बदलना छोड़ देना होता है। अपने घर के किसी एक कमरे में जिसमें कुछ भी सामान न हो, किया जा सकता है। इस बीच मूत्रपान तथा मलपान अपना ही कुछ न कुछ करना होता है।

खाना खाकर बर्तन मलना या मुँह धोना मना है। यानि अपवित्र रूप में रहना होगा। इस बीच देवी देवताओं की पूजा सन्ध्या आदि सभी कर्मों को त्यागना हेता है। जप प्रारम्भ होते ही कर्ण पिशाचिनी साधक के पास २०-२५ वर्ष की युवती के रूप में आकर साधक के अंग से कामक्रीड़ा करने लगती है।

बिल्कुल निर्वस्त्र रूप में साधना करनी होती है। कर्णपिशाचिनी भी नग्नावस्था में ही साधक के पास आकर उसके लिंग का चुम्बन, मल-मूत्र देह से लगाना साधक के साथ सम्भोग करना आदि काम करती है तथा रात्रि के अन्तिम प्रहर में गायब हो जाती

है। अपने चारों तरफ दीपक जलाकर साधक इसकी सिद्धि करता है। साधना की तीनों रात्रि में देवी स्त्री के रूप में आकर रहती है।

अमावस्या की रात्रि में साधक को उसका कार्य करते रहने का वचन देती है तथा साधक को अन्य स्त्रियाँ यहाँ तक कि अपनी पत्नी से भी सम्पर्क करने को मना कर जाती है। जब भी उसे काम क्रीड़ा की भूख होगी साधक के पास आ जाया करती है।

साधना पूरी होने पर देवी साधक को बीती हुई बातें कान में आकर कह देती है। जो एक चमत्कारी आकर्षण का कार्य होता है। लोग प्रभावित होकर साधक को मनमाना रुपया देते हैं। अतः यह साधक के पास धन का बाहुल्य करा देती है।

अमावस्या के बाद भी दस दिनों तक कोई क्रिया कर्म पूजा नहीं करनी चाहिये। मन्त्र इस प्रकार है।

ओं ह्रीं कर्णपिशाचिनी अमोघ सत्यवादिनी मम कर्णे अवतर अवतर सत्यं कथय कथय अतीत्र अनागत वर्तमान दर्शय दर्शय ऐं ह्रीं ह्रीं कमर्णपिशाचिनी स्वाहा।

इस देवी की सिद्धि से साधक की पत्नी जीवित नहीं रह पाती। परन्तु इसकी सिद्धि से समान-मर्यादा, धन-यश की प्राप्ति होती है। यह देवी साधक के कान में बीती हुई बातें तथा वर्तमान की बातें बतला देती है। अतः यह चमत्कार दिखाने वाली देवी है।

१३. हरिद्रा गणेश साधन

मन्त्र—ग्लं

यह मन्त्र सर्वकामना की पूर्ति करने वाला है। इसका एक लाख जप करके मन्त्र को सिद्ध किया जाता है।

ध्यान—

हरिद्रामं चतुर्बाहुं हारि द्रवसनं विभुम्।
पाशांकुशधरं देवं मोदकं दन्तमेव च॥

घृत, मधु, शर्करा और हरिद्राचूर्ण मिश्रित चावल से दशांश हवन किया जाता है।

इस मन्त्र को १००० जप प्रतिदिन करने से हरिद्रा गणेश सभी विघ्न-बाधाओं को दूर कर मनोकामना पूर्ति करते हैं।

१४. अन्नपूर्णा सिद्धि

भगवती अन्नपूर्णा की साधना करने से दरिद्रता दूर होती है तथा अन्न धन की प्राप्ति होती है।

ध्यान—

रक्तां विचित्रवसनां नवचन्द्रचूड़ा
मन्न प्रदाननिरतां स्तनमारनभ्याम्।
नृत्यन्तमिन्दु शकला भरणां विलोक्य
हृष्णं भजे भगवती भवदुःखहन्त्रीम्॥

मन्त्र—**ह्रीं नमो भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहा।**

इसका १६००० बार जप करना चाहिये। घृत युक्त अन्न से दशांश हवन करना चाहिये।

इस मन्त्र के आदि में ओंम लगाकर जप करने से भगवती अन्नदान, मुक्तिदान एवं विभवदान करती है। मायाबीज (ह्रीं) आदि में लगाने से यह मन्त्र सफल अभीष्ट प्रदान करता है।

(श्री) बीज आदि में लगाने से सुखवृद्धि होती है। वाग्बीज

(ऐं) लगाने से आदि में विवेक मिलता है। कामबीज (क्लीं) आदि में लगाने से सर्वकामना सिद्ध होती हैं। प्रणव और मायाबीज के योग से यह मन्त्र भोग तथा मोक्ष प्रदान करता है। माया और श्री बीज लगाने से वैभव मिलता है। श्री बीज और माया बीज के योग से सर्वसम्मत्ति का लाभ होता है।

१५. श्री दुर्गा सिद्धि

दुर्गा का मन्त्र—**ओं दुर्गे रक्षिणी ठः ठः।**

यह दशाक्षरी मन्त्र है। ५ लाख जप करें तथा घृत से दशांश हवन करें। मन्त्र का जप करते हुए युद्ध में प्रवेश करने पर शत्रुओं का हनन होता है। लवण ओर मधु से हवन करने से अभीष्ट व्यक्ति मोहित होता है। देवी की सिद्धि में कोई सन्देह नहीं है।

ध्यान—

सजलघनसमाभ भीम दष्ट्रं त्रिनेत्रं,
भुजगधरमघोर रक्तवस्त्रंगरागम्।
परशुडमरूंखगान्र्खटक बाणचायौ,
त्रिशिखनरकपाले विभ्रत भावयामि।

मन्त्र—**ह्रीं स्फुट स्फुट प्रस्फुट प्रस्फुटघोर घोरतर तनुरूप चट-चट प्रचंड प्रचंड कह कह बम बम बन्ध बन्ध घातयं घातय बम् फट्।**

इस मन्त्र का १ लाख जप करना चाहिये। दशांश घृत तिल से हवन करना चाहिये। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

घृत, अपामार्ग तिल सरसों और पायस से सहस्र आहुति देने से भूतों एवं कृत्या आदि के उपद्रवों का नाश होता है।

सिंह मन्त्र

***मन्त्र*—ओं वज्रनख दृष्टायुधाय सिंहाय हूँ फट् नमः।**

दुर्गे देवी के सिंह वाहन पर आधारित देवी का सिंह मन्त्र भी बड़ा सिद्ध एवं चमत्कारी है। इस मन्त्र का १ लाख जप करके दशांश हवन करना चाहिये। भगवती दुर्गा की मूर्ति की विधिवत् पूजा करके मन्त्र दस हजार जपे। इससे शत्रु का उच्चाटन तथा विनाश होता है। रोगी दीर्घायु प्राप्त करता है तथा धन की वृद्धि होती है। उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल एवं भस्म पीने तथा लगाने से सन्तान की प्राप्ति होती है।
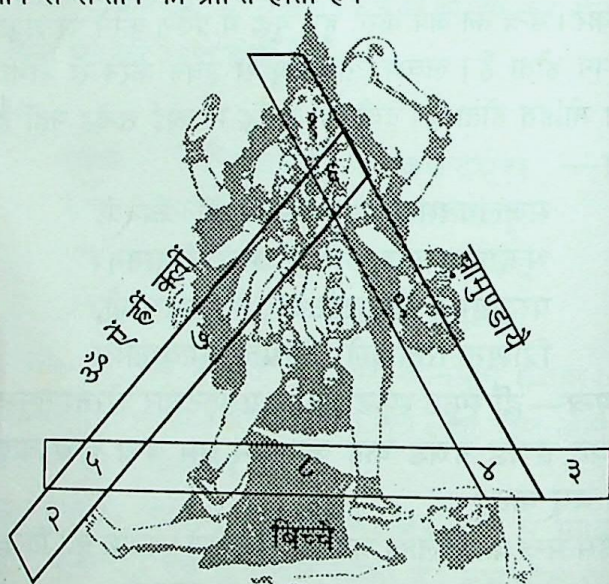
नवार्ण यन्त्र

नवार्ण मंत्र—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चेः

यक्षिणी-भूतिनी साधना

यक्षिणी साधना

यक्षिणी आठ प्रकार की हैं—

१. सुरसुन्दरी यक्षिणी
२. मनोहारिणी यक्षिणी
३. कनकावती यक्षिणी
४. कामेश्वरी यक्षिणी
५. रतिप्रिया यक्षिणी
६. पद्मिनी यक्षिणी
७. महानटी यक्षिणी
८. अनुरागिनी यक्षिणी

कुछ लोग इन यक्षिणियों की भी साधना करते हैं। पर ये भार्या के रूप में अधिक सिद्धि देती देखी गई हैं। इसकी साधना वाले साधक की पत्नी जीवित नहीं रह सकती। अतः बड़ा सोच समक्षकर इनकी साधना करनी चाहिये।

१. सुरसुन्दरी यक्षिणी मन्त्र—**'ओं ह्लीं आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा'।**

संकल्पपूर्वक किसी निर्मल स्थान में या मन्दिर में या एकान्त घर के कमरे में पूरे एक माह तक प्रतिदिन रात्रि में १००० जप किया जाता है। जप के समय गुग्गुल और धूप जलाना चाहिये। जप के अन्तिम दिन सुरसुन्दरी सुन्दर षोडषी युवती के रूप में प्रकट होती हैं। उस समय देवी को रक्त चंदन से अर्घ्य देना

चाहिये। प्रसन्न होकर देवी माता, भार्या, या बहन के रूप में साधक की इच्छा पूरी करती हैं।

२. रतिप्रिया यक्षिणी मन्त्र—**ओं ह्रीं आगच्छ रतिप्रिये स्वाहा। या ओं रति वल्लभे रतिप्रिये का मन्त्र बल्लभोः महादेवा महामाया काया कांचनम्।**

विधि—रक्तचन्दन की माला पर प्रतिदिन रात्रि के दस बजे चाँदनी रात में उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में शुक्रवार से जप आरम्भ करना चाहिये। प्रतिदिन १००० बार जप करें अंतिम दिन देवी दर्शन देती है। जिस रूप में इसे सिद्ध किया जाएगा, उसी रूप में रहती है। रतिप्रिया यक्षिणी सुन्दर औरतों को लाकर साधक को देती है तथा सभी सुख भोग प्रदान करती हैं। बदले में इसकी स्त्री को ले लेती है।

३. कनकावती यक्षिणी मन्त्र—**ओं ह्रीं कनक क्लीं यक्षिणी नमः। अथवा ओं हूँ कुरू ठः ठः स्वाहा। ओं क्लीं फट् स्वाहा।**

उक्त दोनों मन्त्रों में से किसी एक का प्रति रात्रि १ बजे से जप करना चाहिये। प्रतिदिन सवा लाख बार जप करना एक माह तक करें। अन्तिम दिन दशाँश हवन खीर से देना चाहिये। यक्षिणी प्रसन्न होकर जातक को कनक, स्वर्ण, धन, वस्त्र देकर सदा प्रदान करती हैं।

४. राज्यप्रदा यक्षिणी मन्त्र—**ओं ऐं ह्रीं नमः।**

तुलसी के पौधे के समीप एक माह तक १००० बार लाल चन्दन की माला पर जपने से साधक को खोया हुआ राज्य सम्पत्ति

तथा नौकरी मिलती है।

अति प्राचीन यक्षिणी साधना के उन्नीस मन्त्र

तत्रादौ प्रथमो मन्त्रः

ओं वटवासिनी यक्षकुल प्रसूतिनी बटयक्षिणी ऐह्येहि स्वाहा॥ १॥ विधानमाह। त्रिपथस्य वटाधस्थः रात्रौमंत्रं जपेन्नरः। लक्षत्रयंततः सिद्धामहादेवी च यक्षिणी॥ १॥ वस्त्रालंकारणंदिव्यं रससिद्धिरसायनम्। दिव्यमञ्जन संतुष्टा साधकाय प्रयच्छति॥ २॥

भाषार्थ—अब यक्षिणी विधान कहा जाता है। प्रथम मन्त्र। ओं बटवासिनी यक्षकुल प्रसूतिनी वट यक्षिणी ऐं एह्येहि स्वाहा॥ १॥ मन्त्र विधान यथा। साधक को उचित है कि तिराहे में स्थित बट वृक्ष के नीचे स्थित होकर रात्रि समय इस मन्त्र का तीनलक्ष जाप करे तो सिद्धि को प्राप्त हुई महादेवी यक्षिणी साधक को प्रसन्नता पूर्वक वस्त्र अलंकार, दिव्य रस तथा रसायन और दिव्य अञ्जन अर्थात् दिव्य दृष्टि प्रदान करती है॥ २॥

द्वितीयोमन्त्रः

ओं ह्रीं मदन मेखलेयं स्वाहा। विधान यथा। मधुवृक्ष तले मन्त्री चतुर्दशदिनावधिः ग्रजेपन्मेखला तुष्टाददात्य-ञ्जनमुत्तमम्॥ ३॥

भाषार्थ—अथ दूसरा मन्त्र कहा जाता है। ओं ह्रीं मदन स्वाहा॥ २॥ विधान यथा। साधक को योग्य है कि के वृक्ष के

नीचे स्थित होकर १४ दिन तक इस मन्त्र का प्रतिदिन एक सहस्र जाप करे, तो मेखला नाम यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को उत्तमअंजन अर्थात् दिव्य दृष्टि प्रदान करेगी॥ ३॥

तृतीयो मन्त्रः

ओं विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लें स्वाहा॥ ३॥ विधान यथा। मामत्रयं जपेद्देविगृहावस्थस्तुसाधकः। ततः सिद्धिभवेद्दवि विकला वांछितप्रदा ॥ ४॥

भाषार्थ—अब विकला नाम यक्षिणी का साधन कहा जाता है। मन्त्र यथा। ओं विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लें स्वाहा॥ ३॥ विधान यथा। हे देवी! साधक को योग्य है कि स्वगृह में स्थित होकर तीन मास तक उक्त मन्त्र का प्रतिदिन एक सहस्र जाप करे तो विकला नाम यक्षिणी के प्रसाद से सिद्धि प्राप्त होवे और विकला वांछित फल प्रदान करे॥ ४॥

चतुर्थोमन्त्रः

लक्ष्मी साधनम्। मन्त्रो यथा। ओं ऐं लक्ष्मीं श्रीकमल धारि गोहंम स्वाहा॥ ४॥ विधान यथा। स्वगृहे सस्थितोरक्तः करवीर प्रसूनकैः। लक्षमावर्त्तयेन्मन्त्री मन्त्रंकृत्वा दशांशतः॥५॥ होमकृते भवेत्सिद्धिलक्ष्मीनाम्नी च यक्षिणी। तुष्टारसायन दिव्यं धन धान्यञ्चयच्छति॥ ६॥

भाषार्थ—इस चतुर्थ मन्त्र में लक्ष्मी नाम यक्षिणी का साधन मन्त्र कहा जाता है मन्त्र यथा। ओं ऐं लक्ष्मी श्री क़मलधरि गोहंस स्वाहा। विधान यथा। साधक स्वगृह में स्थित होकर उक्त मन्त्र

का एक लक्ष जप कर के रक्त कनेर के पुष्पों से दशांश हवन करे तो लक्ष्मी नाम यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को दिव्य रसायन तथा धनधान्य आदि पदार्थों के प्रदान करने में समर्थ होगी।

पंचमोमन्त्रः

ओं मानिनिएह्येहि सुन्दरि हंसैः मह ममसंगम स्वाहा॥ ५॥

विधान यथा। मप दलक्षं देवेशिस्वालयेप्रजपेन्मनुम्। हयारिकुसुमैः रक्तैः होमंमधुसमन्वितैः॥ १॥ मानिनि जायते सिद्धा दिव्यखड्गं प्रयच्छति। यत्प्रभावेन लोकेऽस्मिन खण्डं राज्य साप्नुयात्॥ २॥

भाषार्थ—अब मानिनी नाम यक्षिणी के साधन का मन्त्र कहा जाता है। मन्त्र यथा। ओं मानिनी यह्येहिसुन्दरिहंसैः सह मम संगमं स्वाहा। विधान यथा—हे देवेशि। साधक स्वगृह में स्थित होकर उक्त मन्त्र का सवालक्ष जाप करके अन्त में मधुयुक्त रक्तकनेर के पुष्पों से दशांश हवन करे तो मानिनी नाम यक्षिणी सिद्धि को प्राप्त होकर प्रसन्नता पूर्वक साधक को एक खड्ग प्रदान करती है कि जिस खड्ग के प्रताप से अखण्ड राज्य प्राप्त होय॥

षष्ठोमन्त्रः

मन्त्रो यथा। ओं द्रांशतपत्र के ह्रां ह्रीं श्रीं स्वाहा। विधानमाह शतपत्रबनस्थो वै लक्षसंख्यं जपेन्मनुम् होमेकृतेतुदेवेशि प्राप्नुयाद्रनिधितथा॥ १॥

भाषार्थ—पृथ्वीगत धनप्राप्ति मन्त्र कहा जाता है। मन्त्र यथा।

ओं द्रां शतपत्र के ह्रां ह्रीं श्रीं स्वाहा। इसका विधान कमलवन में स्थित होकर एकलक्ष मन्त्र का जापकर उक्त विधान पूर्वक दशांश हवन करे तो भूमिगत धन प्राप्त होय।

सप्तमोमन्त्रः

ओं व्ले सुलोचनेसिद्धि देहि स्वाहा। विधान यथा। नदीतीरोस्थितोलक्ष त्रयंमंत्रीजपेत्मनुम्। घृतहोमंदशांशेन कृत्वा देवी प्रसीदति॥ १ ॥ ददातिपादुका युग्मं शीघ्रमायातियाति च।

भाषार्थ—अब सुलोचना नाम यक्षिणी का मन्त्र कहा जाता है मन्त्र यथा। ओं व्ले सुलोचने सिद्धि देहि स्वाहा। विधान यथा साधक को योग्य है कि नदी के किनारे पर स्थित होकर एकलक्ष इस उक्त मन्त्र को जपकर घृत से दशाँश हवन करे तो सुलोचना नाम यक्षिणी प्रसन्न होकर पादुका युगल को वितरण करे कि जिसके भाव से दूरदेश से आगमनादि करने में समर्थ हो।

अष्टमोमन्त्रः

मन्त्र यथा। ओं शेकायल्लवाकार करतलेशोभने शीलः स्वाहा। विधान यथा। रक्तमाल्याम्बरधरोमन्त्री चतुर्दशदिनंजपेत्। ततः सिद्धाभवेद्देवि शोभना शुभदायिनि॥ १ ॥

भाषार्थ—अब शोभना देवी का मन्त्र कहा जाता है मन्त्र यथा। ओं शोकायल्लवाकार करतलेशोभनेशीलः स्वाहा। विधान यथा। साधक रक्त वस्त्र तथा रक्त माला को धारण कर १४ दिवस तक प्रतिदिन एक सहस्र उक्त मन्त्र का जाप करे तो शुभ पदार्थों

की देने वाली शोभना नाम यक्षिणी प्रसन्न होती है।

नवमोमन्त्रः

ओं कपालिनिद्रांद्रीं क्लीं व्लं हं सहः सकल ह्रीं फट् स्वाहा। विधान यथा। मह व्रत धरोमन्त्री कपालो दरभोजनः लक्ष दूयजपस्यान्ते कप ल लभते मनुः आकाश गमनहर श्रवणं रूपदर्शनम्॥

भाषार्थ—मन्त्र यथा। ओं क्पालिनी द्रांद्रीं क्लीं व्लं हंसः सकल ह्रीं फट् स्वाहा। विधि यथा। साधक कपाल में भोजन रख कर महाव्रत को धारण कर रक्त मन्त्र का दो लक्ष जाप करे। पुनः जप के अन्त में साधक एक कपाल को प्राप्त होगा कि जिससे वह आकाश गमन को हरण करने और देवांगनाओं के रूप दर्शन करने में समर्थ होगा।

दशमोमन्त्रः

ओं वस्येलनी बिलासिनी मे प्रियामे भवभव स्वाहा। विधान यथा। मरस्तीरे जपेदर्द्धलक्ष मत्रन्तु साधकः घृताक्त गुग्गुलेर्होम देवी सौभाग्य दायिनी॥ १॥

भाषार्थ—अब दशवां मन्त्र कहा जाता है मन्त्र यथा। ओं बस्येलनी विलासनी प्रियामे भव भव स्वाहा। विधान यथा। मनोहर सरोवर के तट पर स्थित होकर पचास हजार उक्त मन्त्र का जाप कर अन्त में घृत तथा गुग्गुलू से दशांश हवन करे तो सौभाग्य को देने वाली यक्षिणी प्रसन्न होय।

एकादशोमंत्रः

तत्रादौ मन्त्रः। ओं ह्रां ओं ह्रीं नटी महा नटी स्वाहा रूपवती स्वाहा। विधान यथा। नृन्यासं भूतले कृत्वा चन्दनेन सुमण्डलं कृत्वादेवीं समभ्यर्च्यधूपं दत्वासहस्रके। मन्त्र मावर्तयेन्मास नक्तभोजीनरस्तथा। रात्रौपूजां शुभांकृत्वा जपेन्मन्त्रं निशार्द्धके॥ २॥ नटी देवी समागत्य साधकायस्व यन्तथा ददाति दिव्यान्भोगां श्चशुीसत्यन्नसशयः॥ ३॥

भाषार्थ—नटी देवी के साधन का मन्त्र यथा। ओं ह्रां ओं ह्रीं नटी महानटी स्वाहा रूपवती स्वाहा। विधान यथा। साधक को उचित है कि भूमि में एक पुरुषाकार बनाकर चदन के मण्डल से युक्तकरदेय पुनः कृत्वा देवी को सुगन्ध पुष्पादिकों से पूजनकर एक मास तक प्रतिदिन एक सहस्र मन्त्र का जाप करे; परन्तु भोजन एक समय ही करना योग्य है, शुभ पूजा अर्द्ध रात्रि के समय करनी योग्य है। तत्पश्चात् नटी देवी आकर स्वयं साधक को दिव्य भोग देगी। हेशुभे! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ इस विषय में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है।

द्वादशोमन्त्रः

ओं ह्रीं श्रीं गच्छ आगच्छ कामेश्वरी स्वाहा। विधान यथा। एकान्ते च शुचौ देशे त्रिसन्ध्यं त्रिसहस्रकं मासमेकं जपेन्मन्त्रं होमंत्रस्य समाचरेत्॥ १॥ पुष्पधूपैस्तु नैवेद्यैः प्रदीपैर्घृतपूरितैः रात्रा वभ्यर्च्यतां मन्त्री जपेन्मन्त्र प्रसन्नधीः॥ २॥ अर्द्ध रात्रौ गतेदेवी मग गत्य प्रयच्छति। रसं रसायनं दिव्यं

वस्त्रालंकारणानि च॥ ३॥

भाषार्थ—कामेश्वरी यक्षिणी का सिद्धि विधान कहा जाता है। मन्त्र यथा। ओं ह्रीं श्री गच्छ आगच्छ कामेश्वरी स्वाहा। विधान यथा। एकान्त शुभ स्थान में स्थित होकर एक मास तक त्रिसंध्या में त्रिसहस्र मन्त्र का जाप करके अन्त में दशांश हवन करे। परन्तु पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, घृत पूरित दीप इत्यादिकों से प्रति रात्रि समय में देवी का प्रसन्नता पूर्वक पूजन करता रहे। हेदेवि। अर्द्धरात्रि के समय कामेश्वरी देवी स्वयं आनकर साधक को दिव्यरस, तथा रसायन, वस्त्र, आदि प्रदान करेगी।

त्रयोदशोमंत्रः

मन्त्र यथा। ओं वज्रास्याव्यले स्वर्णरेखा स्वाहा। विधान यथा। एक लिंग समभ्यर्च्य षडंगे नाभि भावितम्। सर्वसाध्यं समारभ्य मन्त्रवैतद्दिन जपेत्॥ १॥ स्नात्वोमन्त्र सहस्रञ्च तदन्तै निशि भोजनम्। जपेन्मन्त्रं पुनर्भन्त्रो निशार्द्धेमाययच्छति॥ २॥ वस्त्रालङ्कार भोग्यानिदेविसत्यन्नसंशय।

भाषार्थ—त्रयोदशमंत्र कहा जाता है। मन्त्र यथा। ओं वज्र रस्याव्ले स्वर्णरेखा स्वाहा। विधान यथा! षडंग से अभिमन्त्रित कर एक लिंग को कल्पना कर उक्तविधान पूर्वक पूजन कर स्वकार्य को प्रारम्भ कर मन्त्र कर जाप करें पुनः स्नान कर रात्रि के समय प्रतिदिवस एक मास तक उक्त मन्त्र का जाप कर भोजन करे तत्पश्चात् फिर अर्द्धरात्रि के समय मन्त्र का जाप करे तो यक्षिणी देवी प्रसन्न होकर साधक को स्वयं वस्त्राभूषण आदि

पदार्थ प्रदान करेगी।

चतुर्दशोमंत्रः

ओं आगच्छ आगच्छ सुर सुन्दरि स्वाहा। विधान यथा। सहस्रमेकं देवेशि माममेकं यथा निशायां प्रजपेन्मंत्रमेकं भोजीनरोत्तमः ॥ १ ॥ गुग्गुल घृतधूपैश्च पुष्प चन्दन मोदकैः। देवीं सम्पूजयहामञ्चकुर्याद्देवीप्रसीदति ॥ २ ॥ पुनरागत्यमायक्षी ददाति मन्त्रिणेवरम्। सोख्यलभस्वहेवत्स वाछितं भुविदुर्लभम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—सुरसुन्दरी के साधन का विधान। मन्त्र यथा— ओं आगच्छ आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा। विधान यथा। हे देवी। एक भोजी साधक एक मास तक प्रतिरात्रि में एक सहस्र मन्त्र का जाप कर, धूप, दीप, नैवेद्य, गंध, पुष्पादिकों से देवी का पूजनकर मोदकों से दशांश हवन करे तो सुरसुन्दरी देवी प्रसन्न होकर स्वयं आगमन कर साधक को यथोचित वर प्रदानकर मधुर वाणी से वर्षा करती हुई बोलेगी कि हे वत्स मुनि दुर्लभ वर को प्राप्त हो।

पंचदशोमन्त्रः

ओं ह्रीं आगच्छ आगच्छ कनकवती स्वाहा विधानयथा। दिन दिन हस्त्रैक यावत्मत्पदिनंभवेत्। अथागत्यददात्यस्मै माध कायाञ्जन शुभम् ॥ १ ॥ यस्यप्रभावात्पश्येच्चसाधकोऽमर-वृन्दकम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—कनकवती का विधान मन्त्र यथा। ओं ह्रीं आगच्छ आगच्छ कनकवती स्वाहा विधान यथा। साधक को योग्य है सात

दिन तक प्रतिदिन एक २ हजार मन्त्र का जाप करे तो कनकवती देवी प्रसन्नता पूर्वक स्वयं आनकर साधक को उत्तमांजन प्रदान करेंगी कि जिसके प्रताप से साधक अमरगण के अवलोकन करने में समर्थ होगा।

षोडशो मंत्रः

मन्त्र यथा। ओं रतिप्रिये स्वाहा। विधान यथा। पञ्चत्रिशद्दिन यावत् देवींसपूजयेन्नरः। दिने दिनप्रकर्तव्यं सहस्रन्तुजपप्रिये॥ १॥ गन्धपुष्पो चारैस्तु शर्करामधुमिश्रितैः। तद्दशांशेनहोमञ्च कर्यंतु घृततण्डुलः॥ २॥ अर्द्धरात्रौ समागत्य ददातिसाधकेऽप्सितम्। तुष्टास्मिसौम्यभद्रते सत्यं सत्यन्नसशयः॥ ३॥

भाषार्थ—मन्त्रयथा ओं रति प्रिये स्वाहा। विधानयथा साधक को योग्य है कि स्वगृह में स्थित होकर ३५ दिन तक प्रति दिवस में एक सहस्र मन्त्र जापकर गन्ध पुष्पादि उपचारों से देवी जी का पूजनकर अन्त में शर्करा, सहित घृत तण्डुल इन से देवी जी प्रीति के अर्थ दशांश हवन करे तो अर्द्ध रात्रि के समय देवी जी स्वयं आकर वर प्रदान पूर्वक कहेंगी कि हे भद्र मैं तुझ से प्रसन्न हूँ किसी प्रकार का सन्देह नहीं इसको सत्य समझना।

सप्तदशोमंत्रः

मन्त्रयथा। ओं वीणीवीणीपिशाचिनीस्वाहा। विधानयथा। गन्धपुष्पोपचारैस्तु देवींसम्पूज्ययत्नतः चत्वारिंशद्दिनयावत् प्रतिरात्रसहस्रकम्॥ १॥ मंत्र मुच्चार्यदेवेशि बलिपूर्वजपेदिदम्।

शर्करामधुमिश्रेण घृतेनगुरूणातथ॥ २॥ होमंकुर्याद्दशांशेन यक्षोसायातिसन्मुखे वरलभस्वभद्रंते सिद्धिर्जाति-ऽप्सितातव॥ ३॥

भाषार्थ—मन्त्रयथा। ओं वीणी वीणी पिशाचिनी स्वाहा। विधानयथा। गन्ध पुष्प आदि उपचारों से यत्नपूर्वक देवी जी का पूजन कर ४० दिवस तक प्रतिदिवस एक एक सहस्र जाप करे और बलिदान भी मंत्रोच्चारण पूर्वक करता रहे। तत्पश्चात् शर्करा, मधु, घृत, अगर, इन सब वस्तुओं को एकत्रित कर दशांश से हवन करे तो वह यक्षी सन्मुख आकर कहेंगी कि तेरे भद्रहो वरको ग्रहण कर क्योंकि तेरे मन्त्र की सिद्धि हो गई।

अष्टादशोमंत्रः

कर्ण पिशाचिनी मन्त्रः।

तत्र मंत्रः। ओं वः वः कम्वली के गन्द पिण्ड पिशाचिके स्वाहा। विधान यथा। एकविशद्दिनयावदुदयास्त मनुंजपेत्। त्रिशत्प्रहर मात्रेण तुष्टा सिद्धिप्रयच्छति॥ १॥ सिद्धिः। यत्किञ्चित्प्रच्छयते देवि साधकेन प्रयोजनम्। समागत्य प्रवक्तीति सर्व वै जगदिस्थितम्॥ २॥ ततः सः माधकः सर्व ब्रूते लोकस्यहेतवे। जायन्ते चात्र लोकस्थाः मंगलोत्कण्ठ मण्डिताः॥ ३॥

भाषार्थ—अब कर्ण पिशाचिनी का मन्त्र कहा जाता है। तत्र मंत्रः। ओं वः वः कम्बली के गन्दपिण्ड पिशाचिके स्वाहा। विधान यथा २१ दिन तक नित्यप्रति सूर्य के उदयास्त समय उक्त मन्त्र का

एक सहस्र जाप करे। तो यक्षिणी पिशाची तीन प्रहर मात्र में ही साधक को सिद्धि प्रदान कर देती है। सिद्धि। हे देवि! साधक जिस किसी प्रयोजन को जानने की इच्छा करता है तत्क्षण में ही कर्ण पिशाचिनी आनकर सम्पूर्ण सांसारिक वृत्तान्त को साधक के कर्ण गोचर कर देती है। ततः (तिसकारण) वह साधक ज्ञात वृतांत को लोक हित को संसार में प्रकाश करता है। अतः [इस कारण] लोक में रहने वाले मनुष्य प्रतिक्षण [हरसमय] मंगल कार्यों में उत्कण्ठित रहते हैं।

एकोनविंशो मंत्रः

ओं ह्रीं रक्त चामुण्डे तुरू तुरू अमुकं मेवशमानय स्वाहा। विधान यथा। होमयेत्कटुतैलेनरक्तचदन राजिकैः। सहस्त्रा-हुतिमात्रण राजानंवशमानयेत्॥ १॥

भाषार्थ—मन्त्रयथा। ओं ह्रीं रक्त चामुण्डे तुरू तुरू अमुक मे वशमानय स्वाहा। विधान यथा। कटु तैल, लाल चन्दन, राई इन सब वस्तुओं को एकत्रित कर एक सहस्र आहुति मात्र ही प्रदान करे। तो राजा वश्य भाव को प्राप्त होय।

किन्नरी साधना मन्त्र

१. ओं सुरतप्रिये स्वाहा—इसका जप प्रति रात्रि ८००० बार एकान्त कमरे में करना चाहिये। गुग्गुल जप करते समय जलाना चाहिये तथा अपने पास सदा इत्र रखना चाहिये। देवी प्रसन्न होकर पत्नी के रूप में साधक को आकर स्वर्णमुद्रा प्रदान करती है। परन्तु साधक की पत्नी को जीवित नहीं छोड़ती है।

२. ओं विशाल नेत्रे स्वाहा—इसका जप दस हजार बार करने से देवी सिद्ध हो जाती है। यह यक्षिणी साधकों को भौतिक सुख प्रदान करती है।

३. ओं सुभगे स्वाहा—इसका जप भी दस हजार बार करना चाहिये। सौभाग्य प्रदायक यह देवी साधक को प्रसन्न होकर धन, अन्न, प्रदान करती है।

योगिनी साधना

यह साधना भी बड़ी रहस्यपूर्ण और गोपनीय है। सुर-सुन्दरी, मनोहरा, कामेश्वरी, कनकावती, रतिसुन्दरी, पद्मिनी, नटिनी, अनुरागिनी आदि अनेक योगिनियाँ हैं। इसकी साधना करने पर भी ये माता, बहन या भार्या के रूप में सिद्ध होकर साधक की इच्छा पूरी करती है। माता के रूप में साधना करने पर देवी साधक को अनेक प्रकार का मनोहर द्रव्य व सुख सुविधा देती है। आजीवन पुत्र की तरह साधक को पालती हैं। बहन के रूप में विभन्न प्रकार का वस्त्र और द्रव्य प्रदान करती हैं तथा दिव्य कन्या देती है। भाई की तरह व्यवहार करती हैं। तथा भार्या के रूप में हर प्रकार के सुखों को प्रदान करती हैं। परन्तु अपनी भार्या सहित अन्य औरतों की तरफ आसक्ति नहीं रखनी पड़ेगी अगर यह नहीं होगा तो देवी साधक का संहार कर देती है।

१. ओं हं आगच्छ पद्मिनी स्वाहा—एक मास तक प्रतिदिन १००० बार जप, लाल चन्दन या रूद्राक्ष की माला पर रात्रि में करें। जप पूर्णिमा को समाप्त करें।

२. ओं ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा—प्रति रात्रि एक माह तक १,००० बार जप करें। पूर्णिमा को जप समाप्त करें। दशांश हवन करें। देवी प्रकट होती है पूर्णिमा को उन्हें फूल और चन्दन से अर्घ्य दें। देवी प्रसन्न होकर साधक की माता, बहन या भार्या के रूप में साधक का कार्य सिद्ध करती है।

३. ओं ह्रीं आगच्छ मनोहरे स्वाहा—इसका भी जप प्रति रात्रि १,००० बार कुंकुम की माला पर अर्धरात्रि में करें। पूर्णिमा को जप समाप्त करें। अन्तिम दिन देवी दर्शन देती है। साधक को उस समय देवी को पुष्प, इत्र, चन्दन एवं लाल फूल से अर्घ्य देना चाहिये। देवी माता, बहन या भार्या के रूप में होकर कार्य करती है। इस योगिनी की सिद्धि हो जाने पर साधक को जहाँ भी चाहं भ्रमण करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है।

भूतिनी साधना

यह भी छोटी-छोटी साधनाओं के अन्तर्गत आता है। मैं बहुत पहले कह चुका हूँ कि साहसी, निर्भय, स्वस्थ व्यक्ति को ही साधना में रत होना चाहिये। अन्यथा भयभीत साधक को साधना कहीं का नहीं रहने देती। वह पागल सा इधर-उधर घूमता रहता है। अतः साधना उसी को करना श्रेयस्कर होगी जो निर्भय रहने वाले हों। वैसे साधना में, क्रिया में वास्तव में भय होता नहीं, अपितु भय दिखाई पड़ता है और लगता है कि वह सच्चा है। परन्तु वह बिल्कुल झूठा होता है। साधक की इच्छाशक्ति एवं संकल्पशक्ति की परीक्षा का वह एक तरीका है। भूतिनी का आठ

प्रकार का रूप होता है—१. कुंडलधारिणी, २. सिन्दूरिणी, ३. हारिणी, ४. नटी, ५. महानटी, ६. चेटिका, ७. कामेश्वरी, ८. कुमारिका। साधक की इच्छा के अनुसार माता, बहन या भार्या के रूप में सिद्ध होकर इच्छा पूर्ति करती हैं।

भूतिनी-साधना मन्त्र—ओं हों क्रूं क्रूं कटु कटु ओं अमुकं (भूतिनी का नाम **क्रूं क्रूं ओं अः**)।

लगातार तीन रात्रि तक धूप और गुग्गुल देकर जप करना पड़ता है। आधी रात में भूतिनी आती है। उस समय उसे चन्दन और पानी से अर्घ्य देना चाहिये। तब ये माता के रूप में साधक को आठ सौ कपड़े, आभूषण और नाना प्रकार की खाद्य सामग्रियाँ देती है। बहन के रूप में सुन्दर कामिनी लाकर देती है। भार्या के रूप में प्रतिदिन हजार स्वर्ण मुद्रायें देती हैं पर उसे खर्च करना पड़ता है और भूतिनी पत्नी की भांति साधक के पास आजीवन रहती है। पत्नी अपनी हो तो छोड़ देनी होती है। अगर इस शर्त का पालन साधक नहीं करता है तो वह उसका सर्वनाश कर देती है। इसकी साधना घर में नहीं की जाती है। कुंडलवती भूतिनी की की साधना रात को श्मशान जाकर आठ हजार बार जप करके की जाती है। इसे रक्त से अर्घ्य देना होता है। सिन्दूरिणी भूतिनी की साधना शून्य देवालय में आधी रात को बैठकर आठ हजार बार मन्त्र का जप करके की जाती है। हारिणी भूतिनी की साधना किसी शिव मन्दिर में शिवलिंग के पास बैठकर रात्रि में ८,००० बार मन्त्र जप किया जाता है। गृहस्थ साधक को ऐसी साधनाएँ उचित नहीं है।

विभिन्न प्रभावशाली मन्त्र

भूत निवारण मन्त्र

_मन्त्र_—ओं नमः काली कपाली दहि दहि स्वाहा।

तेल को १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके रोगी के शरीर में लगावे। अगर भूत लगा होगा तो वह चिल्लाता हुआ भागेगा। रविवार या मंगलवार को यह कार्य करें।

दक्षिणा काली मन्त्र

_मन्त्र—क्रीं_ क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

यह २२ अक्षर का मन्त्र है।

दक्षिणा काली ध्यान मन्त्र—

करालवदनं छटां मुक्तकेशीं चतुर्भुजां,
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमाला विभूषितां।
सद्यः छिन्न शिरः खण्ड वामोधोर्ध्व कराम्बुजां,
अभयं वरदं चैव दक्षिणाधोर्ध्व पाणिकाम्।
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरां,
कण्ठावसक्त मुण्डाली गलद् रूधिर चर्चिताम॥

उक्त मन्त्र का जप कृष्ण पक्ष की अमावस्या की रात्रि से

प्रतिदिन समान मात्रा में जप करके अगले माह की अमावस्या की रात्रि को एक लक्ष पूरा करें। दशांश तिल से हवन करना चाहिये। इस बीज ब्रह्मचर्य से रहकर सभी नियमों का पालन करते हुए रहना चाहिये। साधना अवधि में दूसरे का दिया अन्न नहीं खाना खाना चाहिये तथा असत्य वाचन नहीं करना चाहिये। ताम्बूल चर्बल करते हुए भी जप किया जा सकता है। भगवती काली साधक को इस बीच साधना से हटाने के लिये बहुत भय दिखाती हैं। अगर साधक भयभीत नहीं हुआ तो दिव्य स्त्री के रूप में साक्षात् प्रकट होकर काली सिद्ध हो जाती है। तब साधक अपनी अंगुली के रक्त का काली को अर्घ्य देता है। काली प्रसन्न होकर उसे उसके साथ रहने का आशीर्वाद देती है तथा उसके हरेक प्रश्न का उत्तर देवी देती हैं। शत्रु मारण एवं उच्चाटन के लिये उग्र काली एक शाश्वत अस्त्र है। पर इसका दुरूपयोग नहीं करना चाहिये।

कामाक्षा देवी का मन्त्र

***मन्त्र*—क्षां अं अं वषट् ठः ठः।**

१ लाख जप से सिद्धि मिलती है।

होनहार को जानने का मन्त्र

***मन्त्र*—ओं नमो मणिभद्राय चेटकाय सर्वार्थसिद्धिकरण मम स्वप्ने दर्शनाय कुरू कुरू स्वाहा।**

लाल कनेर का फूल लेकर १०८ बार मन्त्र पढ़कर सिरहाने

रखकर सो जावें। ३ या ६ दिन में होनहार की बात स्वप्न में ज्ञात होती है। इच्छित बात जानने के लिये ऐसा किया जाता है।

विपत्ति निस्तारण तन्त्र

अगहन माह की पूर्णिमा को चिरचिटा की जड़ को उखाड़कर अपनी दाहिनी भुजा में धारण करने से सभी विपत्तियों से छुटकारा मिलता है।

देवांगना प्राप्ति का मन्त्र

***मन्त्र*—ओं ह्लीं नमः।**

विधि—लाल वस्त्र पहनकर कुंकुम की माला से कुंकुम की रंगीन माला धारण करके एक सप्ताह प्रतिदिन ५ हजार बार मन्त्र जप करें। अभिलाषित स्त्री यहाँ तक कि देवांगनाओं की भी प्राप्ति होती है।

रात्रि में देवी से बात करने का मन्त्र

***मन्त्र*—ओं ह्लीं मं सः भोगवती कर्ण पिशाचनी प्रचण्ड वेगनीं स्वाहा।**

दस हजार की संख्या में जप कर लेना चाहिये। प्रयोग के समय मिट्टी गोबर से भूमि की शुद्धि करके कुश बिछा करके शिवजी का विधिवत् पूजन करे और नैवेद्य चढ़ाकर हाथ में कमल का सूत्र बाँधे। फिर रात्रि में मन्त्र का जप करे देवी रात्रि में साधक के पास आती हैं और साधक से बात करती हैं।

शत्रुओं में परस्पर विरोध तथा चित्त भ्रम करने का मन्त्र

मन्त्र—**ओं नमोटकि प्रमोट गौरी अमुकस्या अमुकस्य अरूर कुरू-कुरू स्वाहा।**

१० हजार बार जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन में अमुकस्या अमुकस्या के स्थान पर दो शत्रुओं का नाम रख लें। अब अकवन के फूल को हाथ में लेकर १०८ बार मन्त्र जप करने से शत्रुओं में परस्पर विरोध तथा चित्त भ्रम होता है।

शत्रु बुद्धिनाशक मन्त्र

मन्त्र—**ओं नमो भगवते विश्वामित्राय नमः सर्व मुखीभ्यां विश्वामित्रा क्षामति आगच्छ स्वाहा।**

यह मन्त्र १०,००८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है। जिस शत्रु का नाम लेकर १०८ बार मन्त्रोच्चारण करते हुए तर्पण किया जायेगा उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

सर्व कार्य साधन मन्त्र

मन्त्र—**ओं नमः सर्वार्थ साधनो स्वाहा।**

यह मन्त्र १० हजार बार जपने से सिद्ध हो जाता है। किसी भी नया कार्य आरम्भ करने के पूर्व इस मन्त्र का १०८ बार जप कर लेना चाहिये।

आर्द्रपटी साधन

यह शत्रु करण के लिये श्रेष्ठ है।

विनियोग—**ओं अस्य श्री आर्द्रपटी महाविद्या मन्त्रस्य दुर्वासा ऋषिः गायत्री छन्दः हुं बीजं स्वाहा शक्तिः मम् अमुक शत्रु निग्रहार्थ जपे विनियोगः।**

उक्त मन्त्र का हाथ में जल लेकर पढ़ें और पृथ्वी पर छोड़ दे।

मन्त्र—**ओं नमो भगवती आर्द्रपटेश्वरी हरितनी लपटे कालि आर्द्र जिह्वे चाण्डालिनी रूद्राणी कपालिनी ज्वालामुखी सप्तजिह्वे सहस्त्र नयने एहि एहि अमुकं ते पथं ददामि अमुकस्य जीवं निकृन्तय एहि जीविता पहारिणी हुं फट् भूर्भुवः स्वः फट् रूधिरार्द्र व शाखादिनी मम् शत्रुन्`` छेदय छेदय शोणितं पिब पिब हुं फट् स्वाहा।**

एक मास तक इस मन्त्र का जप करने से शत्रु की मृत्यु हो जपती है। मम् शत्रुन् शब्द के बाद शत्रु का नाम कहना चाहिये। अकारण किसी पर प्रयोग नहीं करना चाहिये। अपने शरीर पर अगर मारण की स्थिति आवे तब उस समय शत्रु पर प्रयोग करें।

अघोर गौरी मन्त्र

यह विवाहकारक मुसलमानी मन्त्र है।

मन्त्र—

मखनो हाथी जर्द अम्बारी
उस पर बैठे कमाल खाँ की सवारी
कमाल खाँ कमाल खाँ मुगल पठान
बैठे चबूतरे पढ़ें कुरान

हजार काम दुनिया का करे
एक काम मेरा करे, ना करे तो
तीन लाख तैंतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई।

इसे विवाह मन्त्र भी कहा जाता है। जिस स्त्री की शादी नहीं हो पा रही हो उसे यह प्रयोग स्वयं करना चाहिये। लगातार ११ दिन तक ११५ माला या ११ माला पश्चिम तरफ मुख करके लाल सूती आसन पर बैठकर एकान्त स्थान से गुग्गुल या अगरबत्ती जलाकर स्त्री को स्वयं जप करना चाहिये। इस जप के ११ दिन के अन्दर ही उसकी शादी निश्चित हो जाएगी।

इसका प्रयोग मैंने एक बिहार प्रान्त के रांची जिले की स्त्री से करवाया था। उसकी अवस्था ३० वर्ष की हो गई थी। बहुत सुन्दर थी फिर भी शादी उसकी हट जाती थी। इस प्रयोग को करने पर उसकी शादी शीघ्र हो गयी। अतः यह सिद्ध मन्त्र है। 'कन्या की शादी शीघ्र कैसे करें' इस नाम से मेरी एक अन्य पुस्तक भी छपी है। मंगवाकर लाभ उठायें।

आकर्षण मन्त्र

***मन्त्र*—ओं क्षां क्षां क्षां हां हां हां हें हें स्वाहा।**

एक हजार जप करने से वस्तु और मनुष्य का आकर्षण हो जाता है। जितना अधिक जप किया जायेगा सिद्धि उतनी स्थायी होगी।

पुत्रदाता मन्त्र

जिस स्त्री के पुत्र या पुत्री कोई सन्तान नहीं होती हो या

केवल पुत्रियाँ होती हैं उनके लिये यह मन्त्र रामबाण के समान सिद्धिदायक है। अगर पुरुष एवं पत्नी की कामक्रिया व रक्त ठीक है तो इसका प्रयोग करने पर अवश्य पुत्र लाभ होगा। शुद्ध उच्चारण करने वाले अनुभवी ब्राह्मण से यह पूजा कराना चाहिये अथवा अपने करने को शक्ति हो तो भी कर सकते हैं। इस मन्त्र का प्रयोग हमने अनेक लोगों से कराया है और सभी लाभान्वित हुए हैं। सर्वप्रथम किसी शुभ माह, पक्ष, तिथि बार को स्नान करने के बाद हाथ में अक्षत, पैसा रोली लेकर निम्न संकल्प करना चाहिये।

ओं अद्य अमुक नाम संवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नाम शर्मा, वर्मा, अहम् मम् पुत्र सन्तति अतिशीघ्र प्राप्यर्थ देवकी सुतगोविन्द वासुदेव जगत्पते:। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणमगत:। इत्य मन्त्रस्य लक्षयुतं जपम् अद्यत: यावत् एक मास पर्यन्तं करष्ये।

३,५०० बार मन्त्र प्रतिदिन जपना चाहिये। नया वस्त्र धारण करके जपना चाहिये। इसका दशांश हवन अरवा चावल एवं घी से करना चाहिये। जीवत्पुत्रिका की माला पर या रूद्राक्ष की माला पर यह जप करना चाहिये। पुत्र इच्छित स्त्री को चाहिये कि प्रयोग के पूर्व बालरूप कृष्ण का छोटा फोटो अपने घर में रखकर नित्य पूजा जप कर दस-पन्द्रह मिनट उस फोटो पर दृष्टि जमावें तथा कृष्ण का ध्यान करें। हो सके तो बांयें हाथ की प्रथम अंगुली में स्त्री तथा दाहिने हाथ की प्रथम अंगुली में पुरुष पुखराज या टोपाज ५ रत्ती की सोना या त्रिधातु की अंगूठी में बनवाकर

गुरूवार को धारण करें।

यह प्रयोग कराया गया परीक्षित है। अवश्य पुत्र लाभ होगा। मन्त्र-तन्त्र सिद्धि में विश्वास आवश्यक है।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

***मन्त्र*—ओं नमो भगवते रूद्राय ओं चामुण्डे अमुकीं (स्त्री का नाम) मे वशमानय स्वाहा।**

नित्य रात्रि में एक हजार बार जपने से मन्त्र सिद्ध होता है। साथ ही कुपित स्त्री भी आकर्षित हो जाती है।

वशीकरण प्रयोग नर-नारी

विधि—एक कछुए की पीठ की हड्डी लावें। उसे रात्रि में एकान्त स्थान पर पीपल के पेड़ के नीचे चार लोहे की कील गाढ़कर कछुए की पीठ को उस पर रखें तथा शुद्ध दुग्ध एवं थोड़ा अरवा चावल उसमें डालकर खीर पकावें। पकाते समय पीपल के पेड़ से कोई भय की बात होने पर डरना नहीं चाहिए। खीर पक जाने पर उस खीर को अपने पास रख लें। उसका दो-चार दाना जिस किसी भी व्यक्ति स्त्री या राज्याधिकारी को खिला दिया जायेगा वह उसके वश में हो जायेगा। फिर उससे आप जो चाहें अपना मनचाहा काम करा सकते हैं। खीर पकाने का काम रविवार, शनिवार या मंगलवार को ही करना चाहिए। अगर व्यक्ति या स्त्री के कपड़े में उस खीर का दाना सटा दिया जायेगा तो भी वह व्यक्ति नारी वश में हो जायेगा। यह प्रयोग किया हुआ तथा कराया हुआ सिद्ध तान्त्रिक प्रयोग है।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

***मन्त्र*—ओं नमो देव आदिरूपाय अमुकस्य आकर्षण कुरू-कुरू स्वाहा।**

उक्त मन्त्र को १० हजार बार जप कर सिद्ध कर लें। काले धतूरे का रस गोरोचन में मिलाकर सफेद कनेर की लेखिनी से भोजपत्र पर नाम सहित मन्त्र लिखें तथा खैर की अग्नि में उस यन्त्र को तपावें तो सौ योजन तक का आकर्षण होता है।

मोहन मन्त्र

***मन्त्र*—ओं नमः भगवतु कामदेवं यस्य यस्य हृदयं भवामि यश्च यश्च मम मुखं पश्यति तं तं मोहमययुतु स्वाहा।**

मन्त्र को १० हजार बार जप कर सिद्ध कर लें।

विधि—बिल्वपत्र छाया में सुखाकर दूध में पीसकर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर तिलक लगाकर जिसके सम्मुख जायेगा वह क्षण भर में तन मन से मोहित होगा।

वशीकरण मन्त्र

१. ओं नमः फट् विकट घोर रमिणी स्वाहा।

किसी भी सूर्य या चन्द्रग्रहण के दिन १ हजार बार मन्त्र जप कर सिद्ध कर लें। फिर रविवार को यह मन्त्र पढ़े। जिसके नाम से ग्रास अन्न भोजन करेगा वह निश्चित वशीभूत होगा।

२. ओं सुदर्शनाय हूं फूट् स्वाहा।

उक्त मन्त्र को एक लाख बार जप कर सिद्ध कर लें। हस्त

नक्षत्र में बबूल की जड़ लाकर तीन बार मन्त्र पढ़कर दाहिनी बांह में बाँधें तो राजसम्मान पावें तथा वह कहीं विवादग्रस्त न होंगे।

३. ओं द्रविणी स्वाहा ओं हामिले स्वाहा।

रविवार के दिन चिरचिटा की जड़ की कील सात अंगुल की बनाकर सात बार उस पर उक्त मन्त्र को पढ़कर जिस वेश्या के घर में डाल दें वह वश में हो जाएगी।

४. गोरोचन यानि रक्त और कदली रस एक साथ मिलाकर उसका तिलक कर जो स्त्री अपने पति के पास जायेगी तो उसका पति जीवन भर दास के समान रहेगा।

५. जो नारी अपने बांये पैर का जूता या पायजेब के बराबर आटा तोलकर मंगलवार या रविवार को चार रोटियाँ अपने पति को खिलावें वह पति वश में हो जाता है।

स्त्री का स्तन जाता रहे

शनिवार को लाजवन्ती को न्यौत आवें। रविवार को उसे लाकर अपने हाथ में मलकर नारी को दिखाकर मुट्ठी बाँधें तो उसका स्तन गायब हो जाये और खोलें तो फिर आ जाये।

शत्रु मोहित मन्त्र

भोजपत्र पर रक्त चन्दन द्वारा शत्रु का नाम रविवार के दिन लिखें और मधु में डुबो दें तो शत्रु मोहित रहता है।

मारण मन्त्र

ओं नमो काल रूपाय अमुकं भस्मी कुरू कुरू स्वाहा।

प्रथम १५,००० बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर भांग, नमक, चूरण दीप शिखा पर एक सौ नौ बार मन्त्र पढ़कर जलावें तो शत्रु मृत्यु मुख में जावेंगे।

पाठक इसका गलत प्रयोग कभी न करे नहीं तो इसका प्रभाव साधक पर बुरा ही पड़ता है।

रम्भा अप्सरा मन्त्र

ओं सः रम्भे आगच्छागच्छ स्वाहा।

उर्वशी अप्सरा मन्त्र

ओं श्रीं उर्वशी आगच्छागच्छ स्वाहा।

कुमारी यक्षिणी मन्त्र

ओं नमो हटेले कुमारी स्वाहा।

कामेश्वरी यक्षिणी मन्त्र

ओं आगच्छ कामेश्वरी स्वाहा।

कामदेव बीज मन्त्र

क्लीं कामदेवाय नमः।

मन्त्र सिद्धि उपाय—जिस मन्त्र को सिद्ध करना हो उसे 'ऐं' के द्वारा सम्पुटित कर दस हजार बार जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

उक्त मन्त्रों को किसी शुभ दिन से एकान्त स्थान में माला पर रात्रि में कम से कम १०,००० बार जपना चाहिए। सिद्धि नहीं

मिलने पर जप की संख्या दस गुना करके जपें।

मारण मन्त्र

ओं नमो हरिमर्कट मर्कटाय अमुकं हरिमर्कट हरिमर्कटाय स्वाहा।

कागज पर सिंदूर से मन्त्र लिखकर हनुमान जी की मूर्ति पर चिपका दें। फिर मूर्ति की पूजा कर दें। उक्त मन्त्र द्वारा हनुमान की उक्त मूर्ति पर सरसों के तेल की एक लाख धारा दें।

साधक को इसका प्रयोग तब तक नहीं करना चाहिये जब तक कि उसके प्राणों पर कोई संकट न हो।

शत्रु पीड़ा कारक मन्त्र

वीर वीर महावीर सात समुद्र का सोखा नीर अमुक के ऊपर चौकी चढ़े हियो फोड़ चीटी पढ़े साँस न आवे पडयो रहे काया माहि जीव रहे लाल लंगोट तेल सिंदूर पूजा मांगो महावीर कपड़ा पर तेल सिंदूर हजरत वीर की चौकी रहे।

विधि—मंगलवार की आधी रात को तेल सिंदूर लाल वस्त्र इस मन्त्र द्वारा हनुमान जी को चढ़ावे। चने की दाल का भोग लगावें। गुड़ का नैवेद्य रखें इसके बाद दूसरे कपड़े में तेल सिंदूर लगाकर अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम बोलकर मन्त्र द्वारा सात सुई कपड़े में चुभावें और उस कपड़े को मिट्टी की हाँडी में डालकर मुख बन्द कर जमीन में गाड़ दें। शत्रु तड़फड़ाता रहता है।

अगर शत्रु को फिर अच्छा करना हो तो जमीन से हांडी

उखाड़कर कपड़ा में से सुई हटा लें तथा उस कपड़ा को गंगा जल में डाल दें। शत्रु ठीक हो जायेगा।

किसी के द्वारा दूसरों को दिये गये कष्ट की शांति हेतु मन्त्र

मन्त्र—**ओं सं सां सिं सीं सुं सूं सें सैं सों सौं सं सः वं वां विं वीं वुं वूं वें वैं वों वौं वं वः हंसः अमृतवर्च्चे से स्वाहा।**

कुछ लोग दूसरों पर तान्त्रिक प्रयोग करकर या कराकर दूसरों को भयंकर दुःख देकर उन्हें अकस्मात् रोग शोक, दुःख, दरिद्रता आदि का प्रकोप हो जाया करता है। जिस प्रकार विष की औषधि विष ही है उसी प्रकार तन्त्र-मन्त्र की काट तन्त्र-मन्त्र के द्वारा किया जाता है। ऐसी परिस्थिति में काट हेतु एक नये सकोरे में कुछ जल भरकर प्रातः इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके उस व्यक्ति को पिलावें। इससे सब प्रकार का कष्ट खत्म हो जाता है तथा कुकृत्य दूर होकर व्यक्ति निरोग बनता है।

शत्रु के द्वारा किये गये अभिचार प्रभाव को नष्ट करने का मन्त्र

मां भयात् सर्वतो रक्ष श्रियं वर्धय सर्वदा।
शरीरारोग्यं मे देहि देव देव नमोस्तुते॥

ताम्रपत्र में जल भरकर उसे अपने हाथ में लें तथा उक्त मन्त्र को अपने इष्टदेव का स्मरण करते हुए सात बार मन्त्र को पढ़कर जल को स्वयं पी लें। "मां" तथा "मे" के स्थान पर व्यक्ति का

नाम रखना चाहिए।

अरिष्ट निवारण मन्त्र

ओं हं हां हिं हीं हुं हूं हें हैं हों हौं हं हः क्षं क्षां क्षिं क्षी क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः हंसः हं।

१२ अंगुल पलाश की लकड़ी की कील को उक्त मन्त्र से १०,००० बार अभिमन्त्रित करके जिस घर में गाड़ दिया जायेगा वहाँ से सभी प्रकार का स्थावर, जंगम एवं कृत्रिम विष दूर हो जाते हैं तथा भूत-प्रेत, पिशाच, दुष्ट नर, विषैला जन्तु आदि की पीड़ा कष्ट से मुक्ति मिल जाती है।

उक्त मन्त्र से १०८ बार जल पढ़कर जिस किसी भी व्यक्ति को पिलाया जायेगा उसके शरीर से भूत, प्रेत पिशाच आदि दोष दूर हो जायेगा।

घंटाकर्ण महावीर मन्त्र

ओं घंटाकर्ण महावीर अमुकस्य सर्वोपद्रवक्षयं कुरू कुरू स्वाहा।

घंटाकर्ण जी भगवान शिव के पार्षद हैं। ये भगवान बद्रीनाथ के क्षेत्रपाल हैं। जैन धर्म में भी इनकी पूजा की जाती है। ये अतुलित बल शक्तिसम्पन्न हैं। कलियुग में इनकी साधना अतिशीघ्र फलदायी है। इस मन्त्र का सवा लाख बार जप करने से सारे उपद्रव शान्त हो जाते हैं। नित्य घंटाकर्ण महावीर की जप के साथ विधिवत पूजा भी करनी चाहिए।

विघ्न नाशक मन्त्र

ओं गं गौ गणपतये विघ्नविनाशिने स्वाहा।

गणेश की षोडशोपचार पूजा करके इस मन्त्र का नित्य १००० बार लाल चन्दन की माला पर जप करने से सारे विघ्न बाधा दूर होकर परिस्थितियाँ अनुकूल हो जाती हैं।

बटुक भैरव मन्त्र

ओं ह्रीं बं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरू कुरू बटुकाय ह्रीं ओं।

इस मन्त्र का ५१,००० जप करने से बटुकभैरव भगवान् साकार रूप में प्रकट होकर सिद्ध होते हैं।

इस मन्त्र का नित्य १ माला जप से रोगनिवृति, आपत्ति दूर तथा मनोकामना सिद्ध होती है।

त्रैलोक्य मोहिनी लक्ष्मी एवं भगवती दुर्गा का मन्त्र

***मन्त्र*—'श्रीं'**

***विधि*—अंगन्यास-महाश्रियै महाविद्युत प्रभे स्वाहा हृदयाय नमः। श्रीयै देति विजये स्वाहा, शिरसे स्वाहा। गौरी महाबले बन्ध बन्ध स्वाहा शिखायै वषट्। धृतिः स्वाहा कवचाय हुम्। महाकाये पद्महस्ते हुं फट् अस्त्राय फट्।**

पद्माक्ष की माला से तीन लाख या एक लाख बार जप करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। लक्ष्मी अथवा विष्णु के मन्दिर में श्रीदेवी का पूजन करके धन प्राप्त किया जा सकता है। खैर की

लकड़ी पर घी मिश्रित चावल की एक लाख आहुति देने से राजा वशीभूत होता है तथा लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। एक लाख बिल्वफलों के होम से धन वृद्धि होती है।

उक्त यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर तीन दिनों तक षोडषोपचार पूजा करके अपने घर में फ्रेम में मढ़वाकर नित्य जो पूजा करता है, उसके यहाँ धन की सदा वृद्धि होती रहती है। पंचमी और सप्तमी को लवण एवं आंवले का **क्रमशः** त्याग कर दें। खीर का भोजन करके श्रीसूक्त का जप **करें। विल्व,** घृत, कमल और खीर से हवन करें।
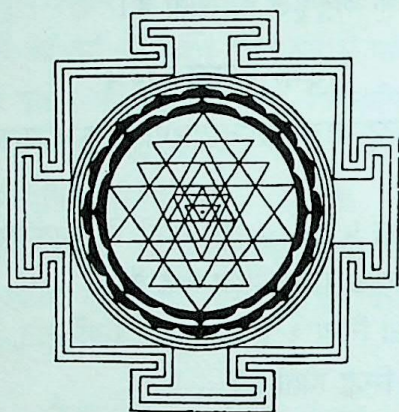
स्त्री वशीकरण मन्त्र

ओं उत्तिष्ठ चामुण्डे जम्भय जम्भय मोहय मोहय (अमुकी) वशमानय स्वाहा।

नदी के तीर की मिट्टी से लक्ष्मी जी की **मूर्ति** बनाकर धतूरे

के रस से मदार के पत्ते पर स्त्री का नाम लिखें। इसके बाद उक्त मन्त्र का १००० बार जप करें। स्त्री निश्चित वश में हो जाती है। प्रयोग किया हुआ यह अनुभूत मन्त्र है।

स्त्री वशीकरण त्वरित मन्त्र

फट् स्त्री क्षें हूँ य हुं स्त्री ओं।

इस मन्त्र का एक लाख बार जप करने से स्त्री क्या यक्ष आदि तथा अप्सरा भी वश में हो जाती हैं।

अनंग साधना या नामर्द को मर्द बनाने की तान्त्रिक साधना

यह साधना अपने आप में अचूक सिद्धि है। इसके प्रयोग एवं सिद्ध करने से नपुंसक व्यक्ति को पुरुषत्व की प्राप्ति हो जाती है तथा वह स्त्री के साथ सम्पर्क करने लायक हो जाता है। फलतः उसे सन्तान प्राप्ति भी हो जाती है।

***मन्त्र*—ओं एं मदने मदनविद्रावणे अगंसगमे देहि देहि क्रीं क्रीं स्वाहा।**

विधि—किसी नदी के संगम पर इस मन्त्र का जप चौदह दिनों में एक लाख बार पूरा करना पड़ता है। दिन में एक बार भोजन किया जाता है। पन्द्रहवें दिन दशांश हवन करें तथा उक्त मन्त्र से १,००० चमेली के पुष्पों से हवन करें। ऐसा करने पर उसमें पुरुषत्व की प्राप्ति हो जाती है। यह भी सिद्ध किया हुआ मन्त्र है।

सम्मोहन मन्त्र

ओं श्रीं भैरवी भद्राक्षी आत्मन् सर्वजन वाक् चक्षु श्रोत्र मन स्तम्भय स्तम्भय बाँधय बाँधय मम शब्दानुग्रह दर्शन दर्शय दृष्टि-यथात् सम्मोहनाय सम्मोहनाय कुरू कुरू स्वाहा।

विधि—शुक्ल पक्ष की पंचमी से एक माह तक लगातार इस मन्त्र की प्रतिदिन एक माला जप करें। अन्तिम दिन दशांश हवन कर दें। चावल, नमक, राई, मधु, मिश्री से। जप के समय अपने सामने एक बड़े कागज पर काली स्याही का बिन्दु बनाकर उसी पर दृष्टि जमावें।
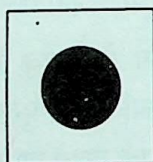
प्रतिदिन पाँच मिनट तक एकटक दृष्टि डालें। धीरे-धीरे त्राटक पूर्ण हो जाएगा। उसके बाद सात बार मन में मन्त्र को पढ़कर जिसकी ओर दृष्टि डालेगा उसी व्यक्ति को सम्मोहित कर लेगा।

तन्त्र साधना में नवग्रह पूजा

तन्त्र साधना में निर्विघ्नतापूर्वक मन्त्र सिद्धि हेतु गौरी गणेश पूजन तथा नवग्रह पूजन अवश्य कर लेना चाहिए। नवग्रह पूजन के लिये निम्न प्रकार से वेदी एक बालिश्त लम्बा तथा एक बालिश्त चौड़ा बनानी चाहिए। उस वेदी को नव भागों में बाँट

लेना चाहिए। पाँच रंग का चावल से किया हुआ नव भाग को भर देना चाहिए। उजला, काला, लाल, हरा एवं पीले रंग का चावल का प्रयोग किया जाता है।

नवग्रह वेदी

पूर्व

	हरा चावल बुध	उजला चावल शुक्र	उजला चावल चन्द्रमा	
उत्तर	पीला चावल गुरु	लाल चावल सूर्य	लाल चावल मंगल	दक्षिण
	काला चावल केतु	काला चावल शनि	काला चावल राहु	

पश्चिम

इन ग्रहों की पूजा हेतु सम्बन्धित रंगो की पताका भी सभी कोष्ठों में गाड़नी चाहिए। इसके बाद विधिपूर्वक नवग्रहों की पूजा बारी-बारी से करनी चाहिए।

ओं सूं सूर्याय नमः। ओं चं चन्द्राय नमः। ओं भं भौमाय नमः। ओं बुं बुधाय नमः। ओं बृं बृहस्पताये नमः। ओं शुं शुक्र शुक्राय नमः। ओं शं शंनिश्चराय नमः। ओं रं राहवे नमः। ओं कं केतवे नमः।

उक्त मन्त्रों से नवग्रहों की पूजा विधिवत कर लेनी चाहिए।

प्रत्युपचार (काट) मन्त्र-तन्त्र

कुछ लोग अपना दोष और दुःख गुनी, ओझा या तान्त्रिक के

माध्यम से दूसरों पर फेंकवा देते हैं फलस्वरूप प्रभावित व्यक्ति बड़े दुःख में पड़ जाता है। कुछ लोगों की दृष्टि ऐसी होती है कि वे जिसे देखते है वह व्यक्ति दुःख में फंस जाता है। ऐसी स्थिति में तन्त्र का निम्न प्रयोग करना चाहिए।

नींबू में रविवार या मंगलवार को सात सुई गाड़ देना चाहिये और कहना चाहिये कि जिसने मुझ पर यह कर्म किया है वह उसी पर लौट जाए तथा जैसे-जैसे नींबू सूखे वैसे-वैसे प्रयोग पूरा करने वाला पीड़ा रहित होता है।

काट या नजर दूर करने का शाबर मन्त्र भी है। इस मन्त्र से पीड़ित व्यक्ति को झाड़ दिया जाए तो वह दोष दूर हो जाता है। इस मन्त्र को ग्रहण काल में, दीपावली में, शिवरात्रि को या होली में जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए।

प्रथम मन्त्र—**ओं नमो सत्यनाम, आदेश गुरु को, ओं नमो नजर पर पीर न जानी, बोले छल सों अमृतबानी, कहो नजर कहाँ से आई, यहाँ की ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरो कहाँ ठाम, किसकी बेटी कहा तेरो नाम, कहाँ से उड़ी कहाँ को जाया, अब ही बस कर ले बेटी माया, मेरी बात सुनो चितलाय, जैसी होय सुनाऊँ। आय तेलन तमोलन चूहड़ी चमारी कामथनी खतरानी कुम्हारी महतरानी राजा की रानी जाको दोष ताहि के सिर पड़ै। जाहर पीर नजर से रक्षा करें। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।**

दूसरा मन्त्र—**काला चौसठ कलावा वीर, मेरा कलवा महावीर, जहाँ में भेजूँ वहाँ को जाय, माँस मच्छी को छुअन**

न जाई, अपना मारा आपहि खाय, चलत बाण मारूँ, उलट मूठ मारूँ, मार-मार कलवा तेरी आस। चार चौमुखा दिया न बाती, जा मारूँ वाही की छाती। इतना काम मेरा ना करे, तो तुझे अपनी माँ का दूध पीना हराम।

प्रत्येक मंगलवार को यह मन्त्र इक्कीस बार पढ़ने से सिद्ध हो जाता है। सात मंगलवार को ऐसा करना पड़ता है। जप करते समय आग में गुग्गुल की धूप दी जाती है तथा चौराहे पर चार बत्ती का दीपक रख दिया जाता है। इस मन्त्र से व्यक्ति को झाड़कर दीपक चौराहे पर रखवा देना चाहिए। मुड़कर दीपक को नहीं देखना चाहिए।

रक्षा मन्त्र

१. ह्रीं ह्रीं ह्रीं

२. ओं ह्रीं क्रीं स्त्री

३. ओं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं फट्

उक्त मन्त्रों में से किसी एक को १०८ बार जप लेने से शरीर की रक्षा होती है।

आकर्षण मन्त्र

१. ओं ह्रीं श्रीं क्लीं अमुकं/अमुकी/आकर्षण आकर्षण स्वाहा।

२. ओं क्षां क्षां क्षां हां हां हां हें हें स्वाहा।

उक्त दोनों मन्त्रों में से किसी एक को भी १००० बार भोजपत्र पर लिखकर आकर्षण बनता है।

प्रत्युपचार (काट) मुसलमानी मन्त्र

'तेली की खोपड़ी चाट-चाट के मैदान ऊपर चढ़ा मुहम्मद किसका बेटा फातमा का बेटा सुअर खाय हलाल करे पै दे पाँव वज्र की कील काट तो माता के दूध की हराम कहे।'

यह शाबर मन्त्र प्रतिदिन पढ़ें। जब तक काम न बने मन्त्र जप की क्रिया करते रहें।

आग बाँधने का मन्त्र

***मन्त्र*—ओं नमो कोरा करावा जल सा झरिया ले गौरा के सिर पर धरिया ईश्वर ले गौरा नहाय ई जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।**

उक्त मन्त्र को ग्रहण या दीपावली की रात्रि को कम से कम १०८ बार पढ़कर सिद्ध कर लेना चाहिए।

विधि—किसी कुएँ के पास से सात कंकड़ उठा ले और हर एक पर मन्त्र पढ़कर सात-सात बार अग्नि में डालें। अग्नि बुझ जाएगी।

नजर झाड़ने का मन्त्र

'गरूर चरण दिया मन श्री हरि मोक्षकारन देव दानव दैत्यानि लाई नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई आलाली पलाली चोरी चारे हुंकारे फंकारे उड़ाय माटी शलिकेर पाँव देख

ठुकरिया आय आयुकार अंगे डाइनेर दृष्टि पलायकार आज्ञावीर नरसिंह आज्ञा।'

दीपावली या ग्रहण में मन्त्र को १०८ बार पढ़कर सिद्ध कर ले तब नजर लगे व्यक्ति को इस मन्त्र से झाड़ दें।

शीघ्र प्रसव कराने का यन्त्र

अपमार्ग (चिचीड़ा) की जड़ को उखाड़कर लावें और उसे प्रसव में विलम्ब या दिक्कत वाली औरत के कमर में बाँध दें तो आसानी से प्रसव हो जाता है। ध्यान रहे प्रसव होते ही जड़ को कमर से हटा दें।

ज्वर नाशक मन्त्र

ओं शान्ति शान्ति सर्वारिष्ट नाशिनी स्वाहा।

इस मन्त्र से १०८ बार एक गिलास जल को पढ़कर अभिमन्त्रित कर दें और रोगी को पिला दें। ज्वर समाप्त हो जाएगा।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ओं सर्वलोक वशम् कराय कुरू कुरू स्वाहा।

विधि— ब्रह्मदण्डी, वच तथा कूट को समभाग लेकर उसका चूर्ण बनाकर १०८ बार मन्त्र से पढ़कर पान में डालकर जिसे खिलाया जाएगा, वह वश में हो जाएगा।

उच्चाटन मन्त्र

ओं नमो जातवेदसे दुर्गायै जगज्जीवन कारिण्यै हुम् ग्लौ

दुं दुर्गायै उच्चाटय उच्चाटय एहि एहि हुं फट् स्वाहा।

मन्त्र जाप में उच्चाटन शब्द के पूर्व सम्बन्धित व्यक्ति का नाम लेना चाहिए।

विधि—कुम्हार के हाथ से गिरी हुई मिट्टी, श्मशान की राख तथा श्मशान में बिखरा अन्न समान मात्रा में लेकर चूर्ण करके दुर्गा जी की मूर्ति बना लें। शिरिस के फूल से पूजा करके राई तथा नमक से दशांश हवन करें।

चिंताहरण कार्य सिद्धि दायक मन्त्र

ओं हर त्रिपुट हर भवानी बाला राजा प्रजा मोहिनी सर्व शत्रु विध्वंसिनि मम् चिंतितम् फलम् देहि देहि भुवनेश्वरी स्वाहा।

जब तक कार्य सिद्धि न हो मन्त्र जाप करते रहना चाहिए।

राजा वशीकरण मन्त्र

ओं नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महिपतिं मे वशी कुरू-कुरू स्वाहा।

(१) १,००८ बार मन्त्र जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। कुंकुम, लाल चंदन, कपूर, तुलसीपत्र को एक साथ पीसकर गाय के दूध में मिलाकर अपने मस्तक पर तिलक करें और राजा के पास जाए तो राजा वश में होता है।

(२) आश्लेषा नक्षत्र में नागकेशर के बांदा को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके तथा हाथ में लेकर राजा के पास जाने से राजा वशीभूत होता है।

ओं क्लीं सह अमुकं मे वशं कुरू-कुरू स्वाहा।

यह मन्त्र १ लाख जपने से सिद्ध होता है। केशर, चन्दन, गोरोचन तथा कपूर मिश्रित करके गाय के दूध में मिलाकर उक्त मन्त्र से १००० बार अभिमन्त्रित कर माथे पर तिलक लगाकर राजा के पास जाने से राजा वश में होता है।

(पति) पुरुष वशीकरण मन्त्र व तन्त्र

ओं नमो महायक्षिण्यै मम पति मे वश्यं कुरू-कुरू स्वाहा।

यह प्रयोग स्त्री को ही करना चाहिए। १,००८ बार मन्त्र जपने से मन्त्र सिद्ध होता है।

(१) गोरोचन, कुंकुम एवं केले का रस एक साथ पीसकर माथे पर तिलक कर अपने पति के पास जाए तो पति स्त्री के वश में हो जाता है।

(२) पति वशीकरण लौंग—जब स्त्री रजस्वला हो उस समय ४ लौंग अपने गुप्तांग में ४ दिन रखे। उसके बाद उसे पीसकर जिस पुरुष के मस्तक पर डाले वह वश में हो जाए।

(३) पति वशीकरण रोटी—स्त्री अपने पाँव के जूते के बराबर आटा तोलकर रविवार या मंगलवार के दिन उसकी चार रोटी बनावे और पति को खिला दे तो पति वशीभूत हो जाता है।

(४) पति वशीकरण तेल—सफेद सरसों, तुलसी, धतूरा, चिचिड़ा और तिल का तेल सबको मिलाकर पतला पीस ले और अपने शरीर में लगाकर पति के पास जाए तो पति वशीभूत होता है।

स्त्री वशीकरण प्रयोग

ओं नमो कामाख्या देव्यै अमुकीं मे वशं कुरू स्वाहा।

(१) उक्त मन्त्र का दस हजार जप करके सिद्ध कर ले। चिता की भस्म, वच, कूट, तगर और केशर बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करें जिस स्त्री के मस्तक पर डाला जाए वह वशीभूत हो जाती है।

(२) अपनी नाक, जीभ, कान तथा दाँत के मैल को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके पान में रखकर जिस स्त्री को खिलाया जाएगा वह स्त्री वश में हो जाती है।

ओं ह्रीं सा अमुकी में वशमानय स्वाहा।

(३) दस हजार बार उक्त मन्त्र जप करके सिद्ध कर ले तथा चिता को राख, वच, कूट, रोटी तथा गोरोचन को बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण कर ले तथा १०८ बार मन्त्र पढ़कर स्त्री के मस्तक पर डाल दे तो स्त्री वश में हो जाती है।

ओं नमः कामाक्षी देवी अमुकी नारी में वशं कुरू-कुरू स्वाहा।

(४) दस हजार बार उक्त मन्त्र का जप करके १०८ बार सुपारी पढ़कर स्त्री को खिला दे तो वह स्त्री वश में हो जाती है।

(५) स्त्री वशीकरण भस्म—मंगलवार के दिन बगुला को मारकर उसे जलाकर भस्म कर ले। उस भस्म को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को थोड़ा सा खिला दिया जाएगा वह वश में हो जाएगी।

(६) स्त्री वशीकरण मुसलमानी मन्त्र—**इन्ना आत्वैना शैताना मेरी शिकल बन अमुकी के पास जाना उसे मेरे पास लाना नहीं तो मेरी बहन भानजी पर तीन सौ तीन तलाक।**

विधि—खाट के गोड़वारी नंगा खड़ा होकर हाथ में थोड़ा गुड़ लेकर १२१ बार पढ़कर खाट के नीचे गुड़ रख दें। सवेरा होने पर गुड़ बच्चों में बाँट दे तो वह स्त्री ७ दिन में व्यक्ति के पास आ जाती है।

(७) दूसरा मन्त्र—**अलफ अलोप एक रहमान सुन शैतान मेरी शकल बन फलानी की जरान नराने तो तेरी माँ बहन को तीन सौ तीन तलाक।**

इलायची या लौंग पर २१ बार मन्त्र पढ़कर स्त्री को खिलाने से स्त्री वश में हो जाती है।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

१. ओं नमो सर्वलोक वशं कराय कुरू-कुरू स्वाहा।

२. ह्लीं ह्लीं काली काली स्वाहा।

३. ओं ह्लीं मोहिनी स्वाहा।

४. मद मद मादय मादय ह्लीं वशय अमुकं स्वाहा।

५. ओं नमो नारायणाय सर्वलोकान् मम वश कुरू-कुरू स्वाहा।

गोरोचन और सहदेई को घिसकर उक्त मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र को १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने माथे पर तिलक करे। उक्त मन्त्रों को १०,००० जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए।

उच्चाटन होम

उच्चाटन करने वाले मनुष्य का नाम लेते हुए कौए और उल्लू के पंखों द्वारा निम्न मन्त्र से १०८ आहुतियाँ दें।

ओं नमो भगवते रूद्राय करालाय अमुकं पुत्र बाँधवै सह शीघ्रम उच्चाटय ठः ठः ठः।

१०,००० जप करके सिद्ध कर लें।

मृगी रोग का मन्त्र

ओं ब्रह्म इन्द्र रक्ष रक्ष स्वाहा।

दीपक के तेल को ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तेल मर्दन करे तो मृगी रोग दूर होता है।

दूध, फसल, व्यवसाय नाशक मन्त्र

द्रां द्रीं शोषय शोषय मारय मारय क्लीं फट् फट् ह्रीं द्रूं सः सः।

भादों माह के रविवार को पुष्य नक्षत्र में केला की जड़ उखाड़कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके खेत में डाल दिया जाए जिस पशु पर डाल दिया जाए या जिस दुकान में डाल दिया जाए उसका दूध फसल तथा व्यवसाय सूख जाता है।

मलेरिया ज्वर रोकने का तन्त्र

मंगलवार के दिन छिपकली की पूँछ को काटकर उसे काले कपड़े में लपेटकर रोगी की बाँह में बाँधने से मलेरिया ज्वर की पारी रूक जाती है।

स्तम्भन प्रयोग

१. ओं नमो भगवते अमुकस्य बुद्धिं स्तम्भनं कुरू-कुरू स्वाहा।

२. ओं ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचंमुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा।

३. ओं नमो भगवते शत्रुणां बुद्धिं स्तम्भय स्वाहा।

उक्त मन्त्रों में से किसी भी एक मन्त्र को १०,००० मन्त्र जप कर सिद्ध कर ले।

उल्लू की विष्ठा को सुखाकर १०८ बार उक्त मन्त्र से पढ़कर पान में रखकर खिलाने पर शत्रु की बुद्धि स्तम्भित हो जाती है।

रजस्वला स्त्री का वस्त्र लाकर उसके ऊपर गोरोचन तथा मंजीठ से जिस स्त्री पुरुष का नाम लिखकर एक घड़े में डाल दें। वह तत्काल स्तम्भित हो जाएगा।

गति स्तम्भन तन्त्र

ऊँट की हड्डी को पृथ्वी में गड्ढा खोदकर जिसका नाम लेकर गाड़ा जाएगा वह शीघ्र चलने वाला भी होगा तो उसकी गति स्थिर हो जाएगी।

भूख प्यास न लगने का तन्त्र

आंवला, चिचड़ा, कमल का बीज और तुलसी की जड़ इन सबको एक साथ पीसकर गोली बना लें। प्रतिदिन सवेरे एक गोली खाकर ऊपर से गाय का दूध पी लें। भूख-प्यास नहीं लगेगी।

घर बैठे वशीकरण का मन्त्र

ओं चिभि चिभि स्वाहा।

प्रातःकाल उठकर उक्त मन्त्र से जल को सात बार पढ़कर जिसका नाम लेकर पिया जाएगा वह २१ दिन के बाद वश में आ जाएगा। यह प्रयोग लगातार २१ दिन तक करना चाहिए।

पृथ्वी में गड़े हुए धन को जानना

जिस स्थान पर कौआ मैथुन करे और सिंह बैठे वहाँ जमीन में धन है, ऐसा जानना चाहिए। पृथ्वी मे़ं गढ़ाधन कहाँ है इसे जानने के लिए **'पृथ्वी में गड़ा धन कैसे पायें'** यह पुस्तक रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार से मँगा लें।

मोहन मन्त्र

ओं उड़ामारश्वराय सर्व जगत मोहिनाम् एँ फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को १ लाख जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये।

तत्पश्चात् सात बार मन्त्र से पढ़कर तिलक करें तो सर्वजन मोहन होगा।

मोहन तिलक

कुंकुम और सिन्दूर लाकर गोरोचन के साथ मिलावें और फिर आंवले के रस में मिलाकर सुन्दर तिलक करें।

बेलपत्र नमक और बिजोरा लेकर बकरी के दूध में पीसें और तिलक करें तो लोक वश में होता है।

मनुष्य को नपुँसक करने का तन्त्र

व्यक्ति जिस स्थान पर मूत्र करता हो वहाँ पर काला बिच्छू गाड़ देने से वह नपुंसक हो जाता है। पुनः बिच्छू को उखाड़ देने से ठीक हो जाता है।

स्त्री वशीकरण

चिता की भस्म, वच, कूट, केशर और गोरोचन मिलाकर चूर्ण बनाकर जिस नारी के सिर पर डाला जाएगा वही वश में होगी।

वशीकरण तन्त्र

पंचमी तिथि को हुद-हुद की जड़ खोद लावें। उसका चूर्ण करके पान में रखकर जिसे खिला दिया जायेगा वह आकर्षित होकर आपके पास आ जाएगा।

पति, पुरुष, राजपुरुष वशीकरण मन्त्र

ओं ह्लीं सः मे अमुकं वशमानय स्वाहा।

उक्त मन्त्र को शुभ मास की शुभ तिथि से तुलसी की माला को छोड़कर अन्य किसी माला से १ लाख जप संकल्प करके करें। जप का दशांश हवन करें। अमुकं के स्थान पर पति का नाम पुरुष का नाम, राजपुरुष का नाम लेना चाहिये। पति वशीकरण का यह मन्त्र प्रयोग एवं सिद्ध किया हुआ है। प्रयोग में यह मन्त्र सार्थक रहा है।

कृपाकर मन्त्र

ओं नमः सर्वलोक वशिं कराय कुरू-कुरू स्वाहा।

इस मन्त्र को पढ़कर दाहिने भुजा पर बांधें तो सब लोग मेहरबान हो जायेंगे।

सम्मोहन तन्त्र-मन्त्र

डामर ग्रन्थों में कुछ सम्मोहनी क्रियाएँ बताई गई हैं—

तुलसी बीज का चूर्ण करके अगर बड़हर के रस के साथ पीसकर रविवार को ललाट पर तिलक करें तो जगत के सभी जीवों को मोहित किया जा सकता है।

सिन्दूर, कुंकुम और गोरोचन को आमलकी के रस में मिलाकर ललाट पर तिलक करने से लोग मोहित हो जाते हैं।

भृंगराज, केशवराज, लज्जावती लता, दंतोत्पल इन सबों को एक साथ पीसकर तिलक करने से संसार को मोहित किया जा सकता है।

ओं अं आं इं ईं ओं ओं ऋृ हूँ अमुकं फट्।

अमुक्र के स्थान पर व्यक्ति का नाम रखना चाहिये। इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित पान १०८ बार पढ़कर जिसे दिया जायेगा वह तत्काल मोहित होगा।

'**ओं दंडाय महादंडाय स्वाहा**' इस मन्त्र से अगर पहनने के वस्त्रों में १०८ बार पढ़कर गांठ लगा दी जाए तो वह व्यक्ति सबको मोहित करता है।

शैतान अमल स्त्री वशीकरण मुसलमानी मन्त्र

मन्त्र—अफल गुरु गुफ्तान जाग जाग अलाउद्दीन शैतान सात बार अमुकी के जिया आन जो न आवे तो अम्मा की तलाक हमसीरा की तीन तलाक।

विधि—एक बेसन का चौमुखा दीपक बनावें। दाहिनी अनामिका अंगुली से रक्त निकालकर रूई की बत्ती में लगावें फिर दीप में तेल डालकर बत्ती जलावें। लोबान जलावें। भुना हुआ अन्न जप का भोग लगावें। दक्षिणी मुख बैठकर मन्त्र का जप करें। स्त्री व्याकुल होकर आयेगी और पैरों पर गिरेगी।

कुछ विशेष कार्य सिद्धि मन्त्र

हूं हूं

यह मन्त्र १ लाख जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये।

इससे लक्ष्मी, वाणी, सौन्दर्य एवं ऐश्वर्य वृद्धि होती है। काली तन्त्र में इसका उल्लेख है।

ह्रीं ह्रीं

यह मन्त्र राज्य, अर्थ, शत्रु पर जय दिलाता है कर्पूरस्तव में इसका उल्लेख है। इसकी भी सिद्धि १ लाख जप करके की जाती है।

उड्डीश तन्त्र में कहा गया है कि शरीर के सड़ने या मृत्युचिह्न को हटाने के लिये नीचे दिये गये मृत्युंजय मन्त्र का १ लाख जप करना चाहिये—**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ऊर्वारिकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मृतात्।**

ऋग्वेद के (४/३२/२०-२९) में अभिषेक समस्याओं से मुक्ति हेतु निम्न मन्त्र का प्रतिदिन जप करने को कहा गया है—

ॐ भूरिदा भूरि दोहिनी का दभ्रं भूर्या भम। भूरि धोदिन्द्र दित्ससि। ॐ भूरिदाह्यसि श्रुतः पुरूजा भूरवृत्रहन। आको भजस्व राधसि।

मन्त्र सिद्धि, अष्टसिद्धि , अर्थ एवं सर्व कामदासिद्धि हेतु **'दक्षिणे कालिके'** इस मन्त्र का १ लाख बार जप करना चाहिये।

'ओं सच्चिदेकं ब्रह्म' मन्त्र का १ लाख बार जप, धर्म, अर्थ, काम मोक्ष को देने वाला है। महानिर्वाण तन्त्र में इन दोनों मन्त्रों का वर्णन मिलता है।

अपार सफलताओं हेतु, रोटी, कपड़ा, मकान, पद प्रतिष्ठा, कीर्ति, शक्ति प्राप्ति हेतु निम्न मन्त्र का प्रतिदिन १०८ बार जप करें तथा इसी मन्त्र से प्रतिदिन घी की ११ बार आहुति दें—**ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ओं ग्लौं हूँ क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।**

राज्याधिकारी या किसी व्यक्ति को अनुकूल करने का मन्त्र— मन्त्र १०८ बार जपकर व्यक्ति राज्याधिकारी या किसी व्यक्ति की ओर देखने से वे उसके अनुकूल हो जाते हैं।

***मन्त्र*— भीम् हम् फट्।**

गायत्री मन्त्र सिद्धि का विधान

यथा मधु च प्रष्येभ्यो घृतं दुग्धाद्रसात्पयः।
एवं ही सर्व देवानां गायत्री सार उच्चयते॥

— व्यास

अर्थात् व्यास जी के अनुसार जिस प्रकार पुष्पों का सारभूत मधु है, दूध का घृत है, रसों का पेय है उसी प्रकार समस्त वेदों का सार गायत्री मन्त्र है।

गायत्री छन्द सां मातेति— *महानारायणोपनिषद् । १५/१*

गायत्र्यं त्रायते यस्मात् गायत्री तु ततः स्मृता।
मारीच! कारणातस्मात् गायत्री कीर्तिता मया॥

— लंकेश तन्त्र

नास्ति गंगा समं तीर्थं न देवः केशवात्परः।
गायत्र्यास्तु परं जाप्यं न भूतो न भविष्यति॥

— वृ., यो. याज्ञ. अ. १०२/७९

अतः प्राणी के जीवन में गायत्री मन्त्र पग-पग पर सहायक होता है। परन्तु गायत्री देवी को शाप लग गया था जिस कारण बिना शाप मोचन के मन्त्र शक्तिहीन रहता है। गायत्री को शाप लगने के विषय में दो कथाएँ पुराणों में मिलती हैं।

ब्रह्मा जी की एक पत्नी सावित्री थी। सावित्री एक बार अपने

पति की आज्ञा की अवहेलना कर यज्ञ में सम्मिलित नहीं हुई। ब्रह्मा जी की दो पत्नियाँ थीं—सावित्री और गायत्री। इस पर दूसरी पत्नी गायत्री को लेकर ब्रह्मा जी ने यज्ञ पूरा किया। सावित्री इस पर रुष्ट हो गयी तथा गायत्री को उसने उसकी शक्ति नष्ट होने का शाप दे दिया। देवताओं में इससे चिन्ता व्याप्त हो गयी। तब सब देवताओं ने मिलकर सावित्री से गायत्री का शाप नष्ट होने की प्रार्थना की। सावित्री प्रसन्न हो गयी और उसने एक मन्त्र बताया जिसको पढ़ने से गायत्री शापमुक्त हो जायेगी। इस शापोद्धार मन्त्र के पाठ करने के बाद ही गायत्री मन्त्र का जाप करना चाहिये। तब ही गायत्री मन्त्र सिद्धि प्रदान करता है।

दूसरी कथा के अनुसार किसी समय ब्रह्मा, वशिष्ठ और विश्वामित्र ने अपनी-अपनी सृष्टि, स्थिति और प्रलय करने की शक्ति प्राप्ति हेतु गायत्री की आराधना की। परन्तु गायत्री ने उनकी इच्छा पूर्ण न की। अतः तीनों में क्रुद्ध होकर गायत्री को शाप दे दिया कि तुम्हारी शक्ति नष्ट हो जाएगी। शाप के चलते गायत्री शक्तिहीन हो गयी। तब देवताओं ने इस शाप से मुक्ति के लिये उन तीनों की आराधना-प्रार्थना की। प्रसन्न होकर उन तीनों में शापमुक्ति का तरीका बताया कि जो व्यक्ति शापमोचन मन्त्र या शापोद्धार मन्त्र के साथ गायत्री का जप करेगा, उसके लिये गायत्री शक्तिवान होगी तथा उसका पूर्ण फल साधक को मिलेगा।

अतः गायत्री साधना करने वालों को पहले शापोद्धार के मन्त्र का पाठ करना चाहिये।

गायत्री शापोद्धार के मन्त्र

ॐ अस्य गायत्री शापविमोचन मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री छन्दो वरुणो देवता ब्रह्माशाप विमोचने विनियोगः।

हाथ में जल लेकर उक्त मन्त्र को पढ़कर भूमि पर छोड़ दें। इसके बाद यह मन्त्र पढ़ें—

ॐ यद् ब्रह्मेति ब्रह्मविदो विदुस्त्वां पश्यन्ति धीराः।
सुमनसो त्वं गायत्री ब्रह्मशापान्मुक्ता भव॥

फिर हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़ें—

गायत्री वशिष्ठ शाप विमोचन मन्त्रस्य वशिष्ठ ऋषि अनुष्टुप छन्दो, वशिष्ठ देवता, वशिष्ठ शाप विमोचने विनियोगः।

फिर निम्न मन्त्र पढ़ें—

ॐ अर्क ज्योतिरहं ब्रह्मा ब्रह्मज्योतिरहं शिवः। शिव ज्योतिरहं विष्णु विष्णु ज्योतिः शिवः परः। गायत्री त्वं वशिष्ठ शापाद्विमुक्ता भव।

पुनः हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़ें—

ॐ विश्वामित्र शापमोचन मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः आद्या देवता विश्वामित्र शापविमोचने विनियोगः।

पुनः नीचे का मन्त्र पढ़ें—

ॐ अहो देवि महादेवि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वती।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनि नमोस्तुते।
गायत्री त्वं विश्वामित्र शापाद्विमुक्ता भव॥

गायत्री मन्त्र सिद्धि

गायत्री देवी ध्यान— ॐ हंसारूढ़ां सिताब्जैस्तरूण मणि लसद्भूषणां भालनेत्रां।

वेदास्या मक्षमालांसितमथ कमलं दण्डमाभ्या दधानाम्।
ध्यायेद्योर्भिश्चतुर्भिस्ति भुवन जननी पूर्व सन्ध्या भिवन्द्यां।
गायत्रीमृक् सावित्रीमभिनव वयसीं मण्डले चण्ड रश्मे॥

गायत्री मन्त्र— ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सविर्तुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

अर्थ— जगत् में सर्वव्यापत सबकी रक्षा करने वाली सत्य, चैतन्य, आनन्दस्वरूपा उस परब्रह्म (ब्रह्मा + विष्णु + महेश) वरण योग्य देव की शुद्ध चेतन ज्योति का हम ध्यान करते हैं। जो परमात्मा हमारी बुद्धियों को अच्छे शुद्ध कर्मों की ओर प्रेरित करते हैं तथा निष्काम कर्म एवं भक्ति द्वारा आत्मज्ञान हेतु शुद्ध बुद्धि प्रदान करें।

अर्थात् हे गायत्री माता! आप समस्त विश्व की सृष्टि करती हैं। विश्व के चर-अचर समस्त जीवों को रक्षा करती हैं। सबमें आप ही व्याप्त हैं। सत्, रज, तम गुणों सहित ब्रह्मा, विष्णु, महेश की देन शुद्ध चेतन ज्योति आप ही हैं। हम आपके इस रूप का ध्यान करते हैं। हे माता आप हमें शुद्ध बुद्धि प्रदान करें।

संस्कृत में अनुवाद—भूः = सत्य, **भुवः** = चैतन्य, **स्वः** = आनन्द, **तत्** = उस परमात्मा का, **सवितुः** = सबका पालन व संहार कर्ता, **देवस्य** = देव का, **वरेण्यं** = भजन योग्य, **भर्ग** =

चेतन ज्योति, **धीमहि** = चिन्तन करते हैं। **यः** = वह परमात्मा, **नः** = हमारी, **धियः** = बुद्धियों को, **प्रचोदयात्** = आत्मज्ञान हेतु शुद्ध बुद्धि प्रदान करें।

गायत्री मन्त्र २४ अक्षर का है।

१०० अक्षर का शताक्षरी गायत्री महामन्त्र कहलाता है जो इस प्रकार का है—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। *(२४ अक्षर)* **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ऊर्वारिकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।** *(३३ अक्षर)* **ओं जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयो निदहाति वेदः सः नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्याग्निः।** *(४३ अक्षर)*

गायत्री मन्त्र जप के पूर्व एक बार भी शताक्षरी गायत्री महामन्त्र का जप कर लेने से साधक को बड़ा लाभ होता है तथा मन्त्र में चेतना आती है। वशिष्ठ संहिता और शारदा तिलक में भी इसका वर्णन है।

इस शताक्षरी गायत्री के स्वरूप और महत्त्व का वर्णन श्रीमद् देवी भागवत महापुराण में कहा गया है—

शताक्षरां च गायत्रीं सकृदावर्तयेत्सुधिः चतुर्विंशत्यक्षराणि गायत्र्याः कीर्तितानि हि जातवेदसनाम्नीं च ऋचमुच्चारयेदतः त्र्यम्बकस्यर्थमाकृतय गायत्री शतवर्णका भवतीयं महापुण्या सकृज्जपया बुधैरियम् ॐ कारं पूर्वमुच्चार्य भुर्भूवः स्वस्तथैव च चतुर्विंश त्यक्षरांच गायत्री प्रोच्चरेततः एवं नित्यं जपं कुर्याद्

ब्राह्मण्ये विप्रपुंगवः स समग्रं फलं प्राप्य सन्यायाः सुखमेधते।

(देवी भागवत ११/१९/१०२–१०६)

गायत्री द्वारा नवग्रहों की शान्ति हेतु

गायत्री नवग्रह मन्त्र नीचे साधकों के लिये दिया जा रहा है। विष्णुधर्मोत्तर में लिखा है कि—

गोचरे वा विलग्ने वा ये ग्रहारिष्टसूचकाः।
पूजये तान् प्रयत्नेन पूजिताः स्युः शुभप्रदा॥

गोचर में या जन्मकुण्डली में जो ग्रह अनिष्टकारक हों, उनकी शान्ति कराकर उन्हें प्रसन्न करना चाहिये। प्रसन्न होकर ग्रह शुभ फल प्रदान करते हैं। गायत्री नवग्रह मन्त्र द्वारा ग्रहों की शान्ति अतिशीघ्र होती है।

नवग्रहों के गायत्री मन्त्र

१. **सूर्य**—ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहिः तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।

२. **चन्द्रमा**—ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृततत्वाय धीमहिः तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्।

३. **मंगल**—ॐ अंगरकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहिः तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

४. **बुध**—ॐ सौम्यरूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहिः तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

५. **गुरु**—ॐ अंगिरसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहिः तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

६. **शुक्र**—ॐ भृगुसुताय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि: तन्न: शुक्र: प्रचोदयात्।

७. **शनि**—ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि: तन्न: सौरि: प्रचोदयात्।

८. **राहु**—ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि: तन्न: राहु: प्रचोदयात्।

९. **केतु**—ॐ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि: तन्न: केतु प्रचोदयात।

तन्त्रोक्त दस महाविद्याओं की साधना में गायत्री का महत्व

दक्षिण और वाम मार्ग वाले, दोनों प्रकार के साधक दस महाविद्याओं की उपासना करते हैं। अगर इनकी साधना तन्त्रोक्त गायत्री मन्त्रों द्वारा की जाय तो इनकी सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है। मन्त्र इस प्रकार हैं—

१. **काली**—ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि: तन्नो अघोरा प्रचोदयात्।

२. **तारा**—ॐ तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।

३. **त्रिपुरसुन्दरी**—ॐ त्रिपुरादेव्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।

४. **भुवनेश्वरी**—ॐ नारायण्यै विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।

५. **भैरवी**—ॐ त्रिपुरायै विद्महे महाभैरव्यै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।
६. **छिन्नमस्ता**—ॐ वैरोचन्यै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।
७. **धूमावती**—ॐ धूमावत्यै विद्महे संहारिण्यै धीमहि: तन्नो धूमा प्रचोदयात्।
८. **बगलामुखी**—ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भनबाणस्य धीमहि: तन्नो बगला प्रचोदयात्।
९. **मातंगी**—ॐ मातंगयै विद्महे उच्छिष्टचाण्डाल्यै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।
१०. **कमला**—ॐ महादेव्यै विद्महे विष्णुपत्न्यै धीमहि: तन्नो लक्ष्मी: प्रचोदयात्।

किसी भी महाविद्या की साधना तभी पूर्ण हो सकती है जब उसके गायत्री मन्त्र का जाप किया जाए। इससे महाशक्ति के वास्तविक स्वरूप का दिग्दर्शन होता है।

समस्त देव-देवियों की सिद्धि गायत्री मन्त्र युक्त मन्त्रों से की जा सकती है। इससे शीघ्र सिद्धि मिलती है तथा मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। नीचे साधकों के उपयोग हेतु मन्त्र दिया जा रहा है—

१. **शिव गायत्री**—ॐ महादेवाय विद्महे रूद्रमूर्तये धीमहि: तन्न: शिव: प्रचोदयात्।
२. **ब्रह्मा गायत्री**—ॐ वेदात्मने विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि: तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।

३. **विष्णु गायत्री**—ॐ त्रैलोक्यमोहनाय विद्महे कामदेवाय धीमहि: तन्नो विष्णु: प्रचोदयात्।

४. **नारायण गायत्री**—ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि: तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।

५. **रूद्र गायत्री**—ॐ तत्पुरूषाय विद्महे महादेवाय धीमहि: तन्नो रूद्र: प्रचोदयात्।

६. **नृसिंह गायत्री**—ॐ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि: तन्नो नृसिंह प्रचोदयात्।

७. **हयग्रीव गायत्री**—ॐ वागीश्वराय विद्महे ह्यग्रीवाय धीमहि: तन्नो हंस: प्रचोदयात्।

८. **गोपाल गायत्री**—ॐ कृष्णाय विद्महे दामोदराय धीमहि: तन्नो विष्णु: प्रचोदयात्।

९. **राम गायत्री**—ॐ दशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि: तन्नो राम: प्रचोदयात्।

१०. **गणेश गायत्री**—ॐ तत्पुरूषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि:तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

११. **दक्षिणमूर्ति गायत्री**—ॐ दक्षिणामूर्तये विद्महे ध्यानस्थाय धीमहि: तन्नो धीश: प्रचोदयात्।

१२. **सूर्य गायत्री**—ॐ आदित्याय विद्महे मार्तण्डाय धीमहि: तन्न: सूर्य प्रचोदयात्।

१३. **कामदेव गायत्री**—ॐ कामदेवाय विंद्महे पुष्पवाणाय धीमहि: तन्नो अनंग प्रचोदयात्।

१४. **गरूड गायत्री**—ॐ गरूड़ाय विद्महे सुपर्णाय धीमहि:

तन्नो गरूड़: प्रचोदयात्।

१५. **हनुमान गायत्री**—ॐ अंजनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि: तन्नो हनुमान: प्रचोदयात्।

१६. **परशुराम गायत्री**—ॐ जामदग्नाय विद्महे महावीराय धीमहि: तन्न परशुराम: प्रचोदयात्।

१७. **अग्नि गायत्री**—ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमध्नाय धीमहि: तन्नो अग्नि: प्रचोदयात्।

१८. **गुरु गायत्री**—ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि: तन्नो गुरू: प्रचोदयात्।

१९. **इन्द्र गायत्री**—ॐ सहस्रनेत्राय विद्महे वज्रहस्ताय धीमहि: तन्नो इन्द्र: प्रचोदयात्।

२०. **आकाश गायत्री**—ॐ आकाशय विद्महे नमोदेवाय धीमहि: तन्नो गगनं प्रचोदयात्।

२१. **पृथ्वी गायत्री**—ॐ पृथ्वी देव्यै विद्महे सहस्रमत्यै धीमहि तन्नो महीं प्रचोदयात्।

२२. **वायु गायत्री**—ॐ पवनपुरूषाय विद्महे सहस्रमूर्त्यै धीमहि तन्नो वायु प्रचोदयात्।

२३. **सुदर्शन गायत्री**—ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि: तन्न: चक्र: प्रचोदयात्।

२४. **रूद्रचण्डी गायत्री**—ॐ रूद्रचण्डिकायै विद्महे पूर्णफलदायिन्यै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।

२५. **तुलसी गायत्री**—ॐ श्रीत्रिपुराय विद्महे तुलसीपत्राय धीमहि तन्न तुलसी प्रचोदयात्।

२६. **दुर्गा गायत्री**—ॐ ह्रां दुं दुर्गायै विद्महे अष्टाकक्षरायै धीमहिः तन्नः चण्डी प्रचोदयात्।

२७. **चण्डिका गायत्री**—ॐ महामायै विद्महे चण्डिकायै धीमहिः तन्नो देवी प्रचोदयात्।

२८. **चामुण्डा गायत्री**—ॐ घोर रावायै विद्महे मुण्डमालिन्यै धीमहिः तन्नो चामुण्डा प्रचोदयात्।

२९. **शरभ गायत्री**—ॐ पक्षीराजाय विद्महे शरभेश्वराय धीमहि तन्नो शरभः प्रचोदयात्।

३०. **शास्ता गायत्री**—ॐ भूताधियाय विद्महे महादेवाय धीमहिः तन्नः शास्ता प्रचोदयात्।

३१. **सरस्वती गायत्री**—ॐ सरस्वत्यै विद्महे ब्रह्मपुत्र्यै धीमहिः तन्नो देवी प्रचोदयात्।

३२. **राधा गायत्री**—ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियाये धीमहिः तन्नो राधा प्रचोदयात्।

३३. **गौरी गायत्री**—ॐ सुभगायै विद्महे काममालायै धीमहिः तन्नो गौरी प्रचोदयात्।

३४. **षण्मुख गायत्री**--ॐ तत्पुरूषाय विद्महे महासेनाय धीमहिः तन्नो षण्मुखः प्रचोदयात्।

३५. **नन्दी गायत्री**—ॐ तत्पुरूषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहिः तन्नो नन्दीः प्रचोदयात्।

३६. **सीता गायत्री**—ॐ जनकजाये विद्महे रामप्रियायै धीमहिः तन्नः सीता प्रचोदयात्।

३७. **शक्ति गायत्री**—ॐ सर्वसम्मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै

धीमहि: तन्न: शक्ति: प्रचोदयात्।

३८. **त्वरिता गायत्री**—ॐ त्वरितायै विद्महे महानित्यायै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।

३९. **बालभैरवी गायत्री**—ॐ ऐं वागीश्वर्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि: सौस्तन: शक्ति: प्रचोदयात्।

४०. **भैरवी गायत्री**—ॐ त्रिपुरायै विद्महे भैरव्यै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।

४१. **त्रिपुरासुन्दरी गायत्री**—ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि: सौस्तन: क्लिभे प्रचोदयात्।

४२. **जयदुर्गा गायत्री**—ॐ नारायण्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि: तन्नो गौरी प्रचोदयात्।

४३. **लक्ष्मी गायत्री**—ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे महाश्रियै धीमहि: तन्नो श्री प्रचोदयात्।

४४. **भुवनेश्वरी गायत्री**—ॐ नारायण्यै विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।

४५. **अन्नपूर्णा गायत्री**—ॐ भगवत्यै विद्महे माहेश्वरर्यै धीमहि: तन्नो अन्नपूर्णे प्रचोदयात्।

४६. **महिषमर्दिनी गायत्री**—ॐ महिशमर्दिन्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि: तन्नो घोरे प्रचोदयात्।

४७. **छिन्नमस्ता गायत्री**—ॐ वैरोचन्यै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

४८. **कालिका गायत्री**—ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।

४९. **तारा गायत्री**—ॐ तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि: तन्नो देवी प्रचोदयात्।

पद्मपुराण के सृष्टि खण्ड में लिखा है—

गायत्री सर्वदेवानाम्। गायत्री वेदों की माता है तथा देवताओं की भी माता है। गायत्री देवजननी—(कूर्मपुराण उत्तरार्द्ध १४/५८) जननी सर्वदेवानां गायत्री परमांगना—(पद्म पुराण सृष्टि खण्ड १७/३२५) गायत्र्येव परो विष्णु: गायत्र्येव पर: शिव: गायत्र्येव परो ब्रह्मा—(स्कन्द पुराण ९/५३)

अत: गायत्री सभी मन्त्रों में चमत्कारिक, शक्तिशाली तथा साधन योग्य है।

श्रीमद्भागवत में गायत्री मन्त्र की अधिक महत्ता दर्शाई गई है। गायत्री मन्त्र के द्वारा अनेक प्रकार के रोगों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। यही नहीं अनेक मनोकामनाओं की पूर्ति भी की जा सकती है। विश्वासपूर्वक इनका प्रयोग सही ढंग से करना चाहिये। नीचे श्रीमद्भागवत में दिये गये गायत्री मन्त्र का महत्व साधकों के उपयोग हेतु दिया जा रहा है।

१. शनिवार के दिन जो द्विज पीपल के नीचे १०० बार गायत्री मन्त्र का जाप करता है वह भौतिक रोग तथा महान बाधा से शीघ्र मुक्त होता है।
२. गुरूच को खण्ड-खण्ड करके उसे दूध में भिगोकर अग्नि में होम करने पर समस्त व्याधियों का नाश होता है।
३. ज्वर की शान्ति के लिये दूध में भिगोए आम्र के पत्तों से हवन करना चाहिये।

४. बिल्व वृक्ष के नीचे बैठकर गायत्री का जप करने से एक माह में राज्य मिलता है। ऐसा प्रयोग लगातार एक माह तक करना चाहिये।

५. बिल्व वृक्ष के जड़ का टुकड़ा खीर एवं घृत के साथ गायत्री मन्त्र से एक सप्ताह तक प्रतिदिन १००-१०० बार जप तथा हवन किया जाय तो प्रचुर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

६. धान का लावा त्रिमधु (दूध+दही+घी) के साथ मिलाकर हवन करने से दिव्य कन्या की प्राप्ति होती है। यह प्रयोग १०,००० बार करना चाहिये।

७. पुनः इसी विधि से गायत्री मन्त्र से १०,००० बार हवन करने से कन्या को मनोभिलाषित वर मिलता है।

८. १०० रक्तोत्पल से गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से सप्ताह भर में ही सुवर्ण ही प्राप्ति होती है।

९. दूध, घृत मिश्रित चावलों की खीर बनाकर एक सप्ताह तक प्रतिदिन गायत्री मन्त्र से १००० बार हवन करने पर तथा बचे हुए खीर की सूर्य भगवान को अर्पण करके ऋतुस्नान स्त्री को भोजन कराने से उसे अवश्य श्रेष्ठ पुत्र होगा।

१०. कमल की कली से प्रतिदिन १०० आहुति ११ दिन तक देने से १०० वर्ष की आयु होती है।

११. दूर्वा, दूध एवं घी से प्रतिदिन १००-१०० आहुति देने से एक सप्ताह में अकाल मृत्यु मिट जाती है।

१२. शमी की समिधा, अन्न, खीर और घृत की एक सप्ताह तक गायत्री मन्त्र से १०० आहुति अल्पमृत्यु विनाश करती है।

१३. वट की समिधा से खीर का हवन एक सप्ताह तक नियमित गायत्री मन्त्र से १०० बार करने से अल्प मृत्यु हट जाती है।
१४. अगहनी धान तथा कोदों के चूर्ण की लपसी बनाकर एक सप्ताह तक १,००० बार हवन गायत्री मन्त्र से करने से व्यक्ति ग्रामाधीश बनता है।
१५. बेंत की लकड़ी पर दूध, पत्र पुष्प के साथ खीर की गायत्री मन्त्र से आहुति एक सप्ताह तक करने पर वृष्टि होगी।
१६. भूतादि से पीड़ित व्यक्ति १०० बार गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म खा ले या सिर पर चढ़ा ले तो सब बाधा दूर होगी।
१७. गायत्री मन्त्र से १०० बार मन्त्र पढ़कर जिस दिशा में ढ़ेला फेंके उधर अग्निभय, वातभय तथा शत्रुभय कभी नहीं होता है।
१८. पलाश के पुष्प से प्रतिदिन एक माह तक गायत्री मन्त्र से हवन करने पर सर्व मनोरथ सिद्धि होती है।
१९. गायत्री मन्त्र से घृत की आहुति प्रतिदिन १०० बार करने से बुद्धि बढ़ती है।
२०. गायत्री मन्त्र से मधु के साथ नमक का हवन १,००० बार करने से अभिष्ट जन को मनुष्य अपने वश में कर लेता है।
२१. मधु मिश्रित बिल्व कुसुम से गायत्री मन्त्र द्वारा १,००० बार हवन करने से प्रेमी वश में हो जाएगा।
२२. गायत्री मन्त्र से दूध, दही, घी से १०,००० बार हवन करने से टी.बी. (राजयक्ष्मा) रोग दूर होता है।
२३. गायत्री मन्त्र से शंखपुष्पी से १०,००० बार हवन से कुष्ठ रोग दूर होता है।

२४. दूध से युक्त मीठे वच का गायत्री मन्त्र द्वारा १०,००० बार हवन करने से क्षयरोग दूर करता है।

२५. गायत्री मन्त्र द्वारा चीचीड़ा के बीज से १,००० बार हवन मृगी रोग दूर होता है।

२६. गूलर की समिधा से १,००० बार गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से प्रमेह रोग दूर होता है।

२७. दूध, दही, घृत से १,००० बार गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से बवासीर रोग शान्त होता है।

२८. समस्त रोगों की शांति के लिये गायत्री मन्त्र से वट, पीपल, गूलर तथा अन्यान्य दूध वाली गीली समिधाओं से १०,००० बार हवन किया जाता है।

२९. तिल से गायत्री मन्त्र से १,००० बार हवन करने से व्यक्ति दीर्घायु होता है।

३०. मृतवत्सा दीप की शांति हेतु तिल, घी से गायत्री मन्त्र से १ लाख बार होम करना चाहिये।

३१. राजकोष शांति हेतु निम्ब पत्ता, घृत, लाल चावल से दस हजार बार गायत्री मन्त्र से हवन करना चाहिये।

प्रजापत्य व्रत—यह व्रत १२ दिन का है। तीन दिन प्रातः काल, तीन दिन सायं काल तथा तीन दिन बिना माँगे जो मिल जाए, उससे एक समय भोजन करे। तीन दिन उपवास करें। इससे सभी कामनायें पूरी होती हैं।

सान्तपन व्रत—प्रथम दिन गोमूत्र गोमय, दूध, दही, घी सहित कुशोदक मिलाकर पियें। दूसरे दिन अखण्ड उपवास रहें।

तीन दिनों तक एक-एक ग्रास, तीन दिनों तक दो-दो ग्रास, तीन दिनों तक तीन-तीन ग्रास तथा तीन दिन अखण्ड उपवास रहें। १४ दिन का यह व्रत है। इसे अति कृच्छव्रत कहते हैं। इसका तीन गुना नियम करने पर महासान्तपन व्रत कहलाता है। इससे सारे पाप दूर होकर इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

तप्तकृच्छ व्रत—तीन-तीन दिनों तक क्रमशः दूध, घृत तथा पवन पीकर रहें। जल गर्म पीना चाहिये। स्नान एक़ बार करें। केवल जलाहार करें। इसमें १२ दिनों तक उपवास करना होता है। इससे सम्पूर्ण पाप नष्ट होता है।

चान्द्रायण व्रत—पति की आयु बढ़ाने के लिये सौभाग्यवती स्त्रियों को करना चाहिये। पूर्णिमा को कौर गिनकर खाना खाए। अगले दिन कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से एक ग्रास कम करके खाना खाये। अमावस्या को कुछ भी न खाए। शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से एक-एक कौर प्रतिदिन बढ़ाता जाए। पूर्णमासी को १५ कौर खाए। एक माह का यह व्रत है।

शिश चान्द्रायण—मध्याह्न बेला में चार कौर तथा मध्य रात्रि में चार कौर खाए, एक माह तक इसी प्रकार व्रत करें।

अति चान्द्रायण—दिन के दोपहर से हविष्य का आठ कौर भोजन करें। इससे सभी कार्य सफल हो जाते हैं।

दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों द्वारा मनोकामना सिद्धि

शीघ्र कार्य सिद्धि

दुर्गा सप्तशती का पाठ प्रत्येक श्लोक के आदि और अन्त में ॐ लगाकर अगर सौ बार पाठ किया जाए तो शीघ्र मनोकामना सिद्ध होती है।

शीघ्र मनोकामना सिद्धि

प्रत्येक मन्त्र के आदि में '**जातवेदसे सुनवाम सोममरातियो निदहाति वेदः सः नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं द्ररितात्याग्निः।**' इस मन्त्र को पढ़कर पाठ किया जाए तो शीघ्र मनोकामना सिद्ध होती है।

अकाल मृत्यु से बचाव

प्रत्येक श्लोक के आदि और अन्त में '**ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् ऊर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।**' इस मन्त्र का पाठ करते हुए दुर्गा सप्तशती का पाठ करने में अकाल मृत्यु से बचा जा सकता है।

अकाल मृत्यु हटाने तथा देह रक्षा

प्रति श्लोक के आदि में '**शूलेन पाहिनो देवि पाहि खंगेन चाम्बिके घंटास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च।**' इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए पाठ करने पर अकाल मृत्यु नहीं होती है तथा देह की रक्षा होती है।

उक्त श्लोक '**शूलेन पाहिना स्वनेन च**' का एक लाख या दस हजार जप करने से भी अकाल मृत्यु हटती है तथा देह रक्षा होती है।

सर्व कार्य सिद्धि

शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे सर्वस्यार्तिहरे देवी नारायणी नमोस्तुते। इस मन्त्र से दुर्गा सप्तशती का सम्पूर्ण पाठ करने से तथा इस मन्त्र का ३० हजार जप करने से सभी विपत्तियाँ दूर होती हैं तथा सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

मंगल कार्य की सिद्धि

'**करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी।**' इस श्लोक के सम्पुट से दुर्गा सप्तशती का सम्पूर्ण पाठ कर दिया जाए तो सभी अमंगल कार्य नष्ट हो जाते हैं तथा मंगल कार्य की सिद्धि होती है।

निजी मनोरथ सिद्धि

'**एवं देव्या वरंलब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः सूर्या जन्म समासाद्य सावर्णिर्भवता मुनेः।**' इस मन्त्र का सम्पुट करने से सभी निजी मनोरथ पूर्ण होते है।

सब प्रकार की आपत्तियाँ दूर करने हेतु

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रय दुःखभयहारिणी का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽर्द्रोचता॥

इस मन्त्र द्वारा सम्पुट पाठ या इस मन्त्र का १ लाख या १० हजार बार जप करने से सभी प्रकार की आपत्तियाँ दूर होती है।

बाधा दूर एवं धन तथा पुत्र की प्राप्ति हेतु

सर्वाबाधाविनियुक्तों धनधान्यसुताम्बितः।
मनुष्यो मृत्युसादेन भविष्याति न संशयः॥

इस मन्त्र द्वारा सम्पुट पाठ करने से बाधाएँ दूर होकर धन तथा पुत्र की प्राप्ति होती है।

दुश्मन का नाश एवं बाधा निवारण

सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्य खिलेश्वरी,
एवमेव त्वयाकार्य भस्मद्वैर विनाशतम्।

इस मन्त्र द्वारा सम्पुट पाठ या १० हजार बार मन्त्र का जप दुश्मन को हटाता है तथा बाधाएँ दूर होती हैं।

महामारी आदि बीमारियाँ शान्त करने हेतु

इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति,
तदा तदा अवतोर्याहं करिष्यामि अरि संक्षयम्।

इस मन्त्र द्वारा सम्पुट पाठ करने से सभी महामारी तथा

बीमारियाँ दूर होती हैं।

खोया हुआ राज्य/धन प्राप्ति हेतु

तत वव्रे नृत्यो राज्यमविभ्रंथ्यन्यजन्मनि,
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रु बलंबलात्।

इस मन्त्र का मात्र दस हजार जप करने से खोया हुआ राज्य/धन मिल जाता है।

बच्चों की बीमारियों की शान्ति हेतु

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेना पूर्य या जगत्,
सा धरां पातु नी देवि पापेभ्योऽनः सुतामिव।

इस मन्त्र से दीपक सहित बलि देने और घंटा बाँधने से बच्चों की बीमारियाँ दूर होती हैं।

सब प्रकार की विपत्ति दूर करने हेतु

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रयदुःख भयहारिणी का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय रूद्राऽद्रेचिता।

इस श्लोक का ९० हजार जप करने से सब प्रकार की विपत्ति दूर होकर दरिद्रता भी दूर होती है।

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु

काम्सोस्मीतां हिरण्यप्रकारां आद्रां ज्वलन्तीम् तप्तां

तर्पयन्तिय्, पदमे स्थितां पदमवर्णाम् ताकिहोह्वये श्रियम्।

इस मन्त्र से सम्पुट पाठ करने से शीघ्र लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

मोहन कार्य हेतु

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवि भगवती ही सां,
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।

इस मन्त्र से सम्पुट या इस मन्त्र द्वारा दस हजार बार जिसके नाम से किया जाएगा वह व्यक्ति राजा, अधिकारी या स्त्री उसके प्रति मोहित हो जाएगी।

सब प्रकार का रोग दूर करने हेतु

रोगानशेषानयहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलान्मीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिताह्या श्रयतां प्रयान्ति।

इस श्लोक से सम्पुट करने से सब प्रकार का रोग दूर होता है।

सर्वकामना पूरक तथा सर्वआपत्ति निवारण मन्त्र

भगवत्याकृतं सर्वण किंचित् अवशिष्यते,
यदयं निहतः शत्रुः अस्माकं महिषासुरः।
यदि चापवरो देयः त्वया अस्माकं महेश्वरि,
संस्मृता त्वं संस्मृता नो हिसेथाः परमापदः।
यः च मर्त्यः स्तवैरेभिः त्वां स्तोष्यात्यमलानने,
तस्य वित्तर्द्धि विभवैर्धनदारादिसभ्यताम्।

वद्धये अस्मत् प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके॥

इस श्लोक का १,०००, जप करने मात्र से सभी कामनाएँ पूरी होती हैं तथा आपत्तियाँ दूर होती हैं।

विद्या प्राप्ति तथा वाक्य की विकृति दूर करने हेतु

इत्युक्त्वा सा तदा देवि गंभीरान्तः स्मृताः
जगौ दुर्गौ भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्।

इस मन्त्र से सम्पुट पाठ करने से विद्या प्राप्ति होती है तथा वाक्य की विकृति दूर होती है।

सर्वकार्य सिद्धि

दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक को 'क्लीं' बीजं मन्त्र से सम्पुटित कर प्रतिदिन तीन पाठ करते हुए ४१ दिन तक लगातार पाठ करने से सर्वकार्य सिद्धि होती है।

वशीकरण सिद्धि

दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक को 'क्लीं' बीज मन्त्र से सम्पुटित कर प्रतिदिन १२ पाठ करते हुए २१ दिन तक पाठ किया जाए तो वशीकरण होता है।

उच्चाटन सिद्धि

दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक के अन्त में 'फट्' लगाकर प्रतिदिन १३ पाठ करते हुए सात दिन तक पाठ करने पर जिसके लिये पाठ किया जाएगा उसका शीघ्र उच्चाटन हो जाएगा।

सर्वबाधा निवारण तथा सर्वसम्पत्ति प्राप्ति हेतु

देवि प्रसन्नातिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्गतोऽखिलस्य,
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।

इस मन्त्र का १ लाख दस हजार या १ हजार जप करने से सभी बाधाएँ दूर होती हैं तथा सर्व सम्पत्ति मिलती है।

उक्त मन्त्र द्वारा दीपक को प्रणाम किया जाए तो भी वही फल मिलता है।

सर्व उपद्रव शान्ति हेतु

अगर दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'फट्' लगाकर चार दिन तक प्रतिदिन ११ पाठ किया जाए तो सभी उपद्रव शांत हो जाते हैं।

धन प्राप्ति हेतु

दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक को 'श्रीं' बीज मन्त्र से सम्पुटित कर ४९ दिन तक लगातार एक-एक पाठ करने पर धन प्राप्ति होती है।

विद्या प्राप्ति हेतु

दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक को 'ऐं' बीज मन्त्र से सम्पुटित कर १०० पाठ करने पर विद्या की प्राप्ति होती है।

आरोग्य और सौभाग्य की प्राप्ति हेतु

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।

रूपं देहि जपं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

इसका दस हजार जप करने से आरोग्यता तथा लड़की को सौभाग्य प्राप्त होता है।

सब प्रकार के कल्याण के लिये

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोऽस्तुते॥

इस मन्त्र का १० हजार या १ हजार जप करने से सब प्रकार के कल्याण की प्राप्ति कराता है।

पत्नी प्राप्ति हेतु

पत्नी मनोरमा देहि मनोवृतानुसारिणीम्।
तारिणी दुर्गसंसार सागरस्य कुलोद्भवाम्॥

इस मन्त्र का १० हजार जप करने से सुन्दर पत्नी की प्राप्ति होती है।

पति प्राप्ति हेतु

या देवि सर्वभूतेषु पति रूपेण संस्थिता:,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।

इस मन्त्र का दस हजार जप करने से विवाह उत्तम कुल में हो जाता है।

स्तोत्र पाठ

ऋण मोचन मंगल स्तोत्र

आज के युग में प्रायः किसी-न-किसी रूप में व्यक्ति ऋण ग्रसित हो जाया करता है। इस ऋणमोचन हेतु नीचे ऋण मोचन मंगल स्तोत्र पाठकों के लाभार्थ दिया जा रहा है। इसके पाठ करने से भगवती इस प्रकार की स्थिति तथा वातावरण अनुकूल कर देती है ताकि साधक का ऋण खत्म हो जाए तथा आमदन में वृद्धि हो। इसका ५१ पाठ करके दशांश तिल घी से हवन करना चाहिये।

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः॥ १॥
लोहितो लोहिताङ्गश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥ २॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टे कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥ ३॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्॥ ४॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति-समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहरतं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥ ५॥

स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्॥ ६॥
अङ्गारक! महाभान! भगवन्! भक्तवत्सल!
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय॥ ७॥
ऋणरोगादि-दारिद्रयं ये चाऽन्ये ह्यपमृत्यवः।
भय-क्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥ ८॥
अतिवक्र! दुराराध्य! भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्॥ ९॥
विरिञ्च-शक्र-विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः॥ १०॥
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गताः।
ऋणदारिद्रयदुःखेन शणूणां च भयात्ततः॥ ११॥
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा॥ १२॥

अन्नपूर्णा स्तोत्र

इस अन्नपूर्णा स्तोत्र के श्रद्धापूर्वक निरन्तर प्रातःकाल पाठ करने से गिरिराज-कुमारी पार्वती प्रसन्न होकर धन-धान्य आदि से अपने भक्त को परिपूर्ण करती हैं। जो मनुष्य सहज में थोड़े परिश्रम से ही अपने दुःख-दारिद्रय का अन्त देखना चाहता है वह जगत्माता श्री अन्नपूर्णा देवी की आराधना को ही सर्वोपरि मानकर अपना महान् धर्म एवं कर्तव्य बना ले, ऐसा करने से मनुष्य का दुःखदायक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो जाता है और उसका

जीवन एक सात्विक एवं सफल जीवन बन जाता है।

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्य रत्नाकरी
निर्धूताखिलघोर पावनकारी प्रत्यक्ष माहेश्वरी।
प्रालेयाचलवंश पावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥
नाना रत्न विचित्र भूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ता हारविलम्बमान विलसद्वक्षोज कुम्भान्तरी।
काश्मीरा गुरुवासितारुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ २ ॥
योगानन्द करी रिपुक्षयकरी धर्मार्थ निष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्य रक्षाकरी।
सर्वैश्वर्य समस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षा कृपावलम्बकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ ३ ॥
कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी
कौमारी निगमार्थगोचर करी ओंकारबीजाक्षरी।
मोक्ष द्वार कपाट पाटनकरी काशी पुराधिश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥
दृश्यादृश्यप्रभूतवाहन करी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीला नाटक सूत्र भेदनकरी विज्ञानदीपांकुरी।
श्री विश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णश्वरी ॥ ५ ॥
उर्वीसर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमान कुम्भलहरी नित्यान्नदानेश्वरी

सर्वानन्न करी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ ६ ॥
आदीशान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिजनेश्वरी त्रिलहरी नित्यांकुरा।
शर्वरी कामाकांक्षरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ ७ ॥
देवी सर्वविचित्ररत्नर चिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामस्वादुपयोधर प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी।
भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ ८ ॥
चन्द्रार्कानल कोटिकोटिसदृशाचन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुण्डलधरी चन्द्रर्कवर्णेश्वरी।
मालापुस्तकपाशकांकुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ ९ ॥
क्षत्रत्राणकरी महाभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदाशिवकरी विश्वेश्वरश्रीधरी।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ १० ॥
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्द्धं भिक्षां देहि च पार्वति ॥ ११ ॥
माता में पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्तताश्च स्वदेशो भुवत्रयम् ॥ १२ ॥

अपराजिता स्तोत्र

इस स्तोत्र का विधिवत पाठ करने से सब प्रकार के रोग तथा सब प्रकार के शत्रु और सब बन्ध्या दोष नष्ट होता है। विशेष रूप से मुकदमें में सफलता और राजकीय कार्यों में अपराजित रहने के लिए यह पाठ रामबाण है।

ॐ नमोऽपराजितायै। ॐ अस्या वैष्णव्याः पराया अजिताया महाविद्यायाः॥ वामदेव-बृहस्पति-मार्केण्डेया ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती छन्दांसि लक्ष्मीनृसिंहो देवता। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं बीजम्। हुं शक्तिः। सकलकामनासिद्ध्यर्थम् अपराजितविद्यामन्त्रपाठे विनियोगः। ॐ नीलोत्पलदलश्यामां भुजंगाभरणान्विताम्। शुद्धस्फटिकसंकाशां चन्द्रकोटिनिभाननाम्॥ शंखचक्रधरां देवी वैष्णवीमपराजिताम् बालेन्दुशेखरां देवीं वरदाभयदायिनीम॥ नमस्कृत्य पपाठैनां मार्कण्डेयो महातपाः। मार्ककण्डेय उवाच-शृणुष्वं मुनयः सर्वे सर्वकामार्थसिद्धिदाम्। असिद्धसाधनीं देवीं वैष्णवीमपराजिताम्॥ ॐ नमो नारायणाय, नमो भगवते वासुदेवाय, नमोस्त्वनन्ताय, सहस्रशीर्षाय, क्षीरोदार्णवशायिने, शेष भोगपर्य्यङ्काय, गरुड़वाहनाय, अमोघाय, अजाय, अजिताय, पीतवाससे, ॐ वासुदेव, संकर्षण प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, हयग्रीव, मत्स्य, कूर्म्म, वाराह, नृसिंह, अच्युत, वामन, त्रिविक्रम, श्रीधर, राम, राम, राम। वरद, वरद, वरदो भव, नमोऽस्तु ते, नमोऽस्तुते, स्वाहा, ॐ असुर-दैत्य-यक्ष-

राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-कूष्माण्ड-सिद्ध-योगिनी-डाकिनी-शाकिनी-स्कन्दग्रहान् उपग्रहान्नक्षत्रग्रहांश्चान्या् हन हन् पच पच मथ मथ विध्वंसय विध्वंसय विद्रावय विद्रावय चूर्णय चूर्णय शंखेन चक्रेण बज्रेण शूलेन गदया मुसलेन हलेन भस्मीकुरु कुरु स्वाहा। ॐ सहस्रबाहो सहस्रप्रहरणायुध, जय जय, विजय विजय, अजित, अमित, अपराजित, अप्रतिहत, सहस्रनेत्र, ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, विश्वरूप बहुरूप, मधुसूदन, महावराह, महापुरुष, वैकुण्ठ, नारायण, पद्मनाभ, गोविन्द, दामोदर, हृषीकेश, केशव, सर्वासुरोत्सादन, सर्व भूतवशंकर, सर्वदुःस्वप्नप्रभेदन, सर्वयंत्रप्रभञ्जन, सर्वनागविमर्दन, सर्वदेवमहेश्वर, सर्वबन्धविमोक्षण, सर्वाहितप्रमर्दन, सर्वज्वरप्रणाशन, सर्वग्रहनिवारण, सर्वपापप्रशमन, जनार्दन, नमोऽस्तुते स्वाहा। विष्णोरियमनुप्रोक्ता सर्वकामफलप्रदा। सर्वसौभाग्यजननी सर्वभीतिविनाशिनी। सर्वैश्च पठितां सिद्धैर्विष्णोः परमवल्लभा। नानया सदृशं किंचिद्दुष्टानां नाशनं परम्। विद्या रहस्या कथिता वैष्णव्येषापराजिता। पठनीया प्रशस्ता वा साक्षात्सत्त्वगुणाश्रया। ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥ अथातः प्रवक्ष्यामि ह्यभ्यामपराजिताम्। या शक्तिर्मामकी वत्स रजोगुणमयी मता। सर्वसत्त्वमयी साक्षात्सर्वमंत्रमयी च या। या स्मृता पूजिता जप्ता न्यस्ता कर्मणि योजिता। सर्वकामदुधा वत्स! शृणुष्वैतां ब्रवीमि ते। य इमामपराजितां

परमवैष्णवीमप्रतिहतां पठति सिद्धां स्मरति सिद्धां महाविद्यां जपति पठति शृणोति स्मरति धारयति कीर्तयति वा न तस्याग्निवायुवज्रोपलाशनिवर्षभयं, न समुद्रभयं, न ग्रहभयं, न चौरभयं, न शत्रुभयं, न शापभयं वा भवेत्। क्वचिद्रात्र्यन्धकारस्त्रीराजकुलविद्वेषि-विषगरगरदवशीकरण-विद्वेष्णोच्चाटनवधबन्धनभयं वा न भवेत्। एतैर्मन्त्रैरुदाहृतैः सिद्धैः संसिद्धपूजितैः। ॐ नमोऽस्तुते। अभये, अनघे, अजिते, अमिते, अमृते, अपरे, अपराजिते पठति सिद्धे जपति सिद्धे, स्मरति सिद्धे, एकोनाशीतितमे, एकाकिनि, निश्चेतसि, सुद्रुमे, सुगन्धे, एकान्नशे, उमे ध्रुवे, अरुन्धति, गायत्रि, सावित्रि, जातवेदसि, मानस्तोके, सरस्वति, धरणि, धारणि, सौदामनि, अदिति, दिति, विनते, गौरि, गांधारि, मातंगी कृष्णे, यशोदे, सत्यवादिनि, ब्रह्मवादिनि, कालि, कपालिनि, करालनेत्रे, भद्रे, निद्रे, सत्योपयाचनकरि, स्थलगतं जलगतं अन्तरिक्षगतं वा मां रक्ष सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा। यस्याः प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि। म्रियते बालको यस्याः काकबन्ध्याच या भवेत्॥ धारयेद्या इमां विद्यामेतैर्दोषैर्न लिप्यते॥ गर्भिणी जीववत्सा स्यात्पुत्रिणीस्यान्न संशयः। भूर्जपत्रे त्विमां विद्यां लिखित्वा गन्धचन्दनैः॥ एतैर्दोषैर्न लिप्येत सुभगा पुत्रिणी भवेत्। रणे राजकुले द्यूते नित्यं तस्य जयो भवेत्। शस्त्रं वारयते ह्येषा समरे काण्डदारुणे। गुल्मशूलाक्षिरोगाणां क्षिप्रं नाशयति च व्यथाम्॥ शिरोरोगज्वराणां न नाशिनी सर्वदेहिनाम्। इत्येषा कथिता विद्या अभयाख्याऽपराजिता॥ एतस्याः स्मृतिमात्रेण

भयं क्वापि न जायते। नोपसर्गा न रोगाश्च न योधा नापि तस्कराः॥ न राजानो न सर्पाश्च न द्वेष्टारो न शत्रवः। यक्षराक्षसवेताला न शाकिन्यो न च ग्रहाः॥ अग्नेर्भयं न वाताच्च न समुद्रान्न वै विषात्। कार्मणं वा शत्रुकृतं वशीकरणमेव च॥ उच्चाटनं स्तम्भनं च विद्वेषणमथापि वा। न किञ्चित्प्रभवेत्तत्र यत्रैषा वर्ततेऽभया। पठेद् वा यदि वा चित्रे पुस्तके वा मुखेऽथवा॥ हृदि वा द्वारदेशे वा वर्त्तते ह्यभयः पुमान्॥ हृदये विन्यसेदेतां ध्यायेद्देवींचतुर्भुजाम्॥ रक्तमाल्याम्बरधरां पद्मरागसप्रभाम्। पाशांकुशाभयवैररलं-कृतसुविग्रहाम्॥ साधकेभ्यः प्रयच्छनतीं मन्त्रवर्णामृतान्यपि। नातः परतरं किञ्चिद्वशीकरणमनुत्तमम्॥ रक्षणं पावनं चापि नात्र कार्या विचारणा। प्रातः कुमारिकाः पूज्याः खाद्यैराभरणैरपि॥ तदिदं वाचनीयं स्यात्तत्प्रीत्या प्रीयते तु माम्। ॐ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि विद्यामपि महाबलाम्। सर्वदुष्टप्रशमनीं सर्वशत्रुक्षयंकरीम्॥ दारिद्र्यदुःखशमनीं दौर्भाग्यव्याधिनाशिनीम्। भूतप्रेतपिशाचानां यक्षगन्धर्व-रक्षसाम्॥ डाकिनी शकिनी-स्कंध-कूष्माण्डानां च नाशिनीम्। महारौद्रीं महाशक्तिं सद्यः प्रत्ययकारिणीम्। गोपनीयं प्रयत्नेन सर्वस्वं पार्वतीपतेः। तामहं ते प्रवक्ष्यामि सावधानमनाः शृणु। एकान्हिकं द्व्यन्हिकं च चातुर्थिकार्द्धमासिकम्। द्वैमासिकं त्रैमासिकं तथा चातुर्मासिकम्। पाञ्चमासिकं षाड्मासिकं वातिक पैतिकज्वरम्। श्लैष्मिकं सान्निपातिकं तथैव सततज्वरम्। मौहूर्तिकं पैत्तिकं शीतज्वरं विषमज्वरम्। द्व्यहिनकं

त्रयह्निकं चैव ज्वरमेकाह्निकं तथा। क्षिप्रं नाशयते नित्यं स्मरणादपराजिता। ॐ ह्रीं हन हन, कालि शर शर, गौरि धम, धम, विद्ये आले ताले माले गंधे बंधे पच पच विद्ये नाशय नाशय पापं हर हर संहारय वा दुःखस्वप्नविनाशिनि कमलस्थिते विनायकमातः रजनि सन्ध्ये, दुन्दुभिनादे, मानसवेगे, शंखिनि, चाक्रणि गदिनि वज्रिणि शूलिनि अपस्मृत्युविनाशिनि विश्वेश्वरि द्रविडि द्राविडि द्रविणि द्राविणि केशवदयिते पशुपतिसहिते दुन्दुभिदमनि दुर्म्मददमनि। शबरि किराति मातंगि ॐ द्रं द्रं ज्रं ज्रं क्रं क्रं तुरु तुरु ॐ द्रं कुरु कुरु। ये मां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं परोक्षं वा तान् सर्वान् दम दम मर्दय मर्दय तापय तापय गोपय पातय पातय शोषय शोषय उत्साद उत्सादव ब्रह्माणि वैष्णवि माहेश्वरि कौमारि वाराहि नारसिंहि ऐन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि वैनायिकि औपेन्द्रि आग्नेयि चण्डि नैर्ऋति वायव्ये सौम्ये ऐशानि ऊर्ध्वमधोरक्ष प्रचंडविद्ये इन्द्रोपेन्द्र भगिनि। ॐ नमो देवि जये विजये शांति स्वस्ति-तुष्टि-पुष्टि-विवर्द्धिनि। कामांकुशे कामदुघे सर्वकामवरप्रदे। सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाहा। आकर्षणि आवेशनि। ज्वालामालिनि रमणि रामणि, धरणि धारनणि, तपनि तापिनि, मदनि मादिनि, शोषणि संमोहिनि नीलपताके महानीले महागौर्रि महाश्रिये। महाचांद्रि महासौरि महामायूरि आदित्यरश्मि जाह्नवि। यमघंटे किणि किणि चिन्तामणि। सुगन्धे सुरभे सुरासुरोत्पन्ने सर्वकामदुघे यद्यथा मनीषितं कार्यं तन्मम सिद्ध्यतु स्वाहा। ॐ स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः

स्वाहा। ॐ स्वः स्वहा। ॐ महः स्वाहा। ॐ जनः स्वाहा। ॐ तपः स्वाहा। ॐ सत्यं स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। यत एववागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहेत्योम्। अमोघैषा महाविद्या वैष्णवी चापराजिता। स्वयं विष्णुप्रणीता च सिद्धेयं पाठतः सदा। एषा महाबला नाम कथिता तेऽपराजिता। नानया सदृशी रक्षा त्रिषु लोकेषु विद्यते। तमोगुणमयी साक्षाद्रौद्री शक्तिरियं मता। कृतान्तोऽपि यतो भीतः पादमूले व्यवस्थितः। मूलधारे न्यसेदेतां रात्रावेनां च संस्मरेत्। नीलजीमूतसंकाशां तडित्कपिलकेशिकाम्। उद्यदादित्यसंकाशां नेत्रत्रय-विराजिताम्। शक्तिं त्रिशूलं शंखं च पानपात्रं च विभ्रतीम्। व्याघ्रचर्मपरीधानां किंकिणीजालमण्डिताम्। धावंतीं गगनस्यांतः तादुकाहितपादकाम्। दंष्ट्राकरालवदनां व्यालकुण्डलभूषिताम्। व्यात्तवक्त्रां ललज्जिह्वां भृकुटीकुटिलालकाम्। स्वभक्तद्वेषिणां रक्तं पिबन्तीं पानपात्रतः। सप्तधातून् शोषयन्तीं क्रूरदृष्ट्या विलोकनात्। त्रिशूलेन च तज्जिह्वां कीलयनतीं मुहुर्मुहः। पाशेन बद्ध्वा तं साधमानयन्तीं तदन्तिके। अर्द्धरात्रस्य समये देवीं ध्यायेन्महाबलाम्। यस्य यस्य बदेन्नाम जपेन्मन्त्रं निशान्तके। तस्य तस्य तथावस्थां कुरुते सापि योगिनी। ॐ बले महाबले असिद्धसाधनी स्वाहेत्या अमोघां पठति सिद्धां श्रीवैष्णवीम्।। श्रीमद्पराजितविद्यां ध्यायेत्। दुःस्वप्ने दुरारिष्टे च दुर्निमित्ते तथैव च। व्यवहारे भेवेत्सिद्धिः पठेद्विघ्नोपशान्तये।।

यदत्र पाठे जगदम्बिके मया विसर्गबिन्द्वऽक्षरहीनमीडितम्।

ततस्तु सम्पूर्णतमं प्रयान्तु में संकल्पसिद्धिस्तु सदैव जायताम्॥१॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोंसि महेश्वरि।
यादृशसि महादेवी तादृशायै नमो नमः॥

गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र

अगर व्यक्ति संकट में है, चाहे किसी प्रकार का भी संकट हो इस स्तोत्र का पाठ करने से संकट से निवृत्त होकर इष्ट सिद्धि शीघ्र होती है।

श्री शुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्धया समाधाय मनो हृदि।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम्॥ १॥

गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम्।
पुरूषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि॥ २॥
यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम्।
योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम्॥ ३॥
यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं क्वचिद्विभातं क्व च तत्तिरोहितम्।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः॥४॥
कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः॥ ५॥
न यस्य देवा ऋषयः पदं विदुर्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु॥ ६॥
दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः।

चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः ॥ ७ ॥
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा।
तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति ॥ ८ ॥
तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ॥ ९ ॥
नमः आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि ॥ १० ॥
सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे ॥ ११ ॥
नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ॥ १२ ॥
क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ॥ १३ ॥
सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः ॥ १४ ॥
नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय नमोऽपवर्गाय परायणाय ॥ १५ ॥
गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागमस्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि ॥ १६ ॥
मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीतप्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ॥ १७ ॥
आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय
ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥ १८ ॥

यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम् ॥ १९ ॥
एकान्तिनो यस्य न कंचनार्थं वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः ॥ २० ॥
तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूरमनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ॥ २१ ॥
यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः।
नामरूपविभेदेन फल्गव्या च कलया कृताः ॥ २२ ॥
यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्तयसकृत् स्वरोचिषः।
तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः ॥ २३ ॥
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ् न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन् निषेधशेषो जयतादशेषः ॥ २४ ॥
जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ॥ २५ ॥
सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम्।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम् ॥ २६ ॥
योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम् ॥ २७ ॥
नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेगशक्तित्रयायाखिलधीगुणाय।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ॥ २८ ॥
नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम्।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ॥ २९ ॥
एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात्

तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत्॥ ३०॥
तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः
स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः।
छन्दोमयेन गरूडेन समुह्यमान-
श्चक्रायधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः॥ ३१॥
सोऽन्तस्सरस्युरूबलेन गृहीत आर्त्तो
दृष्ट्वा गरूत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम्।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रा-
न्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते॥ ३२॥
तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य
सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं
सम्पश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम्॥ ३३॥

श्री कनकधारा स्तोत्र

इसके श्रद्धापूर्वक पाठ-अनुष्ठान से ऋण मुक्ति और लक्ष्मी प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि आचार्य शंकर ने इसका पाठ करके स्वर्ण वर्षा कराई थी।

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः॥ १॥
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।

माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥ २ ॥
विश्वामरेन्द्र पदविभ्रमदानदक्षम्
आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दी
वरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥ ३ ॥
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दम्
आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै
भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥ ४ ॥
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे
या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ५ ॥
कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे
स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि
मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ ६ ॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं
मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥ ७ ॥
दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम्
अस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।

दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥८॥
इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या
त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं
कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥९॥
गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥१०॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पुष्ट्यै
नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥११॥
नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥१२॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव
मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥१३॥
यत्कटाक्षसमुपासना विधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।

संतनोति वचनाङ्गमानसैस्त्वां
मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥ १४ ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ १५ ॥
दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट
स्ववर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष
लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥ १६ ॥
कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥ १७ ॥
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥ १८ ॥

लक्ष्मी स्तोत्र

जय पद्मपलाशाक्षि जय त्वं श्रीपतिप्रिये ।
जय मातर्महालक्ष्मि संसारार्णवतारिणी ॥ १ ॥
महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥ २ ॥

पद्मालये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं च सर्वदे।
सर्वभूतहितार्थाय वसुवृष्टिं सदा कुरु॥३॥
जगन्मातर्नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।
दयावति नमस्तुभ्यं विश्वेश्वरि नमोऽस्तु ते॥४॥
नमः क्षीरार्णवसुते नमस्त्रैलोक्याधारिणी।
वसुवृष्टे नमस्तुभ्यं रक्ष मां शरणागतम्॥५॥
रक्ष त्वं देवदेवेशि देवदेवस्य वल्लभे।
दरिद्रात्त्राहि मां लक्ष्मि कृपां कुरु ममोपरि॥६॥
नमस्त्रैलोक्यजननि नमस्त्रैलोक्यपावनि।
ब्रह्मादयो नमस्ते त्वां जगदानन्ददायिनी॥७॥
विष्णु प्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धिते।
आर्तिहन्त्रि नमस्तुभ्यं समृद्धिं कुरु मे सदा॥८॥
अब्जवासे नमस्तुभ्यं चपलायै नमो नमः।
चञ्चलायै नमस्तुभ्यं ललितायै नमो नमः॥९॥
नमः प्रद्युम्नजननि मातस्तुभ्यं नमो नमः।
परिपालय भो मातर्मां तुभ्यं शरणागतम्॥१०॥
शरण्ये त्वां प्रपन्नोऽस्मि कमले कमलालये।
त्राहि त्राहि महालक्ष्मि परित्राणपरायणे॥११॥
पाण्डित्यं शोभते नैव न शोभन्ति गुणा नरे।
शीलत्वं नैव शोभते महालक्ष्मि त्वया बिना॥१२॥
तावद्विराजते रूपं तावच्छीलं विराजते।
तावद्गुणा नराणां यावल्लक्ष्मीः प्रसीदति॥१३॥
लक्ष्मित्वयालंकृतमानवा ये पापैर्विमुक्ता नृपलोकमान्याः।
गुणैर्विहीना गुणिनो भवन्ति दुःशीलिनः शीलवतां वरिष्ठाः॥१४॥

लक्ष्मीर्भूषयते रूपं लक्ष्मीर्भूषयते कुलम्।
लक्ष्मीर्भूषयते विद्यां सर्वाल्लक्ष्मीर्विशिष्यते॥ १५॥
लक्ष्मि त्वद्गुणकीर्तनेन कमलाभूर्यात्यलं जिह्मतां।
रुद्राद्या रविचन्द्रदेवपतयो वक्तुं च नैव क्षमाः।
अस्माभिस्तव रूपलक्षणगुणान्वक्तुं कथं शक्यते।
मातर्मां परिपाहि विश्वजननि कृत्वा ममेष्टं ध्रुवम्॥ १६॥
दीनार्तिभीतं भवतापपीडितं धनैर्विहीन तव पार्श्वमागतम्।
कृपानिधित्वान्मम लक्ष्मि सत्वरं धनप्रदानाद्धननायकं कुरु॥ १७॥
मां विलोक्य जननि हरिप्रिये निर्धनं तव समीपमागतम्।
देहि मे झटिति लक्ष्मि कराग्रं वस्त्रकाञ्चनवरान्नमद्भुतम्॥ १८॥
त्वमेव जननी लक्ष्मि पिता लक्ष्मि त्वमेव च॥ १९॥
त्राहि त्राहि महालक्ष्मि त्राहि त्राहि सुरेश्वरि।
त्राहि त्राहि जगन्मातर्दरिद्रात्त्राहि वेगतः॥ २०॥
नमस्तुभ्यंजगद्धात्रि नमस्तुभ्यं नमो नमः।
धर्माधारे नमस्तुभ्यं नमः सम्पत्तिदायिनी॥ २१॥
दरिद्रार्णवमग्नोऽहं निमग्नोऽहं रसातले।
मज्जन्तं मां करे धृत्वा सूद्धर त्वं रमे द्रुतम्॥ २२॥
किं लक्ष्मि बहुनोक्तेन जल्पितेन पुनः पुनः।
अन्यन्मे शरणं नास्ति सत्यं सत्यं हरिप्रिये॥ २३॥
एतच्छ्रुत्वाऽगस्तिवाक्यं हृष्यमाणा हरिप्रिया।
उवाच मधुरां वाणीं तुष्टाहं तव सर्वदा॥ २४॥

लक्ष्मी उवाच

यत्त्वयोक्तमिदं स्तोत्रं यः पठिष्यति मानवः।
शृणोति च महाभागस्तस्याहं वशवर्तिनी॥ २५॥

नित्यं पठति यो भक्त्या त्वलक्ष्मीस्तस्य नश्यति।
रणश्च नश्यते तीव्रं वियोगं नैव पश्यति॥ २६॥
यः पठेत्प्रातरुत्थाय श्रद्धा-भक्तिसमन्वितः।
गृहे तस्य सदा स्थास्ये नित्यं श्रीपतिना सह॥ २७॥
सुखसौभाग्यसम्पन्नौ मनस्वी बुद्धिमान् भवेत्।
पुत्रवान् गुणवान् श्रेष्ठो भोगभोक्ता च मानवः॥ २८॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं लक्ष्म्यगस्तिप्रकीर्तितम्।
विष्णुप्रसादजननं चतुर्वर्गफलप्रदम्॥ २९॥
राजद्वारे जयश्चैव शत्रोश्चैव पराजयः।
भूतप्रेतपिशाचानां व्याघ्राणां न भयं तथा॥ ३०॥
न शस्त्रानलतोयौघाद्भयं तस्य प्रजायते।
दुर्वृत्तानां च पापानां बहुहानिकरं परम्॥ ३१॥
मन्दुराकरिशालासु गवां गोष्ठे समाहितः।
पठेत्तद्दोषशान्त्यर्थं महापातकनाशनम्॥ ३२॥
सर्वसौख्यकरं नृणामायुरारोग्यदं तथा।
अगतिमुनिना प्रोक्तं प्रजानां हितकाम्यया॥ ३३॥

श्री हनुमल्लांगूलास्त्र स्तोत्र

इस स्तोत्र का नित्य पाठ करने से साधक के विरोधी दुश्मन दब जाते हैं तथा इष्ट कार्य की सिद्धि हाती है। रोग आदि खत्म हो जाता है। इस स्तोत्र का एक नाम शंत्रुजय स्तोत्र भी है। इसको विधिवत हनुमान जी की पूजा कर संकल्प पूर्वक इष्ट कार्य सिद्धि हेतु ११ पाठ करना चाहिये तथा १ पाठ से हवन करना चाहिए। सर्वप्रथम निम्नांकित विनियोग हाथ में जल लेकर करना चाहिये—

ओं अस्य श्री हनुमल्लांगूल शत्रुन्जय स्तोत्र मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री हनुमान रूद्रो देवता हं बीजं स्वाहा शक्तिः, हा हा हा इति कीलकम् मम् सर्वारक्षयार्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद करन्यास करे—

ओं ह्रीं रामदूताय तर्जनीभ्यां नमः,
ओं ह्रं अक्षयकुमार विध्वंसकाय मध्यमाभ्यां नमः।
ओं ह्रैं लंकाविदाहकाय अनामिकाभ्यां नमः,
ओं ह्रौं रूद्रावताराय कनिष्ठकाभ्यां नमः।
ओं ह्रः सकलरिपु संहारणाय करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः,
ओं ह्रां आंजनेयाय हृदयाय नमः।
ओं ह्रीं रामदूताय शिरसे स्वाहा,
ओं ह्रं अक्षयकुमार विध्वंसकाय शिखायै वषट्।
ओं ह्रैं लंकाविदाहकाय कवचाय हुम्,
ओं ह्रौं रूद्रावताराय नेत्राभ्यां वौषट्।
ओं ह्रः सकलरिपु संहारणाय अस्त्राय फट्,
ओं ऐं श्रौं ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रौं हस्फ्रें खफ्रें,
हस्त्रौं हस्ख्फ्रें ह्रसौं नमो हनुमते।
त्रैलोभ्याक्रमण पराक्रम श्रीराम भक्त मम परस्य च,
सर्व शत्रुन् चतुर्वर्ण सम्भवान पुंस्त्रीनपुंसकान।
भूत भविष्यद् वतथानान् दूरस्थान,
पुंस्त्रीनपुंसकान् भूत भविष्यद् वर्तभानान् दूरस्थान।
समीपस्थान् नाना नामधेयान् नाना संकट जातीयान्-
कलत्रपुत्रमित्रमृत्य बन्धु सुहृत्समेतान्,
प्रभुशक्ति सहितान् धन-धान्यादि संपत्तियतान्।

राज्ञो राजसेवकान् मंत्रि सचि सखीना त्यन्तिकान्,
क्षणेन त्वष्टया एतद् दिनावधि नानोपायर मारय-मारय
अस्त्रैः छेदय छेदय अग्निना ज्वालय ज्वालय दाहय दाहय,
अक्षयकुमारवत् पादतलाक्रमणेन आत्रोटय आत्रोटय।
घातय घातय भक्तजनवत्सल सीता-थोक पहारक,
सर्वत्र मामेन च रक्ष रक्ष हा हा हा हुं हुं हुं।
भूत संघै सह भक्षय भक्षय क्रुद्ध चेतसा,
नखैर्विदारय विदारद दाशादशमादू उच्चाटाय उच्चाटाय।
पिशाचवद् भ्रंशय भ्रंशय, घे घे घे हुं हुं हुं फट् स्वाहा।
ओं नमो भगवते श्री हनुमते महाबल पराक्रमाय,
महाविपत्ति निवारणाय भक्त-जन मनः सकल्पनाय।
कल्पद्रुमाय दुष्टजन मनोरथः स्तम्भनाय,
प्रभंजन प्राणप्रियाय स्वाहा।

अथ ध्यानम्

श्रीमन्तं हनुमन्तमान्त रिपुमिद् भूमृत्तनुभ्राजितं,
बाल्गाद्-बालधिबद्धवैरिनिचयं चामिकटाद्रिप्रभम्।
रोषारक्त-पिशंगः नेत्र-नलिनं भ्रूमंगमंग-स्फुटत्,
प्रौद्यच्चण्ड-मयूख-मण्डल मुखं दुःखापहं दुःखिनाम्॥ १॥
कौपीनं कटिसूत्र-मौज्यजिन युग्देहं विदेहात्मजा,
प्राणाधीशयदारविन्द निहतं स्वान्तं कृतान्तं द्विषाम्।
ध्यात्वैवं समरांगणे स्थितमकानीय स्वहत्पंकजे,
सम्पूज्याखिल पूजनोक्तविधिना सम्प्रार्थयेत्प्रार्थितम्॥ २॥
ओं हनुमन् अन्जनीसूनो महाबलपराक्रम,

लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥ ३ ॥
अक्षक्षपण पिंगाक्षदितिजासुक्षयङ्कर,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥ ४ ॥
मर्कटाधिप मार्तण्डमण्डलग्रासकारक,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥ ५ ॥
रूद्रावतार संसारदुःखभारापहारक,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥ ६ ॥
श्रीरामरचणाम्भोज मधुपापितमानस,
लालललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥ ७ ॥
बालिकाल कोटदक्रान्त सुग्रीवोन्मोचन प्रभो,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय ॥ ८ ॥
सीता विरह वारीशम् अग्नि सीते शतारक,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय ॥ ९ ॥
रक्षोराज प्रजापाग्नि दहयमान जगद्धितु,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥ १० ॥
ग्रस्ताशेष जगत्स्वास्थ राक्षसाम्भोधिमन्दर,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय ॥ ११ ॥
पुच्छगुच्छ स्फुप्द्धूम ध्वजदग्ध निकेतन,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय ॥ १२ ॥
जगन्मनोदुरूल्लंघ्य पारावार विलंघन,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय ॥ १३ ॥
स्मृति मात्र समस्तेष्टपूरणा! प्रणतप्रिय,

लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१४॥
रात्रिचरचभूराशि कर्त्तनैक विकतेन,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१५॥
जानकी जानकी जानी प्रेम पात्र परन्तप,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपाताय॥१६॥
भीमादिक महावीर वीरवेशादितारक,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१७॥
वैदेहि विरहाक्रान्तं रामरोषं कविग्रह,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१८॥
वज्रांगनखदंष्ट्रेश वज्रिवज्रावकुण्ठन्,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१९॥
अखर्व गर्व गन्धर्व पर्वतोद्भेदनेश्वर,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥२०॥
लक्ष्मण प्राण संस्त्राणं त्रातः तीक्ष्णकरान्वय,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥२१॥
रामादि विप्रयोगार्त भरताद्यार्तिनाशन,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥२२॥
द्रोणाचल सुभत्क्षेय समुत् क्षिप्तारिभैव,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥२३॥
सीताशीर्वाद सम्पन्न समस्ताभ्यवांछित,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥२४॥
वात पित्त कफ श्वास ज्वरादि व्याधिनाशन,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥२५॥
ओं इत्येवमश्वतथतलोपविष्टः शत्रुंजयं नाम पठेत्स्तवं यः,
स शीघ्रमेवास्तसमस्त शत्रु, प्रमोदत्ते मरूतज प्रसीदात्॥ २६॥

कवच पाठ

नृसिंह कवच

अभिचार प्रयोगों से बचने के लिये गजेन्द्र मोक्ष का प्रयोग सम्पुटित शतचंडी, प्रत्यंगिरा और नृसिंह कवच का प्रयोग किया जाता है। अगर कोई अभिचार प्रयोग के चपेट में आ जाए उनकी रक्षा भी नृसिंह कवच से होती है। इसे नीचे दिया जा रहा है।

किसी भी माह की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि के दिन शुभ नक्षत्र रहने पर तथा शुभ योग रहने पर गुरु एवं शुक्रोदय काल में इस स्तोत्र को भोजपत्र पर या सादे कागज पर लिख कर अष्टगंध से अनार के कलम से लिखकर षोडशोपचार से पूजा कर दें। साथ ही कवच पर ध्यान लगाकर १०८ बार पाठ कर दें। इस स्तोत्र के प्रत्येक मन्त्र से घी का हवन ११ बार कर दें। तत्पश्चात् सोना, चाँदी या ताँबा की ताबीज में स्तोत्र को भरकर गले या दाहिने हाथ में धारण करें, मन्त्र काला सूत्र में पहनें। इससे सब प्रकार की पराकृत व्याधि जाती रहती है। दुष्टों के द्वारा किया हुआ अभिचार कर्म समाप्त होकर व्यक्ति निरोग हो जाता है।

नारद उवाच

इन्द्राणि देव सन्देश इड्येश्वर जगत्पते,

महाविष्णु नृसिंह कवचं ब्रुहि मे प्रभो।
यस्य प्रपठनात् विद्वान् त्रैलोक्ये विजयी भवेत्।

ब्रह्मा उवाच

श्रणु नारद वक्ष्यामि पुत्रश्रेष्ठ तपोधन।
कवच नरसिंहस्य त्रैलोक्ये विजयी भवेत्॥
स्त्रष्टाहं जगता वत्स पठनात् धारणात् यतः।
लक्ष्मी जगत् क्रयं पाति संहर्त्ता च महेश्वरः॥
पठनात् धारणात् देवाः वणवश्च दिगोश्वरः।
ब्रह्ममन्त्रमयं वक्ष्ये भ्रान्त्यादि विनिवारकम्॥
यस्य प्रसादात् दुर्वासः त्रैलोक्य विजयी भवेत्।
पठनात् धारणात् यस्य शास्त्रा च क्रोध भैरवः॥
त्रैलोक्ये विजयस्यापि कवचस्य प्रजापतिः।
ऋषिः छन्दस्तु गायत्री नृसिंहो देवता विभुः॥
क्ष्रौं बीजं मे सिरः पातु चन्द्रवर्णी महामनुः।
ओं उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्॥
नृसिंह भीषणं मृत्युमृत्यु नमाम्यहम्।
द्वात्रिशद अक्षरो मंत्रो मंत्रराजः सुरद्रुमः॥
कंठं पातु ध्रुवं श्रीं हृद् भगवते चक्षुषि मम्।
नरसिंहाय च ज्वाला मालिने पातु कर्णकम्॥
दीप दृष्ट्राय च तथा अग्निनेत्राय नासिकाम्।
सर्व रक्षोहनाय च तथा सर्वभूत हिताय च॥
सर्व ज्वर विनाशाय दह दह पदद्वयम्।
रक्ष रक्ष वक्रमन्त्रः स्वाहा पातुं मुखं मम॥

तारादि रामचन्द्राय नमः पातु हृद मम।
क्लीं प्रायात्पाश्र्वयुग्मं च तारो नमः पदं ततः॥
नारायणाय नाभिं च आं ह्रीं क्रों श्रों च हुंम् फट्।
षडक्षरः कटि पातु ओं नमो भगवते पदम्॥
वासुदेवाय च पृष्ठं क्लीं कृष्णाय क्लीं उरूद्वयम्।
क्लीं कृष्णाय सदा पातु जानुनी च मनुत्तमः॥
क्लीं क्लीं क्लीं श्यामलांगाय नमः पायात्पद।
क्षौं नृसिंहाय क्षों च सर्वांगे मे सदावतु॥
इति तै कथितं वत्स सर्व मन्त्रोद्य विग्रहम्।
तव स्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कष्यचित्।
गुरूपूजां विधायाश गृहणीयात् कवचं ततः॥

श्री नारायण कवच

न्यास

सर्वप्रथम श्रीगणेशजी तथा भगवान् नारायण को नमस्कार करके नीचे लिखे प्रकार से न्यास करे—

अङ्गन्यासः

ॐ ॐ नमः—पादयोः (दाहिने हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ इन दोनों को मिलाकर दोनों पैरों का स्पर्श करें)।

ॐ नं नमः—जानुनोः (दाहिने हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ इन दोनों को मिलाकर दोनों घुटनों का स्पर्श करे)।

ॐ मों नमः—ऊर्वोः (दाहिने हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ इन दोनों

को मिलाकर दोनों पैरों की जाँघ का स्पर्श करें।

ॐ नां नमः—उदरे (दाहिने हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ इन दोनों को मिलाकर पेट का स्पर्श करे)।

ॐ रां नमः—हृदि (मध्यमा-अनामिका-तर्जनी से हृदय का स्पर्श करे)।

ॐ यं नमः—उरसि (मध्यमा-अनामिका-तर्जनी से छाती का स्पर्श करे)।

ॐ णां नमः—मुखे (तर्जनी-अँगूठे के संयोग से मुख का स्पर्श करे)।

ॐ यं नमः—शिरसि (तर्जनी-मध्यमा के संयोग से सिर का स्पर्श करे)।

करन्यासः

ॐ ॐ नमः—दक्षिणतर्जन्याम् (दाहिने अँगूठे से दाहिनी तर्जनी के सिरे का स्पर्श करे)।

ॐ नं नमः—दक्षिणमध्यमायाम् (दाहिने अँगूठे से दाहिने हाथ की मध्यमा अँगुली का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ मों नमः—दक्षिणानामिकायाम् (दाहिने अँगूठे से दाहिने हाथ की अनामिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ भं नमः—दक्षिणकनिष्ठिकायाम् (दाहिने अँगूठे से दाहिने हाथ की कनिष्ठिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ गं नमः—वामकनिष्ठिकायाम् (बायें अँगूठे से बायें हाथ की कनिष्ठिका का ऊपरवाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ **वं नमः—वामानामिकायाम्** (बायें अँगूठे से बायें हाथ की अनामिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ **तें नमः—वाममध्यमायाम्** (बायें .अँगूठे से बायें हाथ की मध्यमा का ऊपरवाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ **वां नमः—वामतर्जन्याम्** (बायें अँगूठे से बायें हाथ की तर्जनी का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ **सुं नमः—दक्षिणाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि** (दाहिने हाथ की चारों अँगुलियों से दाहिने हाथ के अँगूठे का ऊपरवाला पोर छूए)।

ॐ **दें नमः—दक्षिणाङ्गुष्ठाधः पर्वणि** (दाहिने हाथ की चारों अँगुलियों से दाहिने हाथ के अँगूठे हा नीचे वाला पोर छूए)।

ॐ **वां नमः—वामाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि** (बांयें हाथ की चारों अँगुलियों से बायें अँगूठे के ऊपर वाला पोर छूए)।

ॐ **यं नमः—वामाङ्गुष्ठाधः पर्वणि** (बायें हाथ की चारों अँगुलियों से बायें हाथ के अँगूठे का नीचे वाला पोर छूए)।

विष्णुषडक्षरन्यासः

ॐ **ॐ नमः—हृदये** (तर्जनी-मध्यमा एवं अनामिका से हृदय का स्पर्श करे)।

ॐ **विं नमः—मूर्धिनि** (तर्जनी-मध्यमा के संयोग से सिर का स्पर्श करे)।

ॐ **षं नमः—भ्रुवोर्मध्ये** (तर्जनी-मध्यमा से दोनों भौंहों का स्पर्श करे)।

ॐ **णं नमः—शिखायाम्** (अँगूठे से शिखा का स्पर्श करे)।

ॐ वें नमः—नेत्रयोः (तर्जनी-मध्यमा से दोनों नेत्रों का स्पर्श करे)।

ॐ नं नमः—सर्वसंधिषु (तर्जनी-मध्यमा और अनामिका से शरीर के सभी जोड़ों जैसे—कंधा, केहुनी, घुटना आदि का स्पर्श करे)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—प्राच्याम् (पूर्व की ओर चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—आग्नेय्याम् (अग्निकोण में चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—दक्षिणस्याम् (दक्षिण की ओर चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—नैर्ऋत्ये (नर्ऋत्यकोण में चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—प्रतीच्याम् (पश्चिम की ओर चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—वायव्ये (वायुकोण में चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—उदीच्याम् (उत्तर की ओर चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—ऐशान्याम् (ईशानकोण में चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—ऊर्ध्वायाम् (ऊपर की ओर चुटकी बजाये)।

ॐ अस्त्राय फट्—अधरायाम् (नीचे की ओर चुटकी बजाये)।

श्री नारायण कवच प्रारम्भ

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम्॥१॥

भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम्।
यथाऽऽततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽजयन्मृधे॥ २॥

राजा परीक्षित ने पूछा—भगवन्! देवराज इन्द्र ने जिससे सुरक्षित होकर शत्रुओं की चतुरंगिणी सेना को खेल-खेल में अनायास ही जीतकर त्रिलोकी की राजलक्ष्मी का उपभोग किया, आप उस नारायणकवच को मुझे सुनाइये और यह भी बतलाइये कि उन्होंने उससे सुरक्षित होकर रणभूमि में किस प्रकार आक्रमणकारी शत्रुओं पर विजय प्राप्त की।

श्री शुक उवाच

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु॥ ३॥

श्रीशुकदेवजी ने कहा—परीक्षित्! जब देवताओं ने विश्वरूप को पुरोहित बना लिया, तब देवराज इन्द्र के प्रश्न करने पर विश्वरूप ने उन्हें नारायणकवच का उपदेश किया। तुम एकाग्रचित्त से उसका श्रवण करो।

विश्वरूप उवाच

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः।
कृतस्वाङ्गकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः॥ ४॥
नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते।
पादयोर्जानुनोरूर्वोरूदरे हृद्यथोरसि॥ ५॥
मुख शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत्।
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा॥ ६॥

विश्वरूप ने कहा—देवराज इन्द्र! भय का अवसर उपस्थित

होने पर नारायणकवच धारण करके अपने शरीर की रक्षा कर लेनी चाहिये। उसकी विधि यह है कि पहले हाथ-पैर धोकर आचमन करे, फिर हाथ में कुश की पवित्री धारण करके उत्तर मुँह बैठ जाय। इसके बाद कवच धारण पर्यन्त और कुछ न बोलने का निश्चय करके पवित्रता से 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इन मन्त्रों के द्वारा हृदयादि अंगन्यास तथा अंगुष्ठादि कर न्यास करे। पहले 'ॐ नमो नारायणाय' इस अष्टाक्षर मन्त्र के ॐ आदि आठ अक्षरों का क्रमशः पैरों, घुटनों, जाँघों, पेट, हृदय, वक्षःस्थल, मुख और सिर में न्यास करें। अथवा पूर्वोक्त मन्त्र के यकार से लेकर ॐकार पर्यन्त आठ अक्षरों का सिर से आरम्भ करके उन्हीं आठ अंगों में विपरीत क्रम से न्यास करें।

करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया।
प्रणवादियकारान्तयङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु ॥ ७ ॥

तदनन्तर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'—इस द्वादशाक्षर मन्त्र के ॐ आदि बारह अक्षरों का दायीं तर्जनी से बायीं तर्जनी तक दोनों हाथ की आठ अँगुलियों और दोनों अँगूठों की दो-दो गाँठों में न्यास करें।

न्यसेद्धृदय ओङ्कारं विकारमनु मूर्धनि।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत्॥ ८ ॥
वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसंधिषु।
मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः॥ ९ ॥
सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्।
ॐ विष्णवे नम इति॥ १० ॥

फिर 'ॐ विष्णवे नमः' इस मन्त्र के पहले अक्षर 'ॐ' का हृदय में, 'वि' का ब्रह्मरन्ध्र में, 'ष' का भौहों के बीच में, 'ण' का चोटी में 'वे' का दोनों नेत्रों में और 'न' का शरीर की सब गाँठों में न्यास करे। तदनन्तर 'ॐ मः अस्त्राय फट्' कहकर दिग्बन्ध करे। इस प्रकार न्यास करने से इस विधि को जानने वाला पुरुष मन्त्र स्वरूप हो जाता है।

आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम्।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत्॥ ११॥

इसके बाद समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण इष्टदेव भगवान का ध्यान करे और और अपने को भी तद्रूप ही चिन्तन करे। तत्पश्चात् विद्या, तेज और तप स्वरूप इस कवच का पाठ करे।

ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे।
दरारिचर्मासिगदेषुचापपाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः॥ १२॥

भगवान् श्रीहरि गरूड़जी की पीठ पर अपने चरण-कमल रखे हुए हैं। अणिमादि आठों सिद्धियाँ उनकी सेवा कर रही हैं। आठ हाथों में शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष और पाश (फंदा) धारण किये हुए हैं। वे ही ॐकार स्वरूप प्रभु सब प्रकार से सब ओर से मेरी रक्षा करें।

जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्तिर्यादोगणेभ्यो वरूणस्य पाशात्।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात् त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः॥ १३॥

मत्स्यमूर्ति भगवान् जल के भीतर जलजन्तुओं से और वरूण के पाश से मेरी रक्षा करें। माया से ब्रह्मचारी का रूप धारण करने

वाले वामन भगवान स्थलपर और विश्व रूप श्रीत्रिविक्रमभगवान् आकाश में मेरी रक्षा करें।

दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः॥ १४॥

जिनके घोर अट्टहास करने पर सब दिशाएँ गूँज उठी थीं और गर्भवती दैत्य-पत्नियों के गर्भ गिर गये थे, वे दैत्ययूथपतियों के शत्रु भगवान नृसिंह किले, जंगल, रणभूमि आदि विकट स्थानों में मेरी रक्षा करें।

रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान्॥ १५॥

अपनी दाढ़ों पर पृथ्वी को उठा लेनेवाले यज्ञमूर्ति वराहभगवान् मार्ग में, परशुरामजी पर्वतों के शिखरों पर और लक्ष्मणजी के सहित भरत के बड़े भाई भगवान् रामचन्द्र प्रवास के समय मेरी रक्षा करें।

मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादान्नारायणः पातु नरश्च हासात्।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः
पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात्॥ १६॥

भगवान नारायण मारण-मोहन आदि भयंकर अभिचारों और सब प्रकार के प्रमादों से मेरी रक्षा करें। ऋषिश्रेष्ठ नर गर्व से, योगेश्वर भगवान दत्तात्रेय योग के विघ्नों से और त्रिगुणाधिपति भगवान कपिल कर्मबन्धनों से मेरी रक्षा करें।

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवाद्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात्।
देवर्षिवर्यः पुरूषार्चनान्तरात् कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात्॥ १७॥

परमर्षि सनत्कुमार कामदेव से, हयग्रीव भगवान मार्ग में चलते समय देवमूर्तियों को नमस्कार आदि न करने के अपराध से, देवर्षि नारद सेवापराधों से और भगवान कच्छप सब प्रकार के नरकों से मेरी रक्षा करें।

धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद् द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा।
यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद् बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ॥ १८ ॥

भगवान धन्वन्तरि कुपथ्य से, जितेन्द्रिय भगवान ऋषभदेव सुख-दुःख आदि भयदायक द्वन्द्वों से, यज्ञ भगवान लोकापवाद से, बलरामजी मनुष्यकृत कष्टों से और श्रीशेष जी क्रोध वशनामक सर्पों के गण से मेरी रक्षा करें।

द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद् बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात्।
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु धर्मावनायोरूकृतावतारः ॥ १९ ॥

भगवान श्रीकृष्णद्वैपायन व्यासजी अज्ञान से तथा बुद्धदेव पाखण्डियों से और प्रमाद से मेरी रक्षा करें। धर्म रक्षा के लिये महान अवतार धारण करने वाले भगवान कल्कि पापबहुल कलिकालके दोषों से मेरी रक्षा करें।

मां केशवो गदया प्रातरव्याद् गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणु।
नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्तिर्मध्यंदिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥ २० ॥

प्रातःकाल भगवान केशव अपनी गदा लेकर, कुछ दिन चढ़ जाने पर भगवान गोविन्द अपनी बाँसुरी लेकर, दोपहर के पहले भगवान नारायण अपनी तीक्ष्ण शक्ति लेकर और दोपहर को भगवान विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें।

देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा सायं त्रिधामावतु माधवो माम्।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः॥ २१॥

तीसरे पहर में भगवान मधुसूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें। सायंकाल में ब्रह्मा आदि त्रिमूर्तिधारी माधव, सूर्यास्त के बाद हृषीकेश, अर्धरात्रि के पूर्व तथा अर्धरात्रि के समय अकेले भगवान पद्भनाभ मेरी रक्षा करें।

श्रीवत्सधामापररात्र ईशः प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः।
दामोदरोऽव्यादनुसंध्यं प्रभाते विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः॥ २२॥

रात्रि के पिछले पहर में श्रीवत्सलाञ्छन श्रीहरि, उषाकाल में खड्गधारी भगवान जनार्दन, सूर्योदय से पूर्व श्रीदामोदर और सम्पूर्ण सन्ध्याओं में कालमूर्ति भगवान विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें।

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्।
दंदग्धि दंदग्ध्यरिसैन्यमाशु कक्षं यथा वातसखो हुताशः॥ २३॥

सुदर्शन! आपका आकार चक्र (रथ के पहिये) की तरह है। आपके किनारे का भाग प्रलयकालीन अग्नि के समान अत्यन्त-तीव्र है। आप भगवान की प्रेरणा से सब ओर घूमते रहते हैं। जैसे आग वायु की सहायता से सूखे घास-फूस को जला डालती है, वैसे ही आप हमारी शत्रु सेना को शीघ्र-से-शीघ्र जला दीजिये, जला दीजिये।

गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे निष्पिण्ढि निष्पिण्ढयजितप्रियासि।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षोभूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन्॥ २४॥

कौमौदकी गदा! आपसे छूटने वाली चिनगारियों का स्पर्श वज्र के समान असह्य है। आप भगवान अजित की प्रिया हैं और

मैं उनका सेवक हूँ। इसलिये आप कूष्माण्ड, विनायक, यक्ष, राक्षस, भूत और प्रेतादि ग्रहों को अभी कुचल डालिये, कुचल डालिये तथा मेरे शत्रुओं को चूर-चूर कर दीजिये।

त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृपिशाचविप्रग्रहवोरदृष्टीन्।
दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन्॥ २५॥

शंख श्रेष्ठ! आप भगवान श्रीकृष्ण के फूँकने से भयंकर शब्द करके मेरे शत्रुओं का दिल दहला दीजिये एवं यातुधान, प्रमथ, प्रेत, मातृका, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयावने प्राणियों को यहाँ से झटपट भगा दीजिये।

त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्यमीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम्॥ २६॥

भगवान की श्रेष्ठ तलवार! आपकी धार बहुत तीक्ष्ण है। आप भगवान की प्रेरणा से मेरे शत्रुओं को छिन्न-भिन्न कर दीजिये। भगवान की प्यारी ढाल! आपमें सैकड़ों चन्द्राकार मण्डल हैं। आप पापदृष्टि पापात्मा शत्रुओं की आँखें बंद कर दीजिये और उन्हें सदा के लिये अन्धा बना दीजिये।

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा॥ २७॥
सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात्।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः॥ २८॥

सूर्य आदि ग्रह, धूमकेतु (पुच्छल तारे) आदि केतु, दुष्ट मनुष्य, सर्पादि रेंगने वाले जन्तु दाढ़ों वाले हिंसक पशु, भूत-प्रेत आदि तथा पापी प्राणियों से हमें जो-जो भय हो और जो-जो

हमारे मंगल के विरोधी हों वे सभी भगवान के नाम, रूप तथा आयुधों का कीर्तन करने से तत्काल नष्ट हो जायें।

गरूडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः॥ २९॥

बृहद, रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की जाती है, वे वेदमूर्ति भगवान गरूड़ और विष्वक्सेनजी अपने नामोच्चारण के प्रभाव से हमें सब प्रकार की विपत्तियों से बचायें।

सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः।
बुद्धीन्द्रियमनः प्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः॥ ३०॥

श्रीहरि के नाम, रूप, वाहन, आयुध और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय, मन और प्राणों को सब प्रकार की आपत्तियों से बचायें।

यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत्।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः॥ ३१॥

जितना भी कार्य अथवा कारणरूप जगत है, वह वास्तव में भगवान ही हैं—इस सत्य के प्रभाव से हमारे सारे उपद्रव नष्ट हो जायें।

यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम्।
भूषणायुधलिङ्गाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया॥ ३२॥
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः।
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः॥ ३३॥

जो लोग ब्रह्म और आत्मा की एकता का अनुभव कर चुके हैं, उनकी दृष्टि में भगवान का स्वरूप समस्त विकल्पों भेदों से

रहित है, फिर भी वे अपनी माया शक्ति के द्वारा भूषण, आयुध और रूप नामक शक्तियों को धारण करते हैं। यह बात निश्चित रूप से सत्य है। इस कारण सर्वज्ञ, सर्वव्यापक भगवान श्रीहरि सदा-सर्वत्र सब स्वरूपों से हमारी रक्षा करें।

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्तादन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः।
प्रहापयंल्लोकभयं स्वनेन स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः॥ ३४॥

जो अपने भयंकर अट्टहास से सब लोगों के भय को भगा देते हैं और अपने तेज से सबका तेज ग्रस लेते हैं, वे भगवान नृसिंह दिशा-विदिशा में, नीचे-ऊपर, बाहर-भीतर सब ओर हमारी रक्षा करें।

मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम्।
विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान्॥ ३५॥

देवराज इन्द्र! मैंने तुम्हें यह नारायणकवच सुना दिया। इस कवच से तुम अपने को सुरक्षित कर लो। बस, फिर तुम अनायास ही सब दैत्य-यूथपतियों को जीत लोगे।

एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते॥ ३६॥

इस नारायणकवच को धारण करने वाला पुरुष जिसको भी अपने नेत्रों से देख लेता अथवा पैर से छू देता है, वह तत्काल समस्त भयों से मुक्त हो जाता है।

न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत्।
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित्॥ ३७॥

जो इस वैष्णवी विद्या को धारण कर लेता है, उसे राजा,

डाकू, प्रेत, पिशाचादि और बाघ आदि हिंसक जीवों से कभी किसी प्रकार का भय नहीं होता।

इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः।
योगधारणया स्वाङ्गं जहौ स मरूधन्वनि॥३८॥

प्राचीन काल की बात है, एक कौशिक गोत्री ब्राह्मण ने इस विद्या को धारण करके योगधारणा से अपना शरीर मरूभूमि में त्याग दिया।

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा।
ययौ चित्ररथः स्त्रीर्भिवृतो यत्र द्विजक्षयः॥३९॥

जहाँ उस ब्राह्मण का शरीर पड़ा था, उसके ऊपर से एक दिन गन्धर्वराज चित्ररथ अपनी स्त्रियों के साथ विमान पर बैठकर निकलें।

गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः।
स वालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात्॥ ४०॥

वहाँ आते ही वे नीचे की ओर सिर किये विमानसहित आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़े। इस घटना से उनके आश्चर्य की सीमा न रही। जब उन्हें वालखिल्य मुनियों ने बतलाया कि यह नारायणकवच धारण करने का प्रभाव है, तब उन्होंने उस ब्राह्मण देवता की हड्डियों को ले जाकर पूर्ववाहिनी सरस्वती नदी में प्रवाहित कर दिया और फिर स्नान करके वे अपने लोक को गये।

श्री शुक उवाच

य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः।
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात्॥४१॥

श्रीशुकदेवजी कहते हैं—परीक्षित्! जो पुरुष इस नारायण कवच को समय पर सुनता है और जो आदर पूर्वक इसे धारण करता है, उसके सामने सभी प्राणी आदर से झुक जाते हैं और वह सब प्रकार के भयों से मुक्त हो जाता है।

एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः।
त्रैलोक्यलक्ष्मी बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान्॥४२॥

परीक्षित्! शतक्रतु इन्द्र ने आचार्य विश्वरूपजी से यह वैष्णवी विद्या प्राप्त करके रणभूमि में असुरों को जीत लिया और वे त्रैलोक्यलक्ष्मी का उपभोग करने लगे।

श्री सुदर्शन कवच (१)

ऊपरी बाधा, अला-बला, भूत, भूतिनी, यक्षिणी, प्रेतिनी किसी भी तरह की ओपरी विपत्ति में सुदर्शन कवच रक्षा करता है। यह अद्वितीय तान्त्रिक शक्ति से युक्त है। अतः सुदर्शन चक्र की भांति पाठक की सदैव रक्षा करता है।

"ॐ अस्य श्री सुदर्शन कवच महामन्त्रस्य नारायण ऋषि, श्री सुदर्शनोदेवता, गायत्रीश्छन्दः दृष्टं दारय इति कीलकम, हन हन द्विषय इति बीजम्, सर्व शत्रु क्षयार्थे सुदर्शन स्तोत्रपाठे विनियोगः॥ १॥

अथन्यासः

ॐ नारायण ऋषये नमः शिरसे स्वाहा। ॐ गायत्रीश्छन्दसे नमः मुखे नेत्रत्रयायवौषट। ॐ दुष्टं दारय दारयेति कीलकाय नमः हृदये कवचायहुम्। ॐ हां ह्रीं हुं हूं द्विष इति बीजम् गुह्ये

शिखायै वषट् ॐ सुदर्शन ज्वलत्पावक संकाशेति कीलकाय सर्वांगे अस्त्राय फट् इति ऋष्यादि। पश्चान्मूलमन्त्रेण न्यासध्यानं कुयात्॥ २॥

अथ मूलमन्त्रः

"ॐ ह्रां ह्रीं नमो भगवते भो भो सुदर्शनचक्र दुष्टं दारय दारय दुरितं हन हन पापं मथ मथ आरोग्य कुरु कुरु हुं हुं फट् स्वाहा।" अनेन मूलमन्त्रेण पुरश्चरण कृत्यातदा आयुध सान्निध्यं भवति भवति॥ ३॥

अथ शत्रु नाशन प्रयोग मन्त्रः

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं सुदर्शनचक्रराजन् दुष्टान् दह दह सर्व-दुष्टान् भयं कुरु कुरु विदारय विदारय परमन्त्रान् ग्रासय ग्रासय भक्षय भक्षय द्रावय द्रावय हुं हुं फट्॥ ४॥

अथ मोहन मन्त्रः

ॐ हुं हन हन ह्रां ह्रां हन हन ओंकार हन हन ओं ह्रीं सुदर्शन चक्र सर्वजन वश्यं कुरु कुरु ठः ह्रा ठः ठः स्वाहा॥ ५॥

अथ लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग मन्त्रः

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रां ह्रां सुदर्शनचक्र ममगृहे अष्टसिद्धिं कुरु कुरु ऐं क्लीं स्वाहा॥ ६॥

अथ आकर्षण प्रयोग मन्त्रः

ॐ ह्रां ह्री ह्री क्ली क्ली क्ली जंभय जंभय अमुकं आकर्षय आकर्षय मम वश्यं ग्री ग्री कुरु कुरु स्वाहा॥ ७॥

ॐ ह्रां षोडशावारं पूरकं कृत्वा श्रों ह्रां त्रिवष्टि बारं कुंभकं कृत्वा ॐ ह्रां द्वात्रिंशद्वारं रेचक कुर्यात्। इति प्राणायामः।

श्री सुदर्शन कवच (२)

ॐ अस्य श्री सुदर्शनकवचमालामन्त्रस्य। श्रीलक्ष्मीनृसिंहः परमात्मा देवता। मम सर्वकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ क्षां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॐ सहस्रार अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हुं फट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ स्वाहा करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः एवं हृदयादि। ध्यानम् उपास्महे नृसिंहाख्यं ब्रह्मवेदान्तगोचरम्। भूयो लालित-संसारच्छेदहेतुं जगद्गुरुम्॥ मानस-पूजाः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। आकाशत्मिकं पुष्पं समर्पयामि यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। रं बह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि। सं सवात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि। नमस्करोमि। ॐ सुदर्शनाय नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों नमो भगवते प्रलयकालमहाज्वालाघोर-वीर-सुदर्शन-नारसिंहाय ॐ महाचक्रराजाय महाबलाय सहस्रकोटिसूर्यप्रकाशाय सहस्रशीर्षाय सहस्राक्षाय सहस्रपादाय संकर्षणत्मने सहस्रदिव्याश्र-सहस्रहस्ताय सर्वतोमुखज्ज्वलनज्वालामालावृताया विस्फुलिंगस्फोटपरिस्फोटित ब्रह्माण्ड भाणडाय महापराक्रमाय महोग्रविग्रहाय महाविराय महाविष्णुरूपिणे व्यतीतकालान्तकाय महाभद्ररौद्रावताराय मृत्युस्वरूपाय किरीटहार-केयूर-ग्रेवेय-कटकांगुलयी-

कटिसूत्र मजीरादिकनकमणिखचित दिव्यभूषणाय महाभीषणाय महाभीक्षया व्याहततेजोरूपनिधेय रक्त चण्डान्तक मण्डितमदोरुकुण्डादुर्निरीक्षणाण प्रत्यक्षाय ब्रह्मचक्र विष्णुचक्र-कालचक्र-भूमिचक्र-तेजोरूपाय आश्रितरक्षाय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् इति स्वाहा स्वाहा॥ (दो बार) भो भो सुदर्शन नारसिंह मां रक्षय रक्षय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥(दो बार) मम शत्रुन्नाशय नाशय ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्नश्चक्र प्रचोदयात्॥ (दो बार) ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल चंड चंड प्रचंड प्रचंड स्फुर प्रस्फुर घोर घोर घोरतर घोरतर चट चट प्रचटं प्रचटं प्रस्फुट दह कहर भग भिंधि हंधि खटट प्रचट फट जहि जहि पय सस प्रलयवा पुरुषाय रं रं नोत्रग्निरूपाय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् (दो बार) भो भो सुदर्शन नारसिंह माँ रक्षय रक्षय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार) एहि एहि आगच्छ आगच्छ भूतग्रह-प्रेतग्रह-पिशाचग्रह-ञनवग्रह कृतिमग्रह-प्रयोगग्रह-आवेशग्रह-आगतग्रह-अनागतग्रहान ब्रह्मग्रह-रुद्रग्रह-पाताल-निराकारग्रह-आचारअनाचारग्रह-ननजातिग्रह-भूचरग्रह-खेचरग्रह-वृक्षचरग्रह - पीक्षिचरग्रह-गिरिचरग्रह-शमशानचरग्रह-जलचरग्रह-कूपचरग्रह-देगारचलग्रह-शून्याचारचरग्रह-स्वप्नग्रह-दिवामनोग्रह-बालग्रह-मूकग्रह-

मूखग्रह-बधिरग्रह-स्त्रीग्रह-पुरुषग्रह-यक्षग्रह-राक्षसग्रह-प्रेतग्रह-किन्नरग्रह-साध्यचरग्रह-सिद्धचरग्रह कामिनीग्रह-मोहिनीग्रह-पद्मिनीग्रह-यक्षिणीग्रह-पक्षिणीग्रह-सँध्याग्रह-मार्गग्रह-कलिंगदेवोग्रह-भैरवग्रह-बेतालग्रह-गन्धर्वग्रह प्रमुखसकलदुष्टग्रह रातांन् आकर्षय आकर्षय आवेशय ड ड ठ ठ ह्यय वाचय दह्य भस्मी कुरू उच्चाटय उच्चाटय। ॐ सुदर्शन विद्महे महाज्वाला धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार) ॐ क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रुं क्ष्रें क्ष्रों क्ष्रः भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रें भ्रौं भ्रः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रों हः घ्रां घ्रीं घ्रुं घ्रें घ्रों घ्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रें श्रों श्रः। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार) एहि एहि सालवं संहारय शरभं क्रंदया विद्रावय विद्रावय भैरव भीषय भीषय प्रत्यगिरि मर्दय मर्दय चिदम्बरं बन्धय बन्धय विडम्बरं ग्रासय ग्रासय शांर्भवां निवतंय कालीं दह दह महिषासुरीं छेदय छेदय दुष्टशक्ति निर्मूलय निर्मूलय रूं रूं हूं हूं मुरु मुरु परमंत्रपरयंत्र-परतंत्र कटुपरं वादुपर जप पर होमपर सहस्रदीपकोटिपूजां भेदय भेदय मारय मारय खंडय खंडय परकतृकं विषं निर्विषं कुरु कुरु अग्निमुख प्रकाण्ड नानाविधि-कतृंमुख वनमुखंग्रहान् चूर्णय चूर्णय मारी विदारय कूष्माडं वैनायक मारीचगणान् भेदय भेदय मन्त्रांपरस्मांकं विमोचय विमोचय अक्षिशूलकुक्षिशूल-गुल्मशूल-पार्श्व-शूल-सर्वाबाधां निवारय निवारय पांडुरोगं संहारय संहारय विषमज्वरं त्रासय त्रासय एकाहिकं द्वाहिकं त्रयाहिकं चातुर्थिकं पंचाहिकं षष्टज्वर सप्तमज्वरं अष्टमज्वरं

नवमज्वरं प्रेतज्वरं पिशाचज्वरं दानवज्वरं महाकालज्वरं दुर्गाज्वरं ब्रह्माविष्णुज्वरं माहेश्वरज्वरं चुतुःषष्टीयोगिनी ज्वरं गंधर्वज्वरं बेतालज्वरं एतान् ज्वारान्नाशय नाशय दोषं मंथय मंथय दुरित हर हर अन्नतवासुकि तक्षक कालौय पद्म कुलिक ककोर्टक शख पालाद्यष्टनागकुलानां विषं हन हन खं खं घं घं पाशुपतं नाशय नाशय शिखण्डिं खंडय खंडय ज्वालामालिनीं निवर्तय संर्वेन्द्रियाणि स्तंभय स्तंभय खंडय खंडय प्रमुखदुष्टतंत्र स्फोटय स्फोटय भ्रामय भ्रामय महानारायणस्त्राय पंचाशद्धर्णरूपाय लल लल शरणागतरक्षणाय हुं हूं गं व गं व शं शं अपृतमूर्तये तभ्यं नमः। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार) भो भो सुदर्शन नारसिंह मां रक्षय रक्षय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ मम सर्वारिष्टशातिं कुरु कुरु सर्वतो रक्ष रक्ष ॐ ह्रीं हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्ष्रों ह्रीं श्रीं सहस्त्रार हूं फट् स्वाहा।

महा मृत्युञ्जय कवच (१)

जब किसी कारण से रोगादि देह को स्वतन्त्र न करते हों, जब मारकेश जन्मकुण्डली में हो, गृहक्लेश होने लगे तब इस कवच का पाठ करें।

भैरव उवाच

श्रृणुष्व परमेशानि कवचं मन्मुखोदितम्।
महामृत्युञ्जयाख्यस्य न देयं परमाद्भतम्॥ १॥

यं धृत्वां यं पठित्वा च श्रुत्वा च कवचोत्तमम्।
त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽस्मि महेश्वरि॥ २॥
तदेववर्णयिष्यामि तब प्रीत्यावरानने।
तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने॥ ३॥
अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयकवचस्य भैरव ऋषिः।
गायत्रीछन्दः मृत्युञ्जयरुद्रो महादेवो देवता।
ॐ बीजं जूं शक्तिः। सः कीलकम्।
हौमितितत्त्वं चतुर्वर्गसाधने विनियोगः।
चन्द्रमण्डल-मध्यस्थे रुद्रभाले विचिन्तयते।
तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्युमाप्नोपि जीवति॥ १॥
ॐ जूं सः हौं शिरं पातु देवो मृत्युञ्जयो मम।
ॐ श्रीं शिवो ललाटं च ॐ ह्रौं भ्रुवो सदाशिवः॥ २॥
नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्दो मेऽवताच्छ्रुती।
त्रिलोचनोऽवताद गण्डौ नासा मे त्रिपुरानतकः॥ ३॥
मुखं पीयूषघटमृदौष्ठौ में कृत्तिकाम्बरः।
हनुं मे हाटकेशानो मुखं बटुक—भैरवः॥ ४॥
कन्धरां कालमथनो गलं गण-प्रियोऽवतु।
स्कन्धौ स्कन्दपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु॥ ५॥
नखान् में गिरिजानाथः पायादङ्गुलिसंयुतान्।
स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्मम॥ ६॥
कुक्षिं कुबेर-वरदः पार्श्वौ मे मारशासनः।
सर्वः पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममावतु॥ ७॥
शिश्नं मे शङ्करः पातु गुह्यं गुह्यक-वल्लभः।

कटिं कालान्तकः पायादूरूमेऽन्धंकघातनः ॥ ८ ॥
जागरूकोऽवताञ्जनू जङ्घे मे कालभैरवः ।
गुल्फौ पायञ्जटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु ॥ ९ ॥
पादादिमूर्धपर्यन्तमघोरः पातु मां सदा ।
शिरसः पादपर्यनतं सद्योजातो ममावतु ॥ १० ॥
रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पातु मृतेश्वरः ।
पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः ॥ ११ ॥
पश्चिमे पार्वतीनाथो उत्तरे मां मनोन्मनं ।
ऐशान्यामीश्वरः पायादाग्नेय्यामग्निलोचनः ॥ १२ ॥
नैऋत्यां शम्भुख्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः ।
उर्ध्वे बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः ॥ १३ ॥
दशदिक्षु सदा पातु महामृत्युञ्जयश्च माम् ।
रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये ॥ १४ ॥
पायादों जूं मारुद्रो देव-देवो दशाक्षरः ।
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु ॥ १५ ॥
सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः ।
अर्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोमयाः ॥ १६ ॥
सर्वदा सर्वतः पातु ओं जूं सः हौं मृत्युञ्जयः ।
इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥ १७ ॥
सर्वमन्त्रमयं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।
पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवाधिदैवतम् ॥ १८ ॥
य इदं च पठेन्मन्त्री कवचं वाचयेत्ततः ।
तस्य हस्ते महादेवि त्र्यम्बकस्याष्टसिद्धयः ॥ १९ ॥

रणे धृत्वा चरद्युद्धं हत्वा शत्रून् जयं लभेत्।
जपं कृत्वा गृहे देवि सम्प्राप्स्यति सुखं पुनः॥ २०॥
महाभये महारोगे महामारीमये तथा।
दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत् कवचमादरात्॥ २१॥
सर्वं तत् प्रशमं याति मृत्युञ्जयप्रसादतः।
धनं पुत्रान् सुखं लक्ष्मीमारोग्यं सर्वसम्पदः॥ २२॥
प्राप्नोति साधकाः सद्यो देवि सत्यं न संशयः।
इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युञ्जयस्य तु॥ २३॥
गोप्यं सिद्धिप्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्।

श्री महा मृत्युञ्जय कवच (२)

श्रीदेव्युवाच। भगवन् सर्वधर्मज्ञ सृष्टिस्थितिलयात्मक। मृत्युंजयस्य देवस्य कवचं में प्रकाशय॥ श्री ईश्वर उवाच॥ श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्। मार्कण्डेयोऽपि यद्धृत्वा चिरंजीवी व्यजायत॥ तथैव सर्वदिक्पाला अमरावमवाप्नुयुः। कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दोऽनुष्टुबुदाहतन्॥ मृत्युंजयः समुद्दिष्टो देवता पार्वतीपतिः। देहारोग्यदलायुष्ट्वे विनियोगः प्रकीर्तितः। ओं त्र्यम्बकं मे शिरः पातु ललाटं मे यजामहे। सुगन्धिं पातु हृदयं जठरं पुष्टिवर्धनम्॥ नाभिमुर्वारुकमिव पातु मां पार्वतीपतिः। वन्धनादूरुयुग्मं मे पातु वामाङ्गशासनः॥ मत्योर्जानुयुगं पातु दक्षयज्ञविनाशनः। जंघायुग्मं च मुक्षीय पातु मां चन्द्रशेखरः॥ मामृताच्च पदद्वन्द्वं पातु सर्वेश्वरो हरः। प्रसौ मे श्रीशिवः पातु नीलकण्ठश्च

पार्श्वयोः॥ ऊर्ध्वमेव सदा पातु सोमसूर्याग्निलोचनः। अधः पातु सदा शम्भुः सर्वापद्विनिवारणः॥ वारुण्यामर्धनारीशो वायव्यां पातु शंकरः। कपर्दो पातु कौवेर्यामैशान्यां ईश्वरोऽवत्॥ ईशानः सलिले पायदघोरः पातु कानने। अन्तरिक्षे वामदेवः पायात्तत्पुरुषो भुवि॥ श्रीकण्ठः शयने पातु भोजने नीललोहितः। गमने त्र्यम्बकः पातु सर्वकार्येषु भुवतः। सर्वत्र सर्वदेहं मे सदा मृत्युंजयोऽवतु। इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वकामदम्॥ सर्वरक्षाकरं सर्वग्रहपीड़ा-निवारणम्। दुःस्वप्ननाशनं पुण्यमायुरारोग्यदायकम्॥ त्रिसंध्यं यः पठेदेतन्मृत्युतस्य न विद्यते। लिखितं भूर्जपत्रे तु य इदं मे व्यधारयेत्॥ तं दृष्टैव पलायन्ते भूतप्रेतपिशाचकाः। डाकिन्यश्चैव योगिन्यः सिद्धगन्धर्वराक्षसः॥ बालग्रहादिदोषा हि नश्यन्ति तस्य दर्शनात्। उपग्रहाश्चैव मारीभयं चौराभिचारिणः॥ इदं कवचमायुष्यं कथितं तव सुन्दरि। न दातव्यं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कदाचन्॥

मृत संजीवनी कवच

जब मृत देह को अधिक काल तक सुरक्षित रखना हो, जब भी कोई देह त्याग करने लगे अर्थात प्राणान्त के समय संजीवनी कवच का पाठ अति उत्तम है।

एवमाराध्य गौरीशं देवं मृत्युं जयेश्वरम्।
मृतसंजीवनं नाम्नां कवचं प्रजपेत्सदा॥ १॥
सारात्सारतरं पुण्यं गुह्याद् गुह्यतरं शुभम्।
महादेवस्य कवचं मृतसंजीवनामकम्॥ २॥

समाहितमना भूत्वा शृणुष्व कवचं शुभम्।
श्रुत्वैतद्दिव्यकवचं रहस्यं कुरु सर्वदा॥ ३॥
वराभयकरो यज्वा सर्वदेवनिषेवितः।
मृत्युंजयो महादेवः प्राच्यां मां पातु सर्वदा॥ ४॥
दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः षड्भुजः प्रभुः।
सदाशिवोऽग्निरूपी मामाग्नेय्यां पातु सर्वदा॥ ५॥
अष्टादशभुजोपेतो दण्डाभयकरो विभुः।
यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु॥ ६॥
खड्गाभयकरो धीरो रक्षोगणनिषेवितः।
रक्षोरूपी महेशो मां नैर्ऋत्यां सर्वदाऽवतु॥ ७॥
पाशाभयभुजः सर्वरत्नाकरनिषेवितः।
वरुणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु॥ ८॥
गदाभयकरः प्राणनायकः सर्वदागतिः।
वायव्यां मारुतात्मा मां शंकरः पातु सर्वदा॥ ९॥
शङ्खाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः।
सर्वात्मान्तरदिग्भागे पातु मां शंकरः प्रभुः॥ १०॥
शूलाभयकरः सर्वविद्यानामधिनायकः।
ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः॥ ११॥
ऊर्ध्वभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽधः सदाऽवतु।
शिरो मे शंकरः पातुः ललाटं चन्द्रशेखरः॥ १२॥
भ्रूमध्यं सर्वलोकेशस्त्रिनेत्रो लोचनेऽवतु।
भ्रूयुग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वरः॥ १३॥

नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः।
जिह्वां मे दक्षिणमूर्तिर्दन्तानमे गिरिशोऽवतु॥ १४॥
मृत्युंजयो मुखं पातु कण्ठं मे नागभूषणः।
पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम॥ १५॥
पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः।
नाभिं पातु विरूपाक्षः पार्श्वौं मे पार्वतीपतिः॥ १६॥
कटिद्वयं गिरिशो मे पृष्ठं मे प्रमथाधिपः।
गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः॥ १७॥
जानुनी मे जगद्धर्ता जंघे मे जगदम्बिका।
पादौ मे सततं पातु लोकवन्द्यः सदाशिवः॥ १८॥
गिरिशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान्मम।
मृत्युंजयो ममायुष्यं चित्तं मे गणनायकः॥ १९॥
सर्वाङ्गं मे सदा पातु कालकालः सदाशिवः।
एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम्॥ २०॥
मृतसंजीवनं नाम्नां महादेवेन कीर्तितम्।
सहस्रावर्तनं चास्य पुरश्चरणमीरितम्॥ २१॥
यः पठेच्छ्रणुयान्नित्यं श्रावयेत्सुसमाहितः।
स कालमृत्युं निर्जित्यं सदायुष्यं समश्नुते॥ २२॥
हस्तेन वा यदा स्पृष्टवा मृतं संजीवयत्यसौ।
आधयो व्याधयस्तस्य न भवन्ति कदाचन॥ २३॥
कालमृत्यमपि प्राप्तमसौ जयति सर्वदा।
अणिमादिगुणैश्वर्यं लभते मानवोत्तमः॥ २४॥

शुद्धारम्भे पठित्वेदमष्टाविंशतिवारकम्।
युद्धमध्ये स्थितः शत्रुः सद्यः सर्वैर्न दृश्यते॥ २५॥
न ब्रह्मादीनि चास्त्राणि क्षयं कुर्वन्ति यस्य वै।
विजयं लभते देवयुद्धमध्येऽपि सर्वदा॥ २६॥
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत्कवचं शुभम्।
अक्षय्यं लभते सौख्यमिह लोके परत्र च॥ २७॥
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः।
अजरामरणो भूत्वा सदा षोडषवार्षिकः॥ २८॥
विचरत्यखिलाँल्लोकान्प्राप्य भोगांश्च दुर्लभान्।
तस्मादिदं महागोप्यं कवचं समुदाहृतम्॥ २९॥
मृतसंजीवनं नाम्ना दैवतैरपिदुर्लभम्॥ ३०॥

शीतला स्तुति

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जग़त्पिता,
शीतले त्वं जतद्धात्री शीतलायै नमोनयः।

पीपल स्तुति

अश्वत्थ हुत भुग्वास गरेविन्दस्य सदाप्रिय,
अशेष हर मे पापं वृक्षराज नमोस्तुते।

तुलसी स्तुति

देवैः त्वं निर्मिता पूर्वम् अर्चितासि मुनीश्वरैः,
नमो नमस्ते तुलसी पाप हर हरप्रिये।

हनुमान स्तुति

मनोजवं मारुत् तुल्य वेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये,
उलंघ्य सिंधोसलिलं, सलीलं, यः शोकवहिन् जनकात्मजायाः
आदाय तेनैव ददाह लंकां, नमामि तं प्रांजलि आंजनेयम्।

प्रदक्षिणा मन्त्र

यानि कानि च पापानि जन्मन्तार कृतानि च,
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणे पदे पदे।

विसर्जन मन्त्र

यजमान हितार्थाय पुनरागमनाय च,
गच्छन्तु च सुरश्रेष्ठा! स्वस्थानं परमेश्वर।

तुलसी ग्रहण मन्त्र

तुलसी हेमरूपेणं रत्नरूपेण मंजरीम्,
भव मोक्ष प्रदां तुभ्यं अपर्यामि हरि प्रियं।

अन्नपूर्णा मन्त्र

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लभे,
ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थ भिक्षां देहि मे पार्वती।

काली स्तुति

काली काली महाकाली कालिके परमेश्वरी,
सर्वानन्द करे देवि नारायणी नमोस्तुते।

क्षमा प्रार्थना

अपराध सहस्त्राणि क्रियन्ते अर्हनिशं मया,
दासः अयमिति माँ मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।
आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्,
पूजां चैव न जानामि, क्षम्यर्ता परमेश्वर।
अन्यथा शरणं न अस्ति त्वमेव शरणं मम,
तस्मात् कारूण्य भावेन रक्ष माँ परमेश्वर।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन,
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे।
यदक्षर पदभ्रष्ट मात्राहीनं च यद् भवेत्,
तत्सर्व क्षम्यतां देव! प्रसीद परमेश्वर।